स-पुस्तक' के अंतर्गत सातवीं किताब

रेमन सेंडर की अमर कृति

"Seven Red Sundays" का हिन्दी रूपान्तर

सात इनक़लाबी इतवार

भाग पहला

अनुवादक : नारायणस्वरूप माथुर

—संपादक—

श्रीपतराय

बनारस

सरस्वती प्रेस

प्रथम संस्करण
२०००

जनवरी, १९४१

मूल्य—एक रुपया

सरस्वती-प्रेस, बनारस कैण्ट में श्रीपतराय द्वारा मुद्रित

मूल-लेखक की भूमिका

मेरी खुद की आवाज़ इस लेख में बहुत कम सुन पड़ती है। क़रीब-क़रीब हर जगह ही आवाज़ मेरे पात्रों की है और इसलिए मैं यहां पर कुछ, ज्यादा तो नहीं पर ज़रूरी कहता हूँ। राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टिकोणों से यह किताब किसी को भी सन्तुष्ट न कर सकेगी—यह मैं जानता हूँ। किन्तु इसके लिखने का मक़सद न तो किसी तरह का राजनीतिक बावेला मचाना है और न सामाजिक संघर्ष का वर्णन करना; किसी की निन्दा-स्तुति करना तो और भी कम। मैं किसी भी प्रकार के—सामाजिक, नैतिक अथवा राजनीतिक—व्यवहारोपयोगी तथ्य की खोज में नहीं हूँ। और न ही उस निर्दोष दीख पड़नेवाले कलात्मक तथ्य की खोज में जो हमेशा झूठा और बनावटी होता है और जिसकी खोज में बहुतेरे नये लिखनेवाले अपने आपको खो बैठते हैं।

इन पृष्ठों मे जिस यथार्थता, जिस एकमात्र सत्य को दिखाने का प्रयत्न मैने किया है, वह है जीवित मानवता का सत्य जिसका दिग्दर्शन स्पेनी इनक़लाब की एक संक्षोभपूर्ण घटना में होता है। मैं अपने पात्रों के शब्दों तथा भावों में व्यापक प्रकाश तथा वायुमंडल में जिसमें कि वह हिल-मिल जाते हैं उसी सत्य की खोज करता हूँ, चाहे वह धुँधला

हो या साफ़, तर्कपूर्ण हो अथवा असंबद्ध । उपन्यास का संगत क्रम भी मेरा लक्ष्य नहीं है । मेरा यथार्थ मानव है—मुमकिन है वह उत्कृष्ट हो, मुमकिन है वह मूर्खतापूर्ण हो । मेरी वास्तविकता में मूर्खता इस कारण है कि पुरुषों के प्रति एक पुरुष के मानसिक पक्षपात से मेरा वर्णन रंजित नहीं है, जैसा कि आप औपन्यासिकों में पाते हैं जो वास्तव में उनके अपने नए दिमागी घमण्ड और अहंकार से ज्यादा कुछ नहीं हैं । मेरी पुस्तक के पात्र सामाजिक रूढ़ियों को नहीं मानते, ललित वाक्य नहीं बोल सकते और वह कभी भी सम्मानित करदाता नहीं रहे हैं ।

आप देखेंगे कि इस पुस्तक का निशाना आपकी बुद्धि नहीं बल्कि आपकी भावनाशक्ति है, क्योंकि गहनतम मानव सत्यों को अनुभव करना होता है, समझना और विश्लेषण करना नहीं । ये वह सत्य हैं जिनको मनुष्य ने कभी मुख से नहीं कहा है और न उन्हें कभी शब्दों में व्यक्त करने का प्रयत्न ही किया है क्योंकि इनका सन्देश भावों की दीप्त अस्पष्टता में मिलता है । इस पुस्तक को पढ़ लेने के पश्चात् वह पाठक जिसने कि श्रद्धापूर्वक मेरा अनुशीलन किया है या तो मेरे लिखने के विषयों—राजनीतिक तथा सामाजिक भावनाचक्रों—के मर्म को समझ चुका होगा या न समझ चुका होगा । लेकिन दोनों हालतों में एक नई भावानुभूति के बीच से गुज़रा होगा । बुद्धि को छोड़कर भाव और भावना सम्बोधित करने से कम से कम मुझे यह फायदा है कि किसी को मुझे चिंतक कहने का हक़ नहीं होगा ।

मेरी किताब कहीं-कहीं गड़बड़ और ढीली मालूम पड़ती है, मगर उनमें से जो पढ़नेवाले देखने और पकड़ने की कूवत रखते हैं, तो वह इस बात को मानेंगे कि मेरा तरीक़ा तार्किक है, क्योंकि अराजकता का भी अपना अकथ तर्क होता है । फिर भी मैं अपनी स्थिति के सम्बन्ध में यहां एक शब्द कह देना संगत समझता हूँ । इससे सम्भवतः

उन लोगों को जो इस पुस्तक में दी हुई साक्षी से स्वयं कोई सारभूत सिद्धान्त नहीं निकाल सकते कुछ सहायता मिल सकेगी। मेरी राय में अनार्को-सिंडिकैलिज्म अराजकतावादी—संगठन सम्बन्धी घटनाओं का कारण व्यक्तियों तथा जनसमुदायों में जीवन-शक्ति का अतिरेक हुआ करता है, और होती है वह उदारता, प्रचुरता जो अतिशय प्राणशक्ति सम्पन्न मनुष्यों तथा समाजों का स्वाभाविक लक्षण हुआ करती हैं। मेरे पढ़नेवाले ज़रा उस घोर वैषम्य पर ग़ौर करें कि स्पेन की इनक़िलाबी-जनता ने कितनी कुरबानी की है और बराबर किये जा रही है और उसको उसके बदले में क्या मिला है। वही विषमता इसमें भी है कि उनके पास ताकत क्या थी और उसका उन्होंने कैसा बेहतरीन इस्तेमाल किया। उसके बहुतेरे नतीजे हैं लेकिन इसमें मेरी खास दिलचस्पी उस उदारता के उद्‌गम में है जो कभी-कभी बहुत ऊँची आ जाती है।

यदि उसके वाह्य राजनीतिक महत्व को छोड़कर कोई मुझसे पूछे कि अनार्को-सिंडिकैलिज्म वास्तव में है क्या तो मैं उसे यह किताब पढ़ने कहूँगा। यदि इतने पर भी कुछ ऐसे मन्दबुद्धि लोग रह जाएँ जो मुझसे यह प्रश्न करें अनार्को-सिंडिकैलिज्म अच्छा है या बुरा? तो मैं कन्धे उचकाकर उन्हें यह किताब दे देता हूँ। यदि कोई मुझसे पूछे — क्या आपके विचार में स्पेनी राजनीति में अनार्को-सिंडिकैलिज्म एक अन्तिम निर्णय करनेवाली शक्ति है? तो मेरा उत्तर होगा—हाँ, और यह भी कि न तो इस समय और न कभी आगे चलकर ही इसकी उपेक्षा की जा सकती है। अतः यदि कोई मुझसे यह प्रार्थना करे कि मैं अनार्को-सिंडिकैलिज्म पर एक राजनैतिक वस्तु के रूप में अपने मन का निरूपण करूँ तो मुझे पहले कही हुई बातें दुहरानी पड़ेंगी। मेरा सिद्धान्त यह है—यह अराजनीतिक सिद्धान्त है। जिन लोगों के हृदयों में मानवता का अतिरेक होता है वह स्वतन्त्रता, शिवं, न्याय इत्यादि के स्वप्न देखा करते हैं और इन स्वप्नों को एक भाव विशिष्ट

तथा वैयक्तिक रँग दे देते हैं। इस भार को सिर पर उठाकर एक मनुष्य यह आज्ञा तो कर सकता है कि उसके सम्बन्धी तथा मित्र उसका सम्मान करेंगे और उसके साथ वफ़ादारी करेंगे किन्तु यदि उसको व्यापक सामाजिक विधान को प्रभावित करने की धुन हो तो उसे वीरोचित किन्तु निष्फल विप्लव द्वारा अपना नाश करना होता है। मानव-समाज को सब कुछ देकर भी कोई आदमी उससे बदले में सब कुछ पा जाने की आशा रखकर उसके पास नहीं आ सकता। समाजों का आधार व्यक्तियों के सद्गुणों पर नहीं हुआ करता बल्कि एक प्रणाली पर जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति की स्वतन्त्रता को परिमित करके दोषों का निग्रह किया करता है। स्वभावत: यह पद्धति सामन्तवाद, पूँजीवाद तथा साम्यवाद के अन्तर्गत विभिन्न रूप ग्रहण किया करती है। अनार्को-सिंडिकेलिज्मवाले भी अपनी प्रणाली बनायें और जब तक कि वह ऐसा करने में कामयाब न हों तब तक वह समाजों एक ऐसी अजीब हालत का स्वप्न देखा करें जिसमें कि सब व्यक्ति असिसी के संत फ्रांसिस के समान स्वार्थ रहित, स्पारटकस के समान वीर और न्यूटन तथा हीगल के समान योग्य होंगे। किन्तु इस स्वप्न की पार्श्वभूमि में एक अत्यन्त उदार सत्य है — जो, मैं ज़ोर के साथ कहता हूँ, कभी-कभी उत्कर्ष की पराकाष्ठा तक पहुँच जाता है। क्या यह काफ़ी नहीं है?

सात इनक़लाबी इतवार

[भाग १]

तथा वैयक्तिक रँग दे देते हैं। इस भार को सिर पर उठाकर एक मनुष्य यह आज्ञा तो कर सकता है कि उसके सम्बन्धी तथा मित्र उसका सम्मान करेंगे और उसके साथ वफ़ादारी करेंगे किन्तु यदि उसको व्यापक सामाजिक विधान को प्रभावित करने की धुन हो तो उसे वीरोचित किन्तु निष्फल विप्लव द्वारा अपना नाश करना होता है। मानव-समाज को सब कुछ देकर भी कोई आदमी उससे बदले में सब कुछ पा जाने की आशा रखकर उसके पास नहीं आ सकता। समाजों का आधार व्यक्तियों के सद्गुणों पर नहीं हुआ करता बल्कि एक प्रणाली पर जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति की स्वतन्त्रता को परिमित करके दोषों का निग्रह किया करता है। स्वभावतः यह पद्धति सामन्तवाद, पूँजीवाद तथा साम्यवाद के अन्तर्गत विभिन्न रूप ग्रहण किया करती है। अनार्की-सिंडिकेलिज्मवाले भी अपनी प्रणाली बनायें और जब तक कि वह ऐसा करने में कामयाब न हों तब तक वह समाजी एक ऐसी अजीब हालत का स्वप्न देखा करें जिसमें कि सब व्यक्ति असिसी के संत फ्रांसिस के समान स्वार्थ रहित, स्पारटकस के समान वीर और न्यूटन तथा हीगल के समान योग्य होंगे। किन्तु इस स्वप्न की पार्श्वभूमि में एक अत्यन्त उदार सत्य है -- जो, मैं ज़ोर के साथ कहता हूँ, कभी-कभी उत्कर्ष की पराकाष्ठा तक पहुँच जाता है। क्या यह काफ़ी नहीं है?

सात इनक़लाबी इतवार

[भाग १]

कामरेड विलाकम्पा का स्पष्टीकरण

मेरे कमरे की दीवार पर एक कैलेन्डर है। तारीखों के आने से पहले ही उनकी पीठ पर छपी हुई कहावतों और शिक्षाप्रद कहानियों को पढ़ने की ग़रज़ से उनके पन्ने नोचने में मुझे बड़ा मज़ा आता है। 'कुत्ता कुत्ते को नहीं खाता' 'आलस ही सारी बुराइयों की जड़ है।' महान् सत्य। फिर मैं पढ़ता हूँ कि नैपोलियन नाम का एक कुत्ता किसी अंग्रेज़ ने बारह सौ पौंड में खरीदा था और यह कि चन्द्रमा प्रशांत महासागर की तली तोड़कर निकाला गया पृथ्वी का एक टुकड़ा मात्र है और वीरियाथस का एक संक्षिप्त इतिहास तथा सरटोरियस की हत्या का हाल भी। कैलेन्डर के क्रम में कोई गड़बड़ नहीं है। सोमवार के बाद ही मंगल आता है।

दिन आने के पहिले ही पत्ते फाड़ लेना भविष्य के लिए मेरे

अधैर्य्य का चिह्न नहीं है। ऐसा ललित विनोद मेरे लिए नहीं है। मेरे स्रष्टा—इस पुस्तक के लेखक—ने मुझे एक पंसारी के चाकर से अधिक कुछ बनाया ही नहीं। पन्ने फाड़कर पढ़ने का एक कारण तो यह है कि कभी-कभी मैं कमरे में पड़ा-पड़ा ऊब उठता हूँ; लेकिन एक वजह ये भी है कि मैं नवयुवक सामर का मित्र हूँ जो समाचार-पत्रों में लेख लिखा करता है; इसीलिए मेरे लिए यह जानना आवश्यक हो जाता है कि सरटोरियस और वीरियाथस कौन थे और जिसमें मैं उनके बारे में बातचीत कर सकूँ। केवल इसी कारण कि वह मुझसे अधिक जानकारी रखता है उसकी हाँ में हाँ मिलाने को हमेशा विवश रहना मुझे सख्त नापसन्द है।

दीवार पर, कैलेंडर से सटा हुआ, सीलन ने एक दैत्य-सा धब्बा बना दिया है। उसको देखकर मुझे गोया के स्मारक पर बनी हुई डाकिनियों का स्मरण हो आता है। ६, ११ और ४६ नम्बर की ट्रामगाड़ियाँ ठीक बाहर ही रुकती हैं। मैं अकसर बाहर के चबूतरे पर ही गश्त लगाया करता हूँ अव्वलन तो इसलिए कि मुझे कोई बात करने को मिल जाता है—क्योंकि अन्दर लोग बातचीत नहीं करते—और इसलिए भी कि मेरे पास अक्सर कोई न कोई सामान होता है—मसलन एक गैलन तेल और दो-चार पौंड चीनी—और कंडक्टर मुझको अपना सामान मोटर के बराबर रख लेने दिया करता है। एक दिन मैं ४६ नं० की गाड़ी पर जा रहा था जब मैंने सामर को एक बहुत खूबसूरत नवयौवना रमणी और उसकी संगिनी के साथ जिसे हम लोग वार्ड्स कहते हैं—देखा।

इनकी मौजूदगी से वह कार भी फ़र्स्ट क्लास कोच बन गई थी। लड़की एक अभिनेत्री से मिलती-जुलती थी जिसको मैंने एक बार सिनेमा में देखा था वह संगीत के ताल पर ही भुजाएँ डुलाती और बात करती जान पड़ती थी। सामर रूक्ष तथा गंभीर था। मेरी समझ

में नहीं आ रहा था आया मैं उसे ज़ाहिरा पहचानूँ या नहीं। संभव है कि इन बूर्ज़्वा साथियों के साथ देखे जाने से समर को कुछ क्लेश हो। लेकिन वह मेरी तरफ़ देखकर मुस्कराया, मुझे पारसल लेकर निकल जाने के लिए उसने मार्ग भी कर दिया और उसने मेरी टाँग में घुटना मारकर अपने साथी को नमस्कार करने का संकेत भी किया। यह सब सामर के कितना अनुकूल था। मुझको उसकी प्रेयसी के सम्मुख उसी प्रकार झुकना पड़ा जिस तरह लोग गिरजाघर में झुकते हैं। सामर का इससे क्या मतलब था? हुआ यह सब कुछ अत्यंत सरलतापूर्वक लेकिन ऐसा मालूम होता था कि इसके पीछे कुछ है। समर का रहन-सहन, फिरना-डोलना और बात-चीत सब कुछ एक दार्शनिक जैसा है; किन्तु इसका कुछ अर्थ नहीं। क्योंकि वह सहसा इस प्रकार मुस्करा देता है मानो वह कह रहा हो 'देखो, हम कैसे घनिष्ट मित्र हैं!' इन बूर्ज़्वा लोगों को मैं नहीं समझ पाता और खासकर उनको जो हमारी तरफ़ के हैं! खैर, मैं एक पंसारी का कुली हूँ और वह पर्चों में लिखता है। तुम चाहो तो उसे सिपाही साहब पुकार सकते हो लेकिन वह इसे बुरा नहीं मानता उसी तरह जैसे चपरासी पुकारे जाने पर मैं। अरे, जाने भी दो ये सब भाड़ में। इन बूर्ज़्वा लोगों के बागडोर सँभालते हुए सभी कुछ झूठा और लग़ो है, किंतु यदि हम गंभीरता के साथ सब काम करें जैसा कि मैंने समर और उसकी नवयुवती प्रेमिका के संबंध में किया तो मेरा उसको प्रणाम करना बिलकुल सोलहो आने उचित ही था।

मेरी उम्र पचीस साल की है और सामर की लगभग २८ साल। वह चौड़े लौट कालर का कोट पहनता है और प्रेमिका भी रखता है। मेरे पास उसका-सा कोट तो नहीं है फिर भी एक युवती है जो मुझसे प्रेम करती है—जर्मिनल गारशिया की पुत्री, जो हमारी संस्था के सब से पुराने सक्रिय सदस्यों में से एक है। उसकी उम्र लगभग १५-१६ वर्ष की होगी और लाल जर्सी पहनती है। वह मेरे मन को नहीं भाती।

परंतु वह ज़माना अब आ रहा है जब मेरी भी एक प्रेमिका होगी। शायद वह सामर की प्रेमिका के बराबर सुन्दरी और खुशबू से लैस न हो; लेकिन जर्मिनल की पुत्री की अपेक्षा कुछ-न-कुछ अधिक सुन्दर तो होगी ही। मैं पहले ही तुमको बतला चुका हूँ कि वह मेरी रुचि के अनुकूल नहीं है। इतवार को जब मैं ब्रिलियंटाइन लगाता हूँ और अपनी लाल टाई बाँधता हूँ तो यह सब उसके रिझाने के लिए नहीं होता—हालाँकि हम दोनो 'केन्द्र' को साथ ही जाते हैं—लेकिन मैं इस खयाल से खूब चिकना-चुपड़ा और चुस्त-दुरुस्त रहना आवश्यक समझता हूँ कि मेरा मालिक मुझे देख कर मेरी मजूरी बढ़ा सके। बूर्ज्वा लोगों की निगाहों में बढ़िया कपड़े और साफ़-सुथरे बाल ही सब कुछ हैं।

जर्मिनल की पुत्री का नाम स्ट्रैला है किन्तु वह उसको 'स्टार' कहकर पुकारता है, मतलब एक ही है; क्योंकि वह इङ्गलैण्ड हो आया है और 'स्टार' मार्का रिवाल्वर पसन्द करता है। उसका रंग साँवला है; उसकी बड़ी-बड़ी आँखे घोड़ों की आँखों की तरह विरत एवं निष्कम्प हैं लेकिन हैं नीली। उसका चेहरा गोल और धूमिल है। जब वह हँसती है तो उसके कपोलों में दो गड्ढे पड़ जाते हैं। और वह आगे को बराबर एकटक अपलक देखा करती है और कहती कुछ भी नहीं। क़द में वह मुझसे नाटी है और जुर्राब पहने हुए मेरी ऊँचाई पाँच फ़ीट आठ इञ्च है। यद्यपि वह कहती है कि वह अपनी अठारहवीं वर्ष गाँठ पार कर चुकी है वास्तव में उसकी उम्र सत्रह साल से अधिक नहीं है। वह ऐसा केवल इसलिए कहती है कि उसका पिता उसके लिए मोज़े लादे। लेकिन इससे उसको कोई लाभ नहीं। वह अब भी नंगी टाँगो और बिना एड़ी का जूता पहन कर आती-जाती है। वह अपने पिता के मोटे मोज़े पहनती है और उनको टखनों पर से लौटा लेती है। फिर भी वह इतनी बदसूरत नहीं है। परन्तु वह इतनी निर्बोध है कि मेरी प्रेमिका नहीं हो सकती। मैं अपनी सिंडीकेट की तरफ से स्थानीय फेड-

रेशन का डेलीगेट चुना जाता—जाता रह गया और मैं कमेटी का मेम्बर हूँ गोकि मेरी जगह नीची है। वह भी इस उधेड़-बुन में है कि जिस लैम्प फैक्टरी में वह काम करती है उसकी ओर से सिंडीकेट की डेलिगेट चुन ली जाय, लेकिन उसका नाम कोई भी क्यों पेश करने लगा जब कि वह इतनी अनभिज्ञ है कि मीटिंग में सिवाय पर्चे बाँटने के कुछ और कर ही नहीं सकती। वह जर्मिनल की पुत्री है, बूर्ज्वा वर्ग में इस बात का जितना महत्व होता वैसा यहाँ कुछ भी नहीं है। हमारे यहाँ तो हर किसी को अपने काम की औलाद होना पड़ता है जैसा कि मैं—

खैर जाने दो। लेकिन इससे होता ही क्या है ? एक दिन जब मेरे पिता गिरजा घर से लौटे तो माता से तकरार हो गई और मार-मार कर उसकी जान ले ली। क्यों ? ऊँह ! ये उन दोनों की अपनी बात थी। मैं बारह वर्ष का था, मैंने घर छोड़ दिया। मैं बहुधा भूखा भी रहता था और सभी मौसमों में घर से बाहर आकाश के नीचे सोना पड़ता था ; किन्तु जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूँ यह सब बातें कोई महत्त्व नहीं रखतीं। आज तो मैं कॉमरेड लियनूश्यो विलाकम्पा हूँ। यदि आप इसका मतलब नहीं समझते तो सिंडीकेट जाकर पूछ लीजिये। मैं हड़तालवाद को इतनी अच्छी तरह जानता हूँ कि संगठन विषयक मामलों में मैं कभी चूक नहीं कर सकता। बाक़ी सब बातें नगण्य जैसी हैं। मैं अपने सगठन से सम्बन्ध रखनेवाले उत्कृष्ट पत्रों के अलावा और कोई समाचार-पत्र नहीं पढ़ता। बूर्ज्वा पत्र अपनी तसवीरों को छोड़कर महज़ कूड़ा-करकट हैं। उन्हें रिपोर्ट करना आता ही नहीं। ज़रा देखिये तो सही कि वह हमारी सभाओं और तहरीक के सम्बन्ध में क्या कहते हैं। सब कुछ लोगों को अन्धेरे में रखने के विचार से। वह न हमारे कार्य के सम्बन्ध में ही कुछ जानते हैं और न अपने ही। वह शब्दों की गुत्थियाँ बनाकर

अपने को बाँध देते हैं। कालम के कालम एकदम फ़िज़ूल ही। कभी कभी वह कोई नवीन शब्द पकड़ लेते हैं, और फिर सब के सब उसको लेकर उन्मत्त से होकर नाचने लगते हैं। कल मैंने एक ऐसा शब्द देखा, 'जूरीडिसिटी' जिसका अर्थ मैं नहीं जानता था। सामर ने मुझे बताया कि डिक्टेटरी के अधःपतन के समय उसका खूब चलन हो गया था। शब्द और फ़ैशन—एक दम स्त्रियों की तरह! जब मैं अपने मालिक का समाचार पत्र पढ़ता हूँ तो हँसते-हँसते मेरे पेट में बल पड़ जाते हैं।

जब रिपब्लिक (प्रजातन्त्र) का दौर आया तो मैं समझता था कि सब कुछ पूर्ववत् होता रहेगा। लेकिन फिर भी मुझे थोड़ा ताज्जुब हुआ। जब राजा भाग निकला तो मैंने देखा कि गलियों में आदमियों और मकानों में कोई नई बात आ गई थी। हर समय शादियों और मेलों-तमाशों का बाज़ार गर्म रहता था। और फिर यह कहा गया कि एक पार्लियामेन्ट स्थापित होनेवाली है। मैं जानना चाहता था कि यह पार्लियामेन्ट क्या बला है, क्योंकि मैंने उसकी बाबत कुछ योंही शुदबुद-सा सुन रक्खा था। जिस समय कि पहले पार्लियामेन्ट थी मैं एक नन्हा बच्चा था। ऐसा प्रतीत होता है कि बूर्ज़्वा लोग अन्ततः रिपब्लिक लाने पर मजबूर इसीलिये हुए कि बादशाह और फ़ौज ने पार्लियामेन्ट को तोड़ डाला। पार्लियामेन्ट ज़रूर कोई अहम चीज़ होगी। मुझको अपनी आँखों से उसको देखना था; क्योंकि सामाचार पत्रों पर यक़ीन नहीं किया जा सकता था। पार्लियामेन्ट के उद्घाटन के दिन मैंने नई जाकट और टाई लगाई। मैंने ब्रिलियंटाइन से बाल चिकनाये और फिर था मैं बाहर।। क्या तुमने मुझको दैनिक पत्रों के प्रथम पृष्ठ के चित्रों में नहीं देखा? मेरी बगल में था प्रेसीडेन्ट, लगभग पचास साल का, जो एकदम मूर्ख तो नहीं प्रतीत होता था।

मैं सीधा अन्दर घुसा चला गया। और बड़े हाल में जा पहुँचा।

सब कुछ लाल और पीला। मैं वहाँ के व्यवस्थापक महोदय की खोज में इधर-उधर दृष्टिपात करने लगा। अंत में पूछता-पूछता मैं उस व्यक्ति के पास जा पहुँचा जो चेम्बर का प्रेसिडेण्ट बतलाया जाता था। मैंने उससे पूछा—यह सब किस लिए है? उसकी मुद्रा कठोर हो गई और उसने मेरी ओर इस तरह दृष्टिपात किया जिस प्रकार एक स्त्री तुम्हारी ओर उस वक्त देखती है जब वह तुमसे किसी प्रकार का भी सम्पर्क रखना नहीं चाहती और अंत में कहा कि यह पार्लियामेन्ट का उद्घाटन है। मेरा मन उससे कितने ही और प्रश्न करने को कर रहा था किन्तु वह अपनी काली और सफेद पोशाक में दर्जी की दुकान के पुतलों की तरह देख पड़ता था और मुझे यह भय था कि कहीं मेरे अगले प्रश्न से वह अपनी क़मीज का सामना मैला करने पर मजबूर न हो जाय। ऊपरवाली गैलरियों में स्त्रियाँ और पादरी थे। हमारे नीचे—बेंचों की कतारें और बिजली से दहकते हुए रंगीन बल्बों के गुच्छे। हर जगह जहाँ देखो फोटोग्राफर! जब मैंने देखा कि अब फोटो लिए जायँगे मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ता हुआ पहली पंक्ति में जा पहुँचा। उस दिन के हर चित्र में मैं हूँ। मैंने प्रेसिडेन्ट से पुनः बातचीत की और दो एक अन्य व्यक्तियों से भी जो मंत्री मालूम होते थे। जनाबे मन—ये सब शिष्ट लोग थे—लेकिन इन सब में से एक को भी यह ठीक पता नहीं था कि वह क्या कर रहा है। वह मेरी ओर घूर रहे थे और मेरे प्रश्नों का उत्तर देने को ज़रा भी तैयार न थे। फिर उनमें से एक ने खड़े होकर बिलकुल घरेलू रीति से कुछ कहा और बाकी सब ने वाहवाही की। तत्पश्चात् एक दूसरे ने स्पीच दी—यद्यपि वह शब्द-शब्द पर भटकता था और वही बात फिर दोहरा देता था—फिर भी लोगों ने, खूब तालियाँ बजाईं। इस दृश्य ने मेरी मानसिक आँखों के सामने 'मिकी माउस' फिल्म को ला खड़ा किया जहाँ बहुत से जानवर एक थिएटर में पहुँच जाते हैं, उद्विग्न हो पड़ते हैं और ताली बजाने लगते हैं।

इनमें से एक जवान बकरे-सा था—दूसरा चूहे-सा। इनमें से अधिकांश खासे आदमी मालूम होते थे लेकिन इनमें एक पिल-मुँहा मछली भी था, इतना छोटा कि बड़ी मुश्किल से नज़र आता था। जब दूसरे ताली बजाते थे वह सीटी बजाता था और जब सब लोग विरोध प्रकट करते थे तो वह तालियाँ पीटता था। ये लोग उसकी ओर इस प्रकार देखते थे मानो उसको कच्चा ही चबा जाएँगे। इस चिड़चिड़े चिरोंटे की ओर देखकर मैंने दिल खोलकर क़हक़हा लगाया। इसके बाद मैं प्रजातंत्र के कथित सभापति के समीप जा पहुँचा और उससे फिर बातचीत की। उन सब लोगों ने मुझ पर आँखें गड़ाईं और उनमें से एक ने उचक कर कहा, हाउस में अजनबी हैं। यह शब्द इतने गंदे लहजे में कहे गये थे कि मैंने उसके चेहरे पर दृष्टि जमाकर तान पूरकर कहा—क्या आपका इशारा मेरी ओर है?' मैं प्रजातंत्र में 'अपरिचित' नहीं कहा जा सकता था। मैं उन चार में से एक था, जिन्होंने सन् १६२७ में शाही गाड़ी को क़रीब-क़रीब उलट ही दिया था। मैं एक बरस को जेल में भी था और शाही पुलिस ने मारते-मारते मेरा कचूमर निकाल डाला था। और जब हमने राज-सत्ता के विरोध में मजूरों की आम हड़ताल का संगठन किया था तो एक सोशलिस्ट ग़द्दार ने जब बाहर आने से इंकार कर दिया तो मेरे पिस्तौल ने उसके ऐसा ज़ख्म भी लगाया था जिसने हमेशा के लिए उसे काम से छुट्टी दे दी थी। मैं वहाँ जाने का अधिकारी था और यदि किसी को यह बुरा लगता है तो मेरी बला से! एक नवयुवक से जो काग़ज़ों का भारी पुलंदा लिये हुए था और आठ नौ डिप्टियों से जो मुझे अमित्र भाव से देख रहे थे, मैंने ये सब कुछ कह डाला। यह नवयुवक कुछ देर बाद मंच पर चढ़कर एक लम्बा लेख पढ़ने लग गया। उसके संबंध में उसके चारों ओर लोग क्या चर्चा कर रहे थे, उसको इसकी रंचक मात्र भी परवा नहीं थी और वह

प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में केवल 'हाँ' कहता था। और बस यही थी इनकी पार्लियामेन्ट ! मुझे इसमें कुछ तक नहीं मालूम हुई। जब अधि॰वेशन समाप्त हो गया तो मैंने फिर सभापति महोदय को लाँबी में जा पकड़ा और पूछा आया वह उसे काम की चीज़ समझते भी हैं। शिर को एक तरफ़ फेरकर, भुजाओं को पसार कर आपने इरशाद फ़रमाया— 'अच्छा—अच्छा !' ज़ाहिर ही वह ख़ुद इसके बारे में बहुत दृढ़ और मुत़मईन नहीं थे।

यह सब व्यापार इतनी अधिक देर तक नहीं होता रहा था कि मैं बुरी तरह ऊब उठता, और मेरे विचारों में कुछ उलट-पुलट भी नहीं हुआ था क्योंकि जब मैं बाहर आया तो प्रजातंत्र ही का हिमायती था। रोशनी, सजावट तथा असाधारण वातावरण से किंचित् मात्र चकरा जाने के कारण मैं उन लोगों के वक्तव्यों को पूरी तरह समझ नहीं सका था। अतः श्वेतकेशवाले सज्जन से एक प्रजातंत्रवादी की मर्यादा के अनुकूल ही मैंने कहा कि इन पादरियों को तो हमें स्वाहा करना ही पड़ेगा। मैंने इनको जब ऊपरवाली गैलरी में देखा तो मेरे ख़ून ने ऐसा जोश मारा–मेरे मन में आया कि इनमें से कम से कम एक को तो ज़िन्दा ही चबा जाऊँ ! सभापति बिना उत्तर दिये ही वहाँ से खिसक चले। किन्तु उनके प्रवेशद्वार की सीढ़ियों तक पहुँचते न पहुँचते मैंने झपट कर उनकी भुजा पकड़ ली। अब और चित्र लिए जा रहे थे। दैनिकों के पहले सफ़े पर आपने अवश्य मेरा चित्र देखा होगा। इसके बाद जब वह अपनी कार में बैठने लगे तो मजबूरन मुझे उनका साथ छोड़ना पड़ा।

पार्लियामेंट गृह के सामने सड़क के दोनों ओर पैदल सिपाही तईनात थे जैसा कि मेले-तमाशों और महोत्सवों के दिन हुआ करता है। इन्हीं में जुआकिन भी नयी वर्दी पहने, चुप-चाप, घोंघे की तरह मुँह बन्द किये हुए ड्यूटी पर खड़ा हुआ था। वह १९३० में युद्ध-धारा

के अनुसार भर्ती किया गया था और छटी सावोया में लाम पर हो भी आया था। मैंने सोचा—आओ चुपके-से इसको एक सिगरिट बना दूँ। उसने मुझसे जानना चाहा कि आया मैंने अपने विचार बदल दिये हैं और सभापति से मित्रता कर ली है? मैंने उत्तर दिया—'नहीं'—मैं तो सिर्फ़ अपनी आँखों से सब कुछ वहाँ देखने गया था।

'कैसी है?' उसने मुझसे यों-से ही पूछा, मैंने कहा, 'यह न समझना कि यह सब एकदम निकम्मा है! वे थियेटर के लोगों की ही तरह होशियार हैं।'

मैंने सिगरिट बना कर सुलगाया और उसको पीने को दे दिया। और खुद मैं चौकसी करता रहा। काफी देर तक हम बोले ही नहीं। फिर मैंने कहा—'सबसे अच्छा तो यही है कि इन सबको जलाकर राख कर दिया जाय।' जुआकिन ने अपने शरीर का बोझ एक पैर से दूसरे पर बदलते हुए अपनी सहमति प्रकट की। कई वायुयान 'घों-घों' करते हुए आकाश के एक सिरे से दूसरे सिरे की ओर जा रहे थे। भीड़ बहुत ज़्यादा हो चली। एक पादरी साहब हठात् नववयस्का वेश्याओं के घेरे में जा फँसे और उनकी फूली हुई साँस, घबराहट और जद्दो-जेहद ने मेरा और जुआकिन का कुछ देर मनोरञ्जन किया। चूंकि जुआकिन को आज अपनी प्रेमिका—निम्न कारावंशल की रहनेवाली एक सुन्दर लड़की—के साथ घूमने नहीं जा सका था, वह कुछ क्षुब्ध था। फिर भी जर्मिनल की पुत्री स्टार ग्रेशिया को यदि अच्छे वस्त्र पहना दिये जाएँ तो उसको जुआकिन की प्रेमिका से ईर्ष्या करने की आवश्यकता न होगी। लेकिन इसका यह मतलब न समझो कि स्टार अत्यन्त सुन्दर है, या वह मेरी प्रेमिका बनने के योग्य है। बेचारी स्टार को अभी बहुत कुछ सीखना बाक़ी है; गोकि मैं ऐसा आदमी नहीं हूँ कि अपने सामने किसी को कुछ समझता ही न होऊँ। स्टार से सम्बन्ध रखनेवाली मेरे दिमाग़ में एक और अप्रिय बात भी है। तारीखों के पैकट के पीछे, मेरे

कैलंडर में, एक लड़की की रंगीन तस्वीर है जो सफ़ेद बालों का विग पहने हुए है और उसकी सूरत स्टार से बहुत कुछ मिलती है। उसका स्कर्ट (दामन) झालरदार है और उसके स्तन बॉडी के ऊपर दीखते हैं। वह एक बेञ्च पर बैठी हुई है और दूसरी लड़की पेड़ों की पाँत से निकलकर उसके पीछे आ खड़ी होती है; चोटी उसकी गुँथी हुई है और उसके गले में लेस है, वह इसका चुम्बन करने जा रही है। यह दूसरी लड़की मर्दानी पोशाक में है। औरतों की इन बूर्ज्वा बुराइयों को मैं पसन्द नहीं करता। गोकि चित्र की लड़कियों और स्टार के आचार-विचार में बहुत काफ़ी अन्तर है तब भी स्टार को देखकर वह कैलेंडर और कैलेंडर को देखकर स्टार मुझे याद आ जाती है।

आज शनिवार है। दिनभर कमेटियों की भरमार रहेगी। मैं कैलेंडर का एक और पन्ना फाड़ने जा रहा हूँ। रविवार—वाह! लाल अक्षरों में! लेकिन अब ये भी देखना चाहिये कि शनिवार के पीछे क्या लिखा है। 'नेक गुज़मैन ने दुर्ग-प्राचीर पर इस आशय से कटार फेंक दी कि चाहे भले ही वे उसके बेटे को मार डालें, वह शहर के फाटक की चाबी उनको कदापि न देगा।' इसके ऊपर मोटे अक्षरों में, 'देशभक्ति जयन्ती!' अब से पहले दुनिया कितनी गधी थी। यों तो फिर जिस कारण से मैंने अपने पिता का घर छोड़ा था उसको भी मनाया करो—'एक पिता अपनी पत्नी को कौटुम्बिक नैतिकता से पथभ्रष्ट होने से बचाने के लिए डंडों से मार डालता है।' ये भी क्या आदमी हैं! घर में घुसे और डंडेबाज़ी शुरू कर दी। 'अपनी पत्नी को मैं जितना अधिक पीटता हूँ उतना ही अधिक मज़ेदार शोरवा खाने को मिलता है!' पितृभूमि! एक द्वार की चाबी न देकर पुत्र का बध करा देना! धर्म! मनुष्य की सहज इच्छाओं को घोंटने के लिए झूठ और गन्दगी, जिससे सूदखोर और वेश्याएँ पनपती हैं, यह सब कितनी मूर्खता है! मेरा दिल तो यही चाहता है कि खूब हसूँ या सारे संसार

में आग लगा दूँ, या दोनों ही कर डालूँ। अच्छा लाओ कैलेन्डर का एक और पन्ना फाड़कर देखें—अरे ये क्या! इतवार सत्रह तारीख़ के बाद एक और लाल रंग में छपा हुआ इतवार! इसके बाद—फिर वही इतवार। भाड़ में जाने दो इन सबको। मेरे लिए तो एक ही इतवार काफ़ी है। सप्ताह में एक बार मैं बालों में तेल डालता हूँ और स्टार से भेंट करने जाता हूँ। सप्ताह में एक ही बार वह मेरी ओर देखती है और बिना कुछ कहे सिर हिलाती है। जब मैं उसकी ओर कुछ देर बराबर देखता रहता हूँ तो बचपने के साथ मुस्करा देती है और उसके गालों के वे दो गढ़े दीख पड़ते हैं। आओ इस गलत इतवार को फाड़ डालें। लेकिन देखें इसके पीछे क्या है। दूसरा इतवार। इतवार उन्नीस तारीख़, फिर दूसरा इतवार। तारीख़ बीस और आगे इसी तरह।...सात इतवार, एक के बाद! कैलेन्डर पागल हो गया है! वक़्त का राज्य अब नहीं है! सात इतवार लगातार और सातों के अङ्क ख़ून की तरह लाल! यदि यह समय का परिहास है तो उस सफ़ेद विगवाले चित्र के अनुरूप है। बूर्ज़्वा लोगों के सूअरपने से कुछ अच्छा नहीं निकल सकता!

पहला रविवार

ईंधन में चिनगारी

लाउड-स्पीकरों द्वारा सभा का भण्डा-फोड़।

वार्ड थियेटर, जहाँ हमारी सभा होनेवाली है, एक चौड़ी गली में स्थित है। वहाँ ट्रामें भी चलती हैं। खरंजे पर जौ की शराब बेचने वाले फेनयुक्त गिलास पर गिलास उँडेल-उँडेल कर देते हैं। उस सिरे पर जहाँ गली चौड़ी होकर स्कायर का रूप धारण कर लेती है तीन खोमचेवाले घूमा करते हैं। इनमें से एक बूढ़ी औरत है जो गर्दन से लटकते हुए पात्र में साबुन की टिकियाँ लेकर फेरी लगाती है। थियेटर की इमारत ज्यादा ऊँचाई पर है, उसकी दूसरी मंज़िल पेड़ों के समतल है। उसके बनाने में हमारे दल के सदस्यों के अतिरिक्त किसी भी अन्य आदमी का हाथ नहीं लगा है।

'इस दूसरी मंज़िल के' निर्माण-समिति के एक सदस्य ने कहा, 'शहतीर की मोटाई एक फुट से अधिक है और आठ हज़ार मनुष्यों का

बोझ इसको मालूम भी न होगा। शहतीर वाक़ई नायाब है। बिस्के की भट्ठियों में ढला हुआ, जिसको जल्दी-जल्दी चलनेवाले हथोड़े ने सुदृढ़ तथा लचकीला बनाया, धातु के कारीगरों के कौशल का यह शहतीर एक उत्कृष्ट नमूना है। इसके तंतु इतने सुदृढ़ हैं कि वह हज़ारों आदमियों के भार से ज़रा भी टस-से-मस न होगा। हमारे भाषणों और प्रशंसात्मक शब्दों की प्रतिध्वनि उसकी रग रग में जा पहुँचेगी और उनको हर्ष से पुलकित कर देगी। जब वह कारखाने में ही था तभी उसने मज़दूरों को वही भाषा बोलते सुना है—वही जो उसकी भाषा है। यह शहतीर 'सार्वजनिक कल्याण', प्रजातंत्र अथवा पार्लियामेंट के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता। विधायक समितियाँ, विभागों के प्रतिनिधि, चन्दा, आन्दोलन के उतार-चढ़ाव, मालिक की हानि करना 'औज़ार डाल देना' और बायकाट--यही सब उसका सारा संसार है। हाल के मध्य में दो चुस्त, गोल खंभे उसकी सहायता करते हैं। वह भी उसी की भाषा बोलते हैं। महराब के लम्बे शहतीर, प्रत्येक कॉरनिस पर लकड़ी के काम के नीचे छिपे हुए बल्व, द्वार, फ़ायर-प्रूफ़ पर्दा, लकड़ी की कुर्सियाँ, साज़िन्दो के बैठने का स्थान, दूसरी मंज़िल की सीधी धन्नियाँ, गिरजाघर की अपेक्षा जहाज़ की खिड़कियों से अधिक मिलती-जुलती अण्डाकार खिड़कियाँ—इन सब की भाषा भी वही है। यदि रविवार की रात को कोई मजिस्ट्रेट यहाँ आकर गानेवालियों की टाँगों पर लोलुप निगाहें डालता है, तो इससे होता ही क्या है? मध्य श्रेणी के व्यक्ति के लिए तो यह थियेटर मात्र ही है न! खेल-तमाशा, घुटने, जाँघें। नाटक—'साधारण क़ानून' की सीमाओं के भीतर दुःखान्त गृह-घटनाएँ! सुखान्त घटनाएँ--मुलायम चादरों और मधुर-शब्दों की सेटिंग में सरस व्यभिचार! शहतीरों, तख्तों, खंभों और कपाटों के दृष्टिकोण से यह इमारत जहाज़ के पृष्ठभाग की भाँति सुदृढ़ बनाई गई है--सब चीज़ें सामञ्जस्य से फिट की हुई सुन्दर युवतियों को

अपनी जंघाओं का प्रदर्शन करने दो। यदि थियेटर चलाना मंजूर है तो इन सुन्दरियों को कभी-कभी पेटीकोट उतार कर भी नाचना होगा! किंतु आज, सूर्य रश्मियों से जगमगाते हुए प्रातःकाल में—सभा में—लकड़ी, लोहा और काँच को अपनी आत्मा मिल गई है। 'अत्याचार के विरुद्ध! जेल में पड़े हुए भाइयों को मुक्त कराने के लिए!' नीली खिड़कियों की महराब वाली अपनी अट्टालिका से थियेटर उपहास कर रहा है।

खरंजे पर खड़े हुए लोगों की टुकड़ियों के मध्य में प्रॉग्रेसो गोन-ज़ालेज़ कहता है—'आज मैं अच्छी तरह, पूर्ण अवकाश के साथ थियेटर को देखूंगा।' उसके लिए ऐसा करना इससे पहले संभव नहीं था। दरवाजे की चूलों के सहारे खड़ा हुआ वह यह कहता है और अंगूठे के नाखून से पतलून पर लगे हुए सूखे मिट्टी के धब्बे को खुरचता है। फिर वह ट्राम के तख्ते पर खड़े हुए एक मित्र का, मुँह में दो अंगुली देकर, सीटी द्वारा अभिवादन करता है। श्रमजीवी समाचार पत्रों के विक्रेता पोस्टरों को झंडों की तरह ऊँचा उठाये हुए हैं और ज़ोर से आवाज़ लगाते हैं 'संगठन' 'भूमि और स्वतंत्रता।'

थिएटर के निर्माण-काल में जब प्राग्रेसो वहाँ काम करता था तो एक दिन पुलिस उसको ढूँढती-ढूँढती महराबवाली छत पर जा पहुँची थी, जहाँ वह मेख लगा रहा था। उसको तीन मास की जेल हुई।

'हाँ,' उनमें से एक ने बात काट कर कहा—'उसी समय जब 'लम्पन्यू, जेल से भागा था।'

'नहीं, उसके बाद की बात है। पिछली दफ़ा की बात है।'

जब प्रॉग्रेसो जेल से छूटा तो उसने मन-ही-मन कहा—'चल कर देखूँ कि काम का क्या हाल है और अपने औज़ार भी इकट्ठे कर लूँ।' उसने कितनी ही ईंटें लगाई थीं। पाढ़ के ऊपर काम करनेवाले पर क्या बीतती है, वह भली भाँति जानता था।

'आओ, बड़े शहतीर और दुतल्ले की शानदार महराब को समतल से देखूँ।' वह एक कुशल फोरमैन था और उसने इस इमारतमें बहुत कुछ काम अपने हाथ से किया था। अतः जेल से निकल,कर वह सीधा वहीं आ पहुँचा।

'वाह भाई! मेरी श्रेष्ठ भीतें, उत्कृष्ट रेखाएँ, वक्राकार फ़ौलाद और काँच गृह के त्रिकोणात्मक भाग के गोल नेत्र में ज्योति किस प्रकार नृत्य करती है! छत में लटकी हुई लालटेनों के प्रकाश की बाण-वृष्टि कैसी भली मालूम होती है।' वह हर एक चीज़ को गौर से देखता जा रहा था और उसके अधरों पर मुसकान थी। उसकी बग़ल में दो निठल्ले पोस्टरों के सामने टाँगों और जंघाओं को सतृष्ण नेत्रों से देख कर उनकी आलोचना में संलग्न थे। मठ के व्यभिचारपूर्ण जीवन की याद ताज़ा कर रहे थे। प्राँग्रेसों ने उनसे दियासलाई माँगी—आधा बक्स ख़ुद ले लिया और सिगरेट का धुँआ उनके मुख पर छोड़ा—हर रोज़ कोई जेल से थोड़े ही छूटता है!

आँख उठाकर देखता हुआ वह द्वार की ओर आगे बढ़ा। साइन-बोर्ड पर लिखा हुआ था, 'पैरानिम्फ़ रॉयल।' कैसा लालित्य था! उसको विश्वास नहीं होता था कि रंगशाला का व्यवस्थापक इतना बड़ा विद्वान् था। उस दिन कोई खेल होने वाला नहीं था। उसके लिए यह अच्छा ही हुआ—वह अंदर जाकर अच्छी तरह सैर करेगा। मुमकिन था इत्तफ़ाक़ से उसके औज़ार भी कहीं पड़े हुए मिल जायँ।

व्ययस्थापक बार (खाने-पीने के सामान की दुकान) में बैठा हुआ जल्दी-जल्दी कुछ खा-पी रहा था। उसको उससे कुछ कहना था। प्राँग्रेसों ने टोपी नहीं उतारी और व्यवस्थापक की दृष्टि उसके मुख पर से हटने का नाम ही नहीं लेती थी। स्थिति कुछ क्लिष्ट हो गई थी। यदि कैस्टीलियन स्ट्रीट में कोई जहाज़ लंगर डाले हो और उसकी केबिन में कोई बूर्ज्वा (पूंजीपति) महाशय तशरीफ़ रखते हों, तो उनसे किस

प्रकार बात करना चाहिये—यह बेचारा श्रमजीवी क्या जाने ? प्रॉग्रेसो ने जो कुछ वह चाहता था, सीधे-सादे शब्दों में कह दिया। दो चुसकियों के मध्यवर्ती रिक्त समय में व्यवस्थापक ने सिर हिला कर कहा—

'यहाँ किसी के औज़ार नहीं हैं और तुम्हारे यहाँ आनेकी कोई ज़रूरत नहीं है।'

'परन्तु मैंने तो यहाँ छः मास से अधिक काम किया है।'

'तो तुमको उसकी मज़दूरी भी मिल गई होगी—जाओ, यहाँ से निकल जाओ!'

व्यवस्थापक ने द्वार की ओर इंगित किया और प्रॉग्रेसो ने अन्दर के ज़ीने की ओर।

'मैं ऊपर जा रहा हूँ। सब कुछ देख लेने के बाद मैं आपसे विदा लेने आऊँगा। या यदि मेरी इच्छा हुई तो यहीं ठहर जाऊँगा। इस सब पर'—उसने दीवारों, छत, पर्दों और चित्रों की ओर उँगली उठा कर कहा—'मेरा आप से अधिक अधिकार है।'

वह ऊपर जाने लगा। व्यस्थापक कुछ कहना चाहता था, लेकिन शराब की घूँट उसके गले में अटक गई। खाँसी आई और दम घुटने-सा लगा। तब वह फ़ोन की ओर लपका।

'अरजेंट काल्स में पुलिस का नम्बर क्यों नहीं है ? यह भी क्या हिमाक़त है ! नम्बर ६२७४१, नहीं, मेरा मतलब है ६२४१७ !' इतने में प्रॉग्रेसो तीसरे तल्ले के ज़ीने के ऊपर जा पहुँचा। उसने सब चीज़ें अच्छी तरह देखी-भालीं। शहतीरों के तल, लकड़ी के गुण-दोष देखे। पर्दे उसको पसन्द आये। यद्यपि बिजली के तारों का फैलाव वह अच्छी तरह न समझ सका, लेकिन जहाँ तक उसकी समझ में आया यह भी कुछ ज़्यादा खराब नहीं था।

बड़े आड़े और एक छोटे शहतीर को उसने थपथपाया और

खम्भों पर सप्रेम हाथ फेरा। ऊपर की गैलरीवाली सबसे ऊँची सीटों की पंक्ति तक वह चढ़ गया जहाँ छः गज़ से अधिक गोलाई की वक्रश्रेणी में शीशे और पारदर्शी पालिश का काम था। लालटेन के स्निग्ध गुलाबी प्रकाश से काँच चमक रहा था। उसने नीचे दृष्टिपात किया और मुसकराया। वह एक सीढ़ी पर बैठकर सिगरेट पीने लगा। सुलगते हुए सिगरेट की लाली उसके काम पर अभिनन्दन की लोहित मुद्रा-सी लगी हुई प्रतीत होती थी। लेकिन 'पैरानिम्फ़रायल' यह क्या ? इसका क्या अर्थ था ?

जैसे ही वह नीचे जाने लगा, ज़ीने के दूसरे सिरे पर दो कान्स्टेबल दृष्टिगोचर हुए। उसको देखकर उनके हाथ वर्दी की जेब में जा पहुँचे। प्राॅग्रेसो भी निश्चल खड़ा रहा। वह पुलिस के इस उपक्रम तथा अभिप्राय से भलीभाँति परिचित था।

'नीचे उतर आओ !' कान्स्टेबलों ने आज्ञा दी।

प्राग्रेसो मूर्ख जैसा बन गया।

'क्यों ? क्या तुम फ़िल्म के लिए फ़ोटो लोगे ?'

'इसी क्षण नीचे उतर आओ !'

प्राँग्रेसो ने हाथ उठाकर जेब में डाला जिसमें कोई हथियार नहीं था और कहा—

'अगर तुम फ़िल्म लेना चाहते हो, तो खैर, मुझे कोई आपत्ति नहीं है।'

अन्त में उन्होंने उसको पकड़ लिया। सारजेन्ट ने उससे ताड़ना के स्वर में कहा—

'अभी जेल से छूटकर आए हो। भलेमानसों की तरह बीबी-बच्चों के पास जाते और इस तरह फिर अपनी आज़ादी को खतरे में न डालते।'

प्राग्रेसो ने इसका उत्तर दिया, 'बीबी-बच्चे तो सभी के होते हैं।

तुम स्वयं उनकी देख भाल करते हो या तुम्हारी बजाय कोई पड़ोसी इस कार्य का भार अपने ऊपर ले लेता है। लेकिन हमारा काम इससे अधिक महत्वपूर्ण है। हमारे श्रम की पैदावार ही हमारी सच्ची सन्तान है। हमारी सहज बुद्धि हमें इस बात के लिए बाध्य करती है कि एक स्त्री, बच्चों और थोड़े-से टकों की अपेक्षा हम अपने सच्चे काम का अधिक ध्यान रखें। तुम्हारा मार्ग मध्य श्रेणी के लोगों का तंग रास्ता है और साथ ही वह असत्य भी है।' प्राग्रेसो ने यह सब कुछ कहा नहीं, लेकिन उसको प्रतीत हो रहा था कि ये विचार उसके खून में जोश से उछल रहे हैं।

उपर्युक्त बातों को याद करके अपने साथियों के साथ वह हँसा। सूर्य ने प्रातःकाल को शान्ति का उपहार दिया था। नये व्यक्ति आकर टुकड़ियों से सम्मिलित होते जाते थे। आधा से ज़्यादा थिएटर अभी भी भर चुका था। लम्बे डग रखता हुआ सामर भी वहाँ आ पहुँचा। उसका क़द औसत दर्जे का था। वह शरीर में दृढ़ और मोटा था। कुछ लोगों ने उसका अभिनन्दन किया। उसने शिर झुकाकर उसका उत्तर दिया और आँख उठाकर ऊपरवाली गैलरियों को देखा जहाँ कि मई के सूर्य्य की श्वेतकिरणों ने एक कशीदा-सा काढ़ दिया था। सभा के आरम्भ में अभी आधा घंटा बाकी था। आज की बैठक का कोई महत्त्व नहीं था—महज़ क़ायदे की खाना-पुरी थी। ईश्वरीय और मानवी विधान के विरुद्ध सिंडीकेटों के अनवरत युद्ध में यह एक क्षुद्र घटना मात्र थी। यह युद्ध था समाजवादियों, प्रजातंत्रवादियों, धर्माचार्यों और सेनापतियों के विरुद्ध। बूर्ज्वा वर्ग के तुमुल तथा मध्यम स्वर में राग अलापनेवालों के खिलाफ जो पार्लियामेंट में अधिक समय प्राप्त करने के लिए लम्बे भाषण देते हैं, उन लोगों के विरुद्ध जो मस्तिष्क पर नाज़ करते हैं। सारांश यह कि हर एक बात के विरुद्ध, कभी-कभी स्वयं अपने विरुद्ध! सामर उलझन में पड़ा हुआ-सा कुछ विचार

कर रहा था। ये लोग किस खोज में हैं ? इनका अभीष्ट क्या है ! वह अपने मन से प्रतिदिन यही प्रश्न करता है, फिर भी वह उनके साथ है और उनकी तरह विश्वास से भरा हुआ। लेकिन जा किधर रहे हैं !

इतने में कुछ नई चीजें लिये हुए स्टार गार्सिया वहाँ आ पहुँची। जो भाई जेल में सड़ रहे थे उनकी सहायता के निमित्त वह लाल फलालेन के बने हुए गुलाब के फूल बेच रही थी। कर्तव्य-पालन में निमग्न, वह संगमरमर की एक पुतली-सी प्रतीत हो रही थी, वह सामर के पास आई और उसने गुलनार का असली पुष्प उसके बटन होल में लगा दिया। गंभीरता के साथ, धैर्य-पूर्वक। परन्तु गंभीर बना रहना उसके लिए बड़ा कठिन था। यदि कहीं एक दफ़ा हँस पड़ी तो बस गम्भीरता का दिवाला ही समझ लो। चुपके से विलाकम्पा का हाल पूछने के पश्चात् सामर ने उसको एक शिलिंग दिया। स्टार ने सुकुमार कंधे उचकाकर, भवें तानकर कहा—

'कान खोलकर सुन लीजिये जनाब, मैं विलाकम्पा के सम्बन्ध में कुछ भी सुनना नहीं चाहती !' तत्पश्चात् वह अन्दर चली गई। पिता के गन्दे मोजों से ऊपर उसकी नंगी टाँगे सिगरेट-केस पर बनी हुई गडरनी की टाँगे जैसी प्रतीत होती थीं। उसके अंदर चले जाने से ऐसा मालूम होता था मानो वह दालान प्रकाश-शून्य हो गया हो।

इस समय बातों की झड़ी लगाती हुई भीड़ थिएटर में आ पहुँची। दो कामरेड लाउड-स्पीकर लगा रहे थे। हाल भर चुका—फिर भी मज़दूर लोग किसी प्रकार अंदर घुसने का प्रयत्न कर रहे थे। एक बूढ़ा जिसको कुछ यूँही नाम मात्र को दिखाई पड़ता था और जिसकी सफ़ेद दाढ़ी हाथ भर की थी, अपनी धीमी आवाज़ में 'अंतर्राष्ट्रीय' गीत गुन-गुनाता हुआ अंदर घुस आया। 'क्रान्ति' में उसका विश्वास इतना दृढ़ था कि उसकी झुकी हुई कमर सीधी हो गई थी। कुछ लोग इधर-उधर पर्चे और पत्रिकाएँ बाँटते फिरते थे।

थियेटर का सामने का निचला तिहाई हिस्सा पोंस्टरों और व्यंग्य-चित्रों से ढका हुआ था। पोस्टरों पर मोटे अक्षरों में लिखा था—सी० एन० टी०, एफ़० ए० आई० *। पहले कहा जा चुका है कि रंगशाला का नाम था—'पैरानिम्फ़ रायल।' अब जब देश की बागडोर प्रजातंत्र-वादियों के हाथों में आई थी 'रायल' शब्द जिसके अर्थ 'शाही' हैं उड़ा दिया गया था। अब 'पैरानिम्फ़' के पूर्व पोस्टर के सी० एन० टी० से कुछ और ही लुत्फ़ पैदा हो गया था। कुछ दूर पर गिरजाघर का घंटा बज उठा—श्रमजीवियों के इस नगर में उसकी ध्वनि पर ध्यान देने वाला कौन था! निम्न श्रेणी के शिल्पकार और दुकानदार, रविवार वाले कोट पहने हुए जिनके बटन खुले हुए थे, अपनी दुकानों के बंद दरवाज़ों के ऊपर झुककर तमाशा देख रहे थे। इस प्रशांत वायुमण्डल में सहसा किसी मोटर कार के अगले शीशे से, जिसपर दाँत बनानेवाले का या किसी दाई का सुनहरा साइन बोर्ड लगा था, सूर्य की नीली तथा बैजनी रंग की प्रतिबिम्बित किरणों ने उत्पात मचाया। सब के अधरों पर खूनी शब्द थे और मुखों पर क्रान्ति की कराल, अदम्य, दृढ़ रेखाएँ। सी० एन० टी० और सी० एन० (जिस का अर्थ प्रथम से भिन्न है) और एफ़० ए० आई० के नारों से समस्त वातावरण गूँज उठा। ये सामाजिक परिवर्तन निषेध मूलक हैं। राजनीति मुर्दाबाद! असहयोग! वोटें नहीं होंगी! कोई समझौता नहीं होगा! निशाने पर सीधा तीर चलाएँगे! नियमों, बिलों, नारों, तथा कितनी ही अगड़म-बगड़म बातों की २० मिनट तक खेंचातानी होने के उपरांत तय हुआ कि सी० एन० टी० के बजाय सी० एफ़० ए० एन० आई० टी० होगा। दस बजने में पाँच मिनट पर हॉल में इतनी भीड़ हो गई कि दम घुटने लगा। इसके अतिरिक्त हज़ारों आदमी गली में खड़े हुए थे जिनको अन्दर आना

* सी० एन० टी० मजदूरों का राष्ट्रीय संघ। एफ़० ए० आई—आईबेरियन अराजकवादियों का संघ।

नसीब नहीं हुआ था। बेकार खड़े—जेब, में पड़े हुए पैसों को उलट-फेर कर ये लोग आज का बजट बना रहे थे और लाउड-स्पीकरों की ओर आशापूर्ण दृष्टि से देख रहे थे। लाउड-स्पीकरों के भोंपू छज्जे से आगे निकले हुए थे और ऐसा प्रतीत होता था मानो भाषण देने के लिए गला साफ़ कर रहे हों। सूर्य के ऊपर उठने से गली कुछ अधिक चौड़ी-सी देख पड़ने लगी। और न्याय? ईश्वरीय न्याय? वैधानिक न्याय? या प्रॉग्रेसो का न्याय जिसने यह थियेटर निर्माण किया है? परंतु न्याय स्वतंत्र व पूर्ण नहीं है। वह केवल एक नारा है!

थिएटर के अग्रभाग से लेकर चमकते हुए खरंजे तक में सूर्य का प्रतिबिम्ब पड़ रहा था।

गिरजा को जाते हुए दो नवयुवकों से एक नवयुवती ने अट्टालिका के जंगले पर झुककर कहा—आज रात को मेरा पहला मुजरा होगा। मैं तीसरे पहर अच्छी तरह स्नान करूँगी। आप लोग नौ बजे के लगभग मेरे यहाँ आ सकते हैं।

मालूम होता था कि यह गली नहीं सुहागरातवाला कमरा है। लड़की के स्वर में एक गूढ़ प्रकम्पन था कि आज उसकी कौमार्य वाटिका की बहार लुट जायगी। वह अपनी नम्रता का संकेत मज़दूरों को देती है और उसके कड़े स्तनों और ऊपर उठी हुई नग्न भुजाओं की प्रातःकाल में झाँकी खुलती है। अंदर से लौटकर स्टार द्वार के पास खड़ी फूल बेच रही है। उसकी लाल जर्सी और भरी हुई गर्दन द्वार-प्रकोष्ट की छाया में इतनी सुस्पष्ट हो उठीं कि वह अपनी उपस्थिति से स्वयं प्रभावित हुए बिना न रह सकी। और शीघ्र फिर अंदर चली गई। 'क़ैदियों की सहायता के लिए पर्चे! फ़ासिस्ट-सोशलिस्टों का विश्वासघात! मूल्य दो पैसे। संयुक्त दल के बिल्ले!'

उसका सामान अपरिपक्व वाम वक्ष पर पड़ा हुआ था, वह कभी इस पैर, कभी उस पैर कूदती हुई जा रही थी मानो गुड़िया

खिला रही हो। हठात् उसने विलाकम्पा को एक कुरसी पर बैठे हुए देखा। बालों की लट जो चोटी से बाहर निकल आई थी उसने ठीक की, दाँत से होंठ काटा और दूसरी ओर देखने लगी। हाल इस वक्त खचा-खच भरा हुआ था। छः दिन के परिश्रम के पश्चात् अब सब चुपचाप विश्रान्ति-निमग्न थे। इनमें से कितने ही स्टार के परिचित थे। सहसा द्वार के समीप तू-तू मैं-में शुरू हो गई। एक नवयुवक पिस्तौल ताने हुए एक आदमी को बाहर चले जाने को कह रहा था। प्रॉग्रेसो झटपट वहाँ आ पहुँचा और नवयुवक से तमचा नीचे रखवा दिया। 'परन्तु यह तो पुलिस का आदमी है।' नवयुवक ने कहा। प्रॉग्रेसो ने पुलिस के आदमी से चले जाने की प्रार्थना की।

'इन्होंने मुझको मार डालने की धमकी दी है।'

'कैसी बेसिर-पैर की हाँक रहे हो! जाने भी दो। यह संभव नहीं।' प्राग्रेसो ने कहा।

'ये सब इस बात के साक्षी हैं।'

प्रॉग्रेसो ने आस-पास बैठे हुए आदमियों से पूछा तो सब ने निषेध किया। किसी ने भी पिस्तौल नहीं देखा था।

'अब समझ में आया आपकी। आप उत्तेजित हैं और हर जगह धमकियों तथा हथियारों की कल्पना करते हैं। यहाँ से तशरीफ़ ले जाइये और अपने अफ़सरों से कह दीजिये कि हम अपनी सभाओं में गुप्तचरों का आना बरदाश्त नहीं कर सकते।'

मामला यहीं समाप्त हो गया। लोग दूसरे विषयों की चर्चा करने लगे। और हँसने लगे। स्टार ने फिर विलाकम्पा की ओर दृष्टिपात किया। वह उसके पिता के पास बैठा हुआ था। उसने बुर्जुवा लोगों की भाँति शान के साथ अपनी जेब में से एक पेनी निकाली और शासन के संकेत से उसको अपने पास बुलाया। वह उसके पास गई और एक क्षण के लिए उसके नए सूट को उसने प्रशंसा की दृष्टि से

देखा। विलाकम्पा की दृष्टि ने उत्तर में कहा, यह न समझना कि मैंने ये बढ़िया कपड़े इस विचार से पहने हैं कि तुम जैसी मूर्ख लड़कियाँ मुझसे प्रेम करें। उसके हाथ उसने एक पैम्फलेट बेचा और उसके बटन होल में कारनेशन का एक फूल खोंस दिया। 'मेरे पास दो फूल थे' उसने कहा—एक मैं सामर को दे चुकी हूँ। विलाकम्पा इस बात को पहले से जानता था क्योंकि वह सामर के कोट में फूल लगा हुआ देख चुका था। तत्पश्चात् विलाकम्पा ने उसकी ओर एक सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि डाली और उसकी प्रशंसा भी की। फिर वह खड़ा होकर सामर को खोजने लग गया। टोपियां, टोपों और सफ़ेद कमीजों की पंक्तियों के बाद पंक्तियाँ थीं और वह इस भीड़ में कहीं नज़र न आया। लाचार होकर विलाकम्पा अपनी जगह बैठ गया और स्टार की ओर देखने लगा जो पंक्तियों के मध्यवर्ती रास्ते से ऊपर जाकर नीचे उतर रही थी। उसके बिल्ले और पर्चे धड़ाधड़ बिक रहे थे। विलाकम्पा की दृष्टि में यह बात छिछोरेपन की द्योतक थी और उसको अपने क्रान्तिकारी होने पर लज्जा आ रही थी। ऊपरवाली गैलरी में बैठे हुए लोगों ने नीचे की गैलरीवालों को ज़ोर से पुकारा। कहीं-कहीं क्रान्ति के नियमों पर थोड़ी-बहुत बहस होने लगी। एक घिनौना, आत्मविश्वासी व्यक्ति, बग़ल में कागजों का पुलन्दा दबाये आया और चला गया। वह एम्सटर्डम के तीन यहूदियों का एजेएट था जो स्पेन की करेन्सी के उतार-चढ़ाव पर सट्टे का व्यापार करते थे। भविष्य में क्या होनेवाला है, इस बात की टोह में वह राजनीतिक तथा सार्वजनिक संस्थाओं में गुप्तचर भेजते थे। यह आदमी भी उनका गुप्तचर था—युद्ध के गुप्तचरों से अधिक अर्थ-लोलुप, लेकिन कम बहादुर। इनके भी कार्यों और आकृति में वही प्रच्छन्न अस्पष्टता पाई जाती है। बेंचों की तीसरी श्रेणी में एक अद्भुत् दक्षिणी अमरीकन बैठा हुआ था। उसकी वेश-भूषा अमरीका के आदिम निवासियों के सरदार जैसी थी। वह बहुत

से गण्डे ताबीज़ छल्ले आदि पहने हुए था और अपने को लेखक कहता था। वह हमको एक ऐसी युक्ति बताने आया था जिससे एक ही रात में सारी शहरी पुलिस का सफ़ाया एक शुष्क वैज्ञानिक पाउडर द्वारा किया जा सकता था। हमने उसका नाम 'सनकीराम' रखा था और वह उसपर खूब फबता भी था। वह आशा करता था कि उसकी युक्ति को कार्यरूप में परिणत करने के लिए एक विशिष्ट समिति बनाई जायगी। उसने स्टार से पर्चे, एक छोटा-सा गुलाब का फूल और संयुक्त दल का बिल्ला खरीदा। प्रचार-सम्बन्धी पर्चों तथा स्थानीय प्रजापरिषद् के घोषणा-पत्र की प्रतियों के बण्डल ऊपर से फेंके जा रहे थे। स्टार ने एक बण्डल उठाया और अन्यमनस्कता से बाँटने लगी। हाथ और भुजाएँ उठे और लहराये। वायुमण्डल गरमाया। घोषणा-पत्र के शब्दों ने उसमें शीघ्र उगनेवाले बीज बोये।

अप्रकाशित रंगभूमि भरनी आरम्भ हुई। सभापति महोदय आ विराजे। मध्यवर्ग के सम्वाददाता—वह यहाँ आते ही क्यों हैं?—रिपोर्टरों की मेज़ पर इस प्रकार आकर बैठे मानो कुतूहलवश वे कोई चिड़ियाघर देखने आये हों। तत्पश्चात् एक ने आकर कहा कि गली में खड़े हुए भाइयों से लॉबियों और अन्तर्मार्गों में चले आने को कहा जाय, जहाँ एम्प्लीफायर (स्वर-वर्द्धक यंत्र) लगा दिये गये हैं, क्योंकि पुलिस ने सड़क पर भीड़ लगाने का निषेध कर दिया है। इस पर लोग घुर्घुराये। अन्दर के रास्ते और द्वार भीड़ से पट गये। एक सदस्य ने कुछ तारों को वियुक्त कर दिया। सभापति के थोड़े-से शब्दों से कार्यवाही आरम्भ हुई और प्रथम वक्ता का भाषण शुरू हुआ। उन्हीं परिचित पुराने शब्दों को बाहर लगे हुए लाउड-स्पीकरों ने ज़ोर से दोहराया, 'सरकार पूँजीवाद की गुलाम है, हमारे भाइयों का सड़कों पर वध कर रही है। मंत्री हमारी दी हुई शक्ति का दुरुपयोग कर रहे हैं।' किसी ने विरोध किया, 'हमको

यह नहीं कहना चाहिये। ऐसा कहना अपने शत्रुओं को हथियार देना है। बुर्ज्वा क्रान्ति के साथ इस संस्था को किसी प्रकार का सम्बन्ध स्वीकार नहीं करना चाहिये।' निषेधात्मक आवाज़ों का एक तूफ़ान-सा उठा जिसमें विरोधी की आवाज़ डूब गई। फिर भी वह न माना। 'यह तो केवल अवसर से लाभ उठाना होगा।' किसी ने उत्तर दिया, 'बहुत अच्छा, अवसर से लाभ क्यों न उठाया जाय।' लाउड-स्पीकर कहे जाता है—'बुर्ज्वा का कमीनापन—अपने अधिकारों के लालची कुत्ते—जनता पर अत्याचार ढा रहे हैं। जेलखाने भरे जा रहे हैं, जहाज़ हवालात बने हुए हैं—हमारे भाई गोलियों का शिकार बनाये जा रहे हैं।' लाउड-स्पीकरों से शब्द इस प्रकार निकल रहे हैं जैसे गुलेल से गोले। तीन हज़ार मज़दूर जिनको अन्दर जगह नहीं मिली थी सड़क पर डटे हुए हैं। पल्टन का अफ़सर अपनी मूँछ मरोड़ रहा है और लाउट-स्पीकरों पर गज़ब की निगाहें डाल रहा है। वह दूतों को दौड़ाता है। 'मैंने लाउड-स्पीकरों को बन्द कर देने की आज्ञा दे दी है।' गड़बड़। एलेक्ट्रीशियन क़सम खाता है कि उसने सम्बन्ध तोड़ दिया है। परन्तु इस पर भी लाउड-स्पीकर दहाये ही जाते हैं। 'हम इस सारी दुष्टता को जिसके तुम प्रतिनिधि एवं उत्तरदायी हो मिटाकर चैन लेंगे। जिस प्रकार जागीरदारी का नाश हुआ उसी तरह बुर्ज़वा-वर्ग का शिर भी एक न एक दिन अपने ही भार से भू-शायी होगा।' 'बस जल्दी करो! इन तारों का सम्बन्ध तोड़ दो।' किसी ने यह काम कर दिया। लेकिन बरामदे के ऊपरवाला और तीसरे तल्ले के लाउड-स्पीकर क्यों चुप होने लगे। यह दूसरे वक्ता की आवाज़ है जो 'भागने के क़ानून' की निन्दा कर रहा है। उसीने सन् १९२९ में सब से प्रथम तदनुसार घोर कष्ट पाया था। उन्होंने उसको जान से नहीं मार डाला था। वह सत्यनिष्ठ तथा साहसी होते हुए भी उसकी निन्दा नहीं कर सका था। उसके शब्द मानो उबलते हुए द्रव्यों के

फुआरे थे, दुमदार सितारे की तरह सनसनाते, जलते और आकाश को आहत करते हुए ! 'विश्वासघात, कायरता, दुःख, अपराध, बारूद, तोपें, इंक़िलाब, एफ० ए० आई०, सी० एन० टी०, एफ० ए० आई०, सी० एन० टी० ।' लाउड-स्पीकर बुर्बुराये। सड़क पर भीड़ बहुत बढ़ गई और रास्ता बिलकुल बन्द हो गया। एक-से-एक सटी हुई कितनी ही ट्रामकारें अधीरता के साथ, घंटी पर घंटी बजा रही हैं। 'इंक़िलाब ज़िन्दाबाद !' के नारे हज़ारों गलों से निकल रहे हैं, हज़ारों घर के अन्दर बैठे हुए ही आवाज़ में आवाज़ मिला रहे हैं। इन शब्दों ने लोगों को उन्मत्त-सा कर दिया है। खतरे का बिगुल बजता है। हथियारबन्द पलटन के सामने जन-समुदाय निश्चल रूप से खड़ा हुआ है। लाउड-स्पीकर अपना काम जारी रखते हैं--सी० एन० टी० ज़िन्दाबाद ! ग़द्दार प्रजातन्त्र मुर्दाबाद !'

एक सारजेन्ट आदेशपत्र लेकर आता है। सड़क पर लाउड-स्पीकर लगाने की मुमानिअत कर दी गई थी। बड़ी कोतवाली में इस आज्ञा के तोड़ने की फोन द्वारा इत्तला की गई। अब वहाँ से हुक्म मिला था कि सभा की कार्यवाही बन्द कर दो।

सिपाही निश्चल खड़े हुए हैं। बिगुल फिर बजाया जाता है। पुलिस धावा बोलती है। चीत्कार सुन पड़ता है। सहसा खिड़कियों के कपाट और मकानों के द्वार पट-पट बन्द हो जाते हैं। ट्राम कारें खाली हो जाती हैं। भगदड़ पड़ जाती है। एक महिला पैर फिसलने से गिर जाती है। गिरते समय वह चीख उठती है, 'बदमाश ! बदमाश !' एक मज़दूर ने उसको दौड़कर उठाया और उससे पूछता है 'बदमाश कौन है ?'

'तुम, मज़दूर लोग !'

मज़दूर ठहाका लगाकर उत्तर देता है, 'बी साहिबा, घबराइये मत। बलात्कार दोपहर से पहले आरम्भ नहीं होता !

लाउड स्पीकार अब भी वक्ता के निन्दात्मक शब्द दोहरा रहे हैं, 'वे सड़क पर हमारे भाइयों का वध कर रहे हैं।'

लाउड-स्पीकर सभा का भण्डा फोड़ रहे हैं।

न तो कोई पद-स्थापन है और न कोई विद्युत-सम्पर्क। दस फीट गहरी नाली में से सारे तार निकाल दिये गये हैं। उनको अब चुप हो जाना चाहिये था। वह भी बहुसन्तान श्रम के बाल-बच्चे ही हैं न ? वह भी थियेटर के अग्रभाग के शहतीरों और खिड़कियों की भाँति मजदूरों के हाथों से बने हुए हैं। परन्तु उनमें सुकुमार एवं भद्र वक्र रेखाएँ भी हैं—स्त्रियों और बुर्ज़वा की तरह ! ये लाउड-स्पीकर स्वयं अपनी इच्छा से बोले जा रहे हैं और सभा के साथ विश्वासघात कर रहे हैं। कभी वह भाषणों के वाक्यों को बार-बार बोल उठते हैं, कभी भीड़ के शोरोगुल को जो तीनों द्वारों के बाहर हल्ला मचा रही थी।

फ़ौज के दस्ते ने आगे बढ़कर जनसमूह को पीछे हटा दिया, लेकिन लोगों के थियेटर से बाहर आने के कारण फिर भीड़ हो जाती है और आगे बढ़ आती है। यद्यपि हाल खाली हो चुका है, तथापि लाउड-स्पीकर अब भी बराबर दनदनाये जाते है 'बुर्जवा रिपब्लिक मुर्दाबाद !' उत्तेजित करना उनका काम है। वे उसको पूरा कर रहे हैं।

क्या इन विश्वासघातियों के लिए एक भी गोली नहीं है ? पिम ! पिम ! प्रकोष्ठ के ऊपरवाला लाउड-स्पीकर धड़-धड़ाकर नीचे आ रहा। लेकिन दूसरे लाउड-स्पीकर अब भी जारी हैं। गोलियों की आवाज़ ने तो आफ़त कर दी। नारे लगते हैं और मन्द क्षीण स्वर में अन्तर्राष्ट्रीय गीत गाया जाता है। एक ट्राम कार से रास्ता रोका जाता है और एक कार उलट दी जाती है। काँच टूटने की आवाज़ होती है। आधा जन-समूह थिएटर के पीछे जा छिपता है। एक खिड़की से गोलियाँ

छूटती हैं। मैड्रिड का स्वर्ण प्रभात नील वर्ण हो उठता है। अब एक—केवल एक बचा हुआ लाउड-स्पीकर जो बहुत ऊँचाई पर लगा हुआ है बोलता है 'हवशियो! तुम क्या करने जा रहे हो? आत्मा का ध्यान रखना!'

हेडक्वार्टर को फ़ोन किया जाता है। और सिपाही आते हैं। अबकी दफा सिविलगार्ड आया है। लाउड-स्पीकरों पर और गोलियाँ चलती हैं। सड़क ज़ोर की पुकारों, भमक्रम शोरों, स्फोटनों का एक महारव बन जाती है। क्रान्ति! हा! हा! हा! इससे अधिक आप चाह ही क्या सकते हैं? स्वयं अपनी इच्छा या खुशी से लाउड-स्पीकर इंक़िलाब नहीं पैदा कर रहे हैं। घोड़ों पर सवार सिविलगार्ड धावा बोल देते हैं। वह घोड़ों से उतरकर गोलियाँ चलाते हैं। आधे घण्टे तक युद्ध होता है। स्क्वायर के ज़मीनदोज़ भाग के द्वारों पर मज़दूर क़ाबिज़ हैं, जहाँ से बाहर मुख निकालकर वे फायर करते हैं। लाउड-स्पीकर एक क्षण हकलाने के पश्चात् कहता है, 'देश के सच्चे हितों की मूलाधार व्यवस्था और शांति है।'

परन्तु भाव? वह भी तो एक चीज़ है। भाव को कभी मत भूलना।

खिड़कियों पर गोलियाँ, गोलियों का उत्तर गोलियों में खिड़कियों से। लाउड-स्पीकरों के टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं। वे चुप हैं, सड़क पर घोड़े घूम रहे हैं। एक का पैर फिसला, गिर पड़ा, पृथ्वी से चिंगारियाँ उठीं। और गोलियाँ चलीं। सिपाहियों की एक और लारी आई। चकनाचूर हुए तीन कामरेड खरंजे पर पड़े हुए हैं। पचास से अधिक, हथकड़ियाँ पहने हुए घुड़सवारों के घेरे में, कोतवाली ले जाये जा रहे हैं। जौ की शराब बेचनेवाला पीपे के धातु के टैप को खोलने लगता है और सिर हिलाता है 'यह अराजकता है! समाजवादियों को मैंने वोट दी थी—उसका यही तो प्रसाद है।'

तीन कामरेडों की लाशों की डाक्टरी जाँच

सड़क पर जो तीन श्रमजीवी मुर्दा पड़े हुए थे, उनके नाम ये थे—एस्पार्टको अलवरेज़, जर्मिनल गार्शिया और प्राग्रेसो गोनज़ालेज़। तीन नामों की सूची कुछ अधिक महत्त्व नहीं रखती। तीन नवयुवक हट्टे-कट्टे मज़दूरों का रविवार के प्रातःकाल में, शहर के खरंजे पर मुर्दा पाया जाना, कोई साधारण घटना नहीं कही जा सकती। यही तीनों व्यक्ति, सभा बैठने के आधा घंटा पूर्व, एक नवीन व्यवस्था के सजीव प्रतीक थे। एस्पार्टको कृषि-संबंधी मज़दूरों के परिषद् का सदस्य था। जर्मिनल गैस तथा विद्युत् संबंधी परिषद् का, और प्रॉग्रेसो गृह-निमाण समिति का। जब इनके शव उठाए गये तो वे विभिन्न स्थितियों में पड़े हुए थे। एस्पार्टको मुँह के बल औंधा गिरा था और खरंजे के पत्थरों से टकरा कर उसके दाँत बाहर निकल पड़े थे। अपने रुधिर का चुम्बन

करता हुआ वह वहाँ पड़ा था। जर्मिनल का मुख ऊपर की ओर था, एक पेड़ के तने के समीप, सिर नाली में। प्रॉग्रेसो तत्क्षण नहीं मरा था। वह सीने के बल घिसटता हुआ कुछ दूर गया था। खरंजे पर उसका हृदय धक्-धक् कर रहा था। ऐम्बुलेंस तक पहुँचते न पहुँचते उसकी मृत्यु हो गई थी। तत्पश्चात् वह अपने दोनों साथियों के पास चीलघर पहुँचा दिया गया। पुलिस सर्जन ने लिखवाया : 'एस्पार्टको अलवरेज़--उम्र ४२ साल। सीधी ओर, कनपटी के क्षेत्र में दो छुरों के ज़ख्म, भेजा निकला हुआ--ज़ख्म निस्संदेह मृत्युजनक।' 'जर्मिनल गार्सिया--उम्र ५० साल। सीने में गोली का ज़ख्म, निकलने का छिद्र नदारद। एक ओर मृत्युजनक ज़ख्म उरूसंधि में, जाँघ की धमनी भग्न, शरीर पर कई जगह अंदरूनी चोटें।' 'प्राग्रेसो गोनज़ालेज़, उम्र ३२ साल, गोली के तीन ज़ख्म : दाहिनी ओर पसलियों के बीच के चतुर्थ क्षेत्र में, जिगर में और ललाट की हड्डी पर। बाहर निकलने के तीनों छिद्र विद्यमान हैं। सिर की चोट निःसंदेह मृत्युजनक।'

पुलिस सर्जन को मृत्यु का प्रमाण-पत्र देना था। और वस्तुतः वह मर तो चुके ही थे; परन्तु लाशों की जाँच के विवरण में यह नहीं बताया गया कि गोलियाँ कितनी बड़ी थीं और न यही कि आया वह छोटे या लम्बे अस्त्रों से छोड़ी गई थीं। ये बातें अनिश्चित रूप में छोड़ दी गईं जिसमें समाचार-पत्र इस द्विविधा में रह जाएँ--न जाने ये लोग, लड़ाई की गड़बड़ में, अपने साथियों की गोलियों ही के शिकार तो नहीं हो गये। जहाँ संदेह की गुञ्जायश होती है वहाँ सम्पादक अपना मत निर्दिष्ट करके उसकी पुष्टि करता है। लेकिन जब साफ शहादत मिल जाती है वहाँ उसके किये बस इतना ही हो सकता है--वातावरण को प्रच्छन्न बनाना और संदेह पैदा करना।

परन्तु पोस्ट मार्टम (शव की चीर-फाड़ कर जाँच करना) एक तुच्छ-सी बात है। उससे कामरेड एस्पार्टको, प्रॉग्रेसो और जर्मिनल के

सम्बन्ध में क्या बात ज्ञात होती है ? कुछ भी नहीं ! ये कैसे आदमी थे ? कौन थे ? पाठकगण, कदाचित् इन तीन लाशों के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में आपको कोई स्पृहा नहीं है, फिर भी इन थोड़े-से शब्दों में मैं अवश्य कह दूँगा। शायद ही कभी ऐसा अवसर आता है जब उन लोगों के सम्बन्ध में जो किसी विचार या संकल्प के लिए प्राण बलिदान करते हैं, कुछ अधिक कहा जा सके। यदि वह दूसरे प्रकार के आदर्शवादी होते, जो क्लबघर में सहसा कह उठते हैं—'इस समय सिनेमा चलना या कॉकटेल (मद्यपान) की पार्टी में जाना एक अच्छा विचार है,' और इस विचार को पूरा करने की धुन में यदि वह शीत के आक्रमण से निमोनिया से मर जाँय, तो सम्भवतः इस प्रकार के शहीदों के संबन्ध में हमें बहुत कुछ लिख मारने की सामग्री प्राप्त हो सकती है। किन्तु हम प्रॉग्रेसो, एस्पार्टको तथा जर्मिनल के सम्बन्ध में कह ही क्या सकते हैं ? आपको यह सत्य किस प्रकार हृदयंगम करा दें कि ये तीन निरक्षर मज़दूर, दिन भर पसीना बहाकर काम करने के पश्चात् बचे हुए समय में एक अधिक न्यायशील समाज का स्वप्न देखा करते थे ? ऐसे समाज का मधुर स्वप्न जिसका मूलाधार जीवित यथार्थताएँ हों न कि ऊँची आत्मा तथा उच्च मस्तिष्क सम्बन्धी असत्यताएँ।

एस्पार्टको एक ग्रामीण था जो तेतुएन दि लास विक्टोरियाज़ में फूइनकारल के खण्डहरों के समीप रहता था। ग्रामवासी! 'भई मुझको तो यदि तुम लोग 'जंगली चोर' कहकर पुकारा करो तो ज़्यादा अच्छा हो।', वह कहा करता था। वह पदच्युत महाराज की रियासत में—जो प्रजातन्त्र के आगमन पर 'बन्द' कर दी गई थी—शिकार खेलकर अपनी गुज़र करता था। समीप के आवारा लोगों और चोरों की दृष्टि में उसका मकान एक महल–सा था। उनके लिए वह एक सुख-स्वप्न था। रात को एक बजे वह बिस्तर से उठता, अपनी पत्नी तथा पुत्र का मुख चूमता, अपनी नकुल और थोड़ी-सी डोर लेकर

पारदो की ओर चल पड़ता। वहाँ खरगोश पकड़ता, छः बजे से पहले एक दूकानदार के हाथ बेचकर आठ बजे तक थोड़े शिलिंग लेकर घर लौट आता। इस काम से उसके कुटुम्ब का निर्वाह हो जाने के बाद उसको कुछ बच रहता था जिसको वह संघर्ष-सम्बन्धी कार्य में खर्च करता था। क़ैदियों की सहायक कमेटी के कूपनों पर, सिंडीकेट के चन्दों में, अत्याचार से पीड़ित भाइयों पर, समितियों की संयोजक संस्था के चन्दे में।

उसकी जीवन-सहचरी उसकी प्रशंसक थी। उसके घर में कभी कलह न होता था और न क्रुद्धस्वर ही सुन पड़ता था। घर में शान्ति रखने का उसका नुस्खा था—उसने किसी पर्चे में ये शब्द पढ़े थे—नैतिक अनुशासन। वह स्वयं भी सौजन्यपूर्ण व्यवहार करता था और उसकी दृष्टि में अपने से भिन्न आचार दण्डनीय तथा विकृत था। वे भावुकता के बिना सुखी थे। उसकी पत्नी यदि कभी पूछ बैठती, "क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो?" तो वह उसको अपनी कराल दृष्टि से सहमा देता और कहता :

"क्या तुम अन्धी हो? देखती नहीं कि मैं तुम्हारे साथ रहता हूँ?"

अपने सहवास के प्रारम्भिक महीनों में एस्पार्टको जुआ खेला करता था। प्रति दिन वह रात को खेलने जाता। वह दम्भी नहीं था। जब उसने देखा कि पार्टी का एक आदमी बेईमानी कर रहा है तो उसने भी स्वयं दो-एक हाथ दिखाये। चूँकि वह होशियार भी था वह सब का रुपया जीत लिया करता था। परन्तु इस पेशे में खतरा था। उसकी पत्नी को बहुत कष्ट उठाना पड़ता था। बेचारी चिन्ता से व्याकुल, बिस्तर पर आँखें खोले पड़ी रहती थी। 'एक रात को,' एस्पार्टको ने अपने मित्रों को बताया, 'मैं पूर्ववत् खेल रहा था। मुझे उसका ध्यान आया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह बिस्तर पर बैठी रो रही है। खेल छोड़कर मैं सीधा घर पहुँचा। तब से मैं कभी नहीं खेला। उस आसान काम को त्याग कर मैंने यह काम पकड़ा।'

उसको मज़दूर-परिषद् का सदस्य बनने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा था। चोरी से जानवर पकड़ने के काम को मज़दूरी के बराबर मनवा लेना कोई बच्चों का खेल नहीं था। किन्तु वह प्रथम श्रेणी का लड़ाकू था। खरहों के बिल खोदते समय यदि उसको कोई देखता तो उसको इस बात का यक़ीन हो जाता था कि वह अच्छा मज़दूर था।

तीस साल की उम्र में उसने पढ़ना सीखा था। पूँजीवादी उत्पादन, उत्पादन और खपत की समता तथा पूँजी और श्रम का सहयोग! आवश्यकता से अधिक उत्पादन और कृत्रिम प्रतिबन्ध जैसी जटिल समस्याओं को यथार्थ में वह नहीं समझता था; किन्तु सामाजिक परिवर्तन के सम्बन्ध में उसका जो मत था उसको बूर्ज्वा बुद्धिवाद की गपोड़बाजी से प्रभावित किये जाने का वह कट्टर विरोधी था। यदि उसको अपने जीवन में किसी से घृणा थी तो वह थी अपने दल के साम्यवादियों से। वह उनके काल्पनिक, अव्यावहारिक मत से चिढ़ उठता था और बहुधा कहता था कि आधे घण्टे की बहस में वह उसका खण्डन कर सकता था। निस्सदेह उसका यह कहना सत्य था, लेकिन सबसे अधिक जिस बात पर उसको क्रोध आता था वह यह थी क उसका विरोधी उसी की दलील से निश्शंक रूप से, व्यक्तिगत बड़प्पन के भाव से, एक 'लीडर' की शान के साथ बेजा लाभ उठाये और उसके विचार में कम्यूनिस्टों (साम्यवादियों) का यही तरीक़ा था। जब वह समझता था कि विवाद सीमा से बाहर जाना चाहता है तो एस्पार्टको बोलना बन्द कर देता था, बाँई आँख मीचकर आहिस्ता से कहा करता था—

'बहर हाल कामरेड एस्पार्टको इतना तो कह ही सकता है कि उसकी जेब में एक छोटा-सा उमदा पिस्तौल नाच रहा है।'

उसके पास ६३५ वाला तमंचा था, परन्तु कामरेड एस्पार्टको का

न तो दिमाग़ अस्थिर था और न एकाएक गरम हो उठनेवाला। बिना कारण या क्रोधातिरेक में उसने किसी का बध नहीं किया। वह अपने दल के साम्यवादियों से दीर्घकाल से घृणा करता था; परन्तु जिस दिन उसने एक फ़ेशनेबिल नवयुवक सज्जन को कमीज़ पर पार्टी के चिन्ह हँसिया और हथौड़ा, को रेशम से कढ़ा हुआ देखा उसकी घृणा और भी दृढ़ हो गई थी। वह मध्यश्रेणी के मनुष्य को अपने दल की पोशाक में देखना बरदाश्त नहीं कर सकता था। संकट के समय, जैसे क्रान्तिकारी हड़तालों अथवा मज़दूरी-सम्बन्धी संघर्ष के ज़माने में, वह साहस तथा कुशलता के साथ मशीन इत्यादि को बिगाड़ने का कार्य सम्पादन किया करता था। जब कभी साहसी आदमी की आवश्यकता होती थी, हथेली पर जान रखे हुए एस्पार्टको सबसे आगे मौजूद रहता था। जो कुछ भी काम उसको दिया जाता, बिना टीका-टिप्पणी किये, झूठी ढोंग के बग़ैर और व्यर्थ प्रश्न किये बिना वह उसको कर डालता था। घर पर भी उसका यही हाल था। 'उद्देश्य' (श्रमिक-वर्ग के उत्थान) की सेवा करने का कोई भी अवसर वह खाली न जाने देता था। अवकाश का समय वह या तो पढ़ने में गुज़ारता था या अपने पुत्र को शिक्षा देने में जो स्कूल से अपने दिमाग़ में मूर्खताएँ भरकर लाया करता था। लेकिन अब उसका पुत्र भी एक अच्छा समालोचक बन गया था।

'उन्होंने मुझे बताया,' एक दिन उसने कहा, 'कि सेना देश की रक्षा के निमित्त होती है।'

'और तुमने क्या कहा?' पिता ने पूछा।

'यह कि सेना तथा जातीय विचार दोनों बूर्ज्वाज़ी (पूँजीपति वर्ग) की रक्षा करने और हमको गुलामी की जंजीरों से और भी अधिक जकड़ देने के लिए हैं।'

इस उत्तर पर एस्पार्टको खिलखिला उठा। इस तरह के विनोद

पर वह हँसता-हँसता बेहाल हो जाता था—ऐसे ही अवसरों पर 'उद्देश्य' द्वारा उसको एक क्षण के लिए सच्चा आनन्द प्राप्त हो जाया करता था, लेकिन इधर वह इतना दिल खोलकर नहीं हँसता था। वास्तव में—चीलघर की शिला पर, उसके मुख पर मुसकराहट कहाँ थी? वह स्वयं ही क्या था? ज़रा सा चूना फ़ास्फ़ोरस, पानी और अन्य रासायनिक द्रव्य!

प्रॉम्रेसो गोनज़ालेज़ दूसरे प्रकार का आदमी था। 'पैरानिम्फ़' वाले मामले में हम उसे पहले देख चुके हैं। बहुभाषी, विनोदशील, आशावादी। वह अपने आपको पक्का समझता था, उसको अपनी दलीलों पर इतना विश्वास था कि बूर्ज़्वा वर्ग के प्रति उसका घृणा का भाव कभी-कभी अहंकारपूर्ण तिरस्कार, यहाँ तक कि दया तक में परिवर्त्तित हो जाता था; किन्तु उसके श्रद्धा और संलग्नता के साथ युद्ध करने में यह भाव बाधक नहीं होता था। वह संसार पर दृष्टि डालता और मुसकराता था; चलते-फिरते हुए अथवा सोते हुए, हर एक मनःस्थिति में वह स्वतंत्रता का अनन्य भक्त था। वह ऐसा उत्कट आदर्शवादी था कि उसके इन विचारों का शासन केवल उसके व्यक्तिगत आचरण पर ही न था वरन् पदार्थ तथा रसायन विज्ञान में भी वह उसको प्रेरणा देते थे। सिंडीकेट में भी वह किसी से नहीं उलझता था। वह लोगों की युक्तियों की कुछ परवाह नहीं करता था। वह अपने मानसिक विकास के प्रारम्भ से—जो उसकी यौवनकालीन घृणाओं से चलकर सिंडीकेटों में पुष्ट एवं परिपक्व हुआ था—क्रान्ति की तत्कालीन सफलता के अतिरिक्त कुछ और सोचा ही नहीं करता था। सामाजिक पुनर्निर्माण में उसके विश्वास को अलग रखते हुए—और उसका यह विश्वास कल्पना तथा आचार दोनों ही के द्वारा और भी समुज्वल होता गया था—उसका मनोभाव आगामी युग के मनुष्य जैसा था—वह आगामी युग जिसमें न अन्याय होगा और न पूँजीपति

वर्ग ही ! और यदि सच पूछो तो जिस एकाग्र तथा आक्रामक शत्रुता के भाव से उसके साथी पूँजीपति वर्ग को देखते थे, वह उसमें था ही नहीं। जब कभी किसी मज़दूर-सम्बन्धी झगड़े में वर्तमान सामाजिक विधान का अन्याय प्रत्यक्ष हो उठता था, तो उसको बहुत आश्चर्य होता था। 'बहुत मुमकिन है कि वे लोग अच्छी तरह समझते ही न हों ! ओहो ! काश मुझे मंत्रियों से वार्तालाप करने का एक भी अवसर प्राप्त होता !'

सिंडीकेटों को पुनः खोलने की आज्ञा माँगने या किसी समाचार-पत्र पर प्रतिबन्ध उठा लेने की प्रार्थना करने पुलिस विभाग के अध्यक्ष की सेवा में जो डेपूटेशन जाया करते हैं, एक दो दफ़ा प्रॉग्रेसो को भी उनका मेम्बर चुना गया था। उसने अध्यक्ष को सब बातें सुस्पष्ट करके विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया। इसी कारण फिर कभी डेपूटेशन के साथ उसको नहीं भेजा गया। परन्तु वह कहा करता था, 'हमारे विचार कितने सुन्दर हैं और कितनी आसानी से समझे जा सकते हैं !' परन्तु सरकार जो सामूहिक रूप में, सड़कों पर बध की आज्ञा देती है, इस बात को नहीं जानती कि ऐसे अवसरों पर प्रॉग्रेसो गोनज़ालेज़ उसके घृणित कार्य की सफ़ाई देने की कैसी ज़बरदस्त कोशिश किया करता था—मानो वह सरकार को बचाना चाहता हो। 'स्वयं सरकार के लिए भी यह अच्छा होगा। मंत्री शान्तिपूर्वक रह सकेंगे और हमको भी उनके वध करने की उधेड़-बुन से छुट्टी मिल जायगी।' उसका यह भाव था। उसकी दृष्टि में इक्के-दुक्के आतंककारी कार्यों से कोई लाभ नहीं हो सकता था, परन्तु जब क्रांति की कोई व्यापक एवं महान् योजना संचालित की जायगी तो वह, जैसा कि वह पहले भी कर चुका था, अपने लिए सबसे भयानक और खूनी काम अलग रख लेगा। उसके मस्तिष्क में यह विचार बराबर घूमता रहता था, परन्तु वह उसके लिए कोई आनन्दप्रद विषय नहीं था। लियंसियो से बातचीत करते हुए उसने एक दिन कहा था—'पूँजीपति

वर्ग के विनाश तक मैं एक खूनी आदमी रहूँगा। तत्पश्चात् मेरा जोश प्रचार एवं क्रियात्मक कार्य के रूप में बदल जायगा।' उसमें मानो क्रोध बिलकुल था ही नहीं। और जब हम यह सोचते हैं कि वह दो साल तक काल कोठरी में सड़ता रहा था, उसके पैरों में वहाँ भी जंजीरें डाल दी गई थीं, जिसके कारण वह दो पग से अधिक हिल भी नहीं सकता था, उसने अपने सहयोगियों को बिना प्रमाण के आजीवन कारावास का दण्ड मिलते हुए देखा था, अपनी ही तरह पैरों में ज़ञ्जीरों से जकड़े हुए कालकोठरियों में सड़ते हुए ; इससे भी अधिक—पैर में पड़ी हुई जंञ्जीर दीवार में छाती की बराबर ऊँचाई पर ठुकी हुई जिससे बेचारे क़ैदी को ज़ञ्जीरवाला पैर दोहरा किये हुए रात दिन चौबीसों घण्टे एक ही पैर पर खड़ा रहना पड़ता था और इस घोर कष्ट की दशा में ही सोना होता था—यह सब जानते हुए उसका क्रोध से रिक्त होना एक अत्यन्त विचित्र बात मालूम होती है। उसके हृदय में प्रतिकार का स्थान ही न था। उसको ऐसा प्रतीत होता था कि परिवर्तन की सफलता के दूसरे दिन पराजित पक्ष के साथ दुर्व्यवहार करने की कोई आवश्यकता न रह जायगी, और जब स्वयं उसके हृदय में परिवर्तन हो चुका था तो उसके लिए आज ही वह आगामी दिवस था। इसका स्थूल अर्थ यह है कि प्रॉग्रेसो बूर्ज्वा रूपी करालजन्तु को समझाने-बुझाने का अवसर बिना प्राप्त किए ही उससे सहसा टकरा गया। और इस कराल जन्तु ने, जिससे वह शत्रुता का भाव तो न रखता था परन्तु जिसको वह अपने से पृथक् तथा दूरस्थ समझता था, उसको मार डाला।

जर्मिनल एक कुशल सीसकार था। वह नल लगाने और काँच जड़ने का काम करता था। वह नियमित रूप से काम करता और अपनी माता तथा पुत्री के साथ रहता था। उसकी पत्नी बरसों पहले मर चुकी थी ; परन्तु उसने दूसरा विवाह नहीं किया था। इसका कारण यह

था कि जितनी स्त्रियाँ मिलती थीं वह मध्यश्रेणी के विचार की थीं और वह अपनी माता और पुत्री स्टार से प्रेम करता था। उसका मकान मज़दूरों की एक उत्तरीय बस्ती के उपान्त में स्थित था, जहाँ पुलिसवाले सदा मौजूद रहते थे। उसके द्वार में बाहर से खुलनेवाली एक चटखनी लगी रहती थी। क्या रात और क्या दिन हर समय उसका द्वार आगन्तुकों के लिए खुला रहता था। जर्मिनल चारों और प्रेतों के अस्तित्व में विश्वास ही न रखता था। जब कोई भाई रात के तीन बजे भी, कहीं कुछ ओढ़कर पड़े रहने की खोज में भटकता हुआ इधर आ निकलता था तो यहाँ उसका अभीष्ट पूर्ण हो जाता था और प्रातः-काल विदा होने के पूर्व जर्मिनल उसको अपने साथ अच्छी तरह जल-पान भी कराता था। चाहे कोई परिचित होता अथवा अपरिचित, जर्मि-नल सब के साथ यही व्यवहार करता था। वह कोई प्रश्न नहीं करता था। पहले-पहले उसकी माता अविश्वास के साथ ऐसे अतिथि की सेवा करती परंतु जब वह पुत्र के नेत्रों में सहानुभूति की आभा देखती तो वह आश्वासित हो जाती और नवागन्तुक को 'बेटा' कहकर पुकारती। तत्पश्चात यदि कोई पुलिसमैन शिकार की खोज में वहाँ पहुँचता तो वृद्धा उसका यथोचित सत्कार जली-कटी सुनाकर करती। कोई-कोई पुलिसवाले तो इस बुढ़िया से इतना डरते थे जितना कि वह अपने अध्यक्ष से भी नहीं डरते थे। इसका कारण यह था कि वृद्धा इनको वह फटकार बताती और ऐसे मर्मस्पर्शी कुशब्द सुनाती कि वे बेचारे पानी-पानी हो जाते। उनको घर से निकाल देने के बाद भी बुढ़िया दो-चार बातें द्वार पर जाकर कह ही देती थी और कभी-कभी उन पर ईंट भी फेंक दिया करती थी। इस बस्ती में सब लोग पुलिस के आदमी को हमेशा 'कुत्ता' कहा करते थे। पुलिसवाले यह बात अच्छी तरह जानते थे। जब कभी पड़ोसी बुढ़िया को बकते-झकते देखते तो वह भी उसके स्वर में स्वर मिला दिया करते थे। अन्य स्त्रियाँ खिड़कियों तथा

छज्जों पर आकर खड़ी हो जातीं। कोई 'भौं-भौं' करता तो कोई होंट बाकर कह उठता—"गली का कुत्ता!' अब चची आइज़ाबेला का पारा और भी चढ़ जाता और कमर पर दोनों हाथ रखकर चिल्लाती—

'अरे ओ पाजी, तू नरक में जाय।'

जर्मिनल, चची आईज़ाबेला और स्टार अपने लाल ईंट के मकान में रहते थे। इनके अतिरिक्त एक मुर्ग़ा था और एक बिल्ली। चची की बिल्ली का नाम 'मकनों' था। मुर्ग़ा स्टार का था परन्तु उसका नामकरण संस्कार नहीं हुआ था। बिल्ली और मुर्गे में बहुधा झड़प हो जाया करती थी। मुर्ग़ा जब ऊब उठता था तो बिल्ली के साथ खेलना चाहता था, लेकिन बिल्ली आरामतलब और लद्धड़ थी। वह गंभीर स्वभाव की थी और ज़रा-सी बात पर पंजे निकाल बैठती थी। ऐसी दशा में घर के लोगों को हस्तक्षेप करना ही पड़ता था। चची बिल्ली को उठा लेती थी और स्टार मुर्गे को। वृद्धा जब मुर्ग़े को गालियाँ देती तो स्टार मुर्ग़े की तरफ़दारी करती हुई कहती :

'वह तो ज़रा खेलना चाहता था।'

वह मुर्ग़े के दो-चार चपत लगा देती थी। हर एक चपत पर मुर्ग़ा सिर नीचा कर लेता था और उसके हाथ पर चोंच मारता था। वह बड़ा शैतान था। मुहल्ले के बच्चे और कुत्ते उससे भय खाते थे। उसकी आदत थी कि पंख नीचे करके वह बच्चों की नंगी टाँगों और कुत्तों की थूथड़ी पर झपटा करता था। केवल भेड़िये की नस्ल के बड़े कुत्तों से वह नहीं बोलता था। वह मकान से मिले हुए छोटे-से घर में सोता था। घर में कोई मुर्ग़ी नहीं थी, किन्तु पड़ोस की सभी मुर्ग़ियाँ उसकी थीं। वे मुर्ग़ियाँ मौक़ा देखकर स्वयं उसके पास चली आया करती थीं। मुर्ग़े को उनके पाने के लिए दूसरे मुर्ग़ों से लड़ना भी नहीं पड़ता था।

स्टार, जर्मिनल और आईज़ाबेला, लाल मकान, बिल्ली और मुर्ग़ा।

इस संगति से जर्मिनल छीन लिया गया था। गोलियों से उसका सीना चाक हो गया था। अब वह न जाने कहाँ होगा ? पड़ोसी घर में आएँगे और आईज़ाबेला उनको कुशब्द कहेगी। लाश का मामला था और फिर लाश भी होगी उसके इकलोते पुत्र की। वह निराशा और क्षोभ की सीमा पर होगी। लियन्सिच्को उनके घर जा सकता था, परंतु इससे लाभ क्या हो सकता था ? प्रत्येक मोर्चे में कामरेड काम आएँगे। उनके कुटुम्बियों के साथ शोक-प्रदर्शन करने का नतीजा ? लियन्सिच्को को जर्मिनल की मृत्यु से अधिक सदमा नहीं पहुँचा था, बल्कि जो बात उसके दिल में चुभ रही थी वह थी मृत्यु के समय उसकी मुखाकृति और उसके अंतिम शब्द !

वह लोग थिएटर हाल से भागकर बाहर आ रहे थे। पुलिस ने गोली चलाना शुरू कर दिया था। वे लोग जर्मिनल के शरीर पर गिरते गिरते बचे थे। उसके शरीर से रुधिर बह रहा था। स्टार उसके पास पहुँचना चाहती थी लेकिन भीड़ ने उसमें बाधा दी। उसके पैर पृथ्वी से ऊपर उठ गये। जो लोग जर्मिनल को उठाने का प्रयत्न कर रहे थे उनसे उसने कहा—'मुझे यूँही पड़ा रहने दो। मेरा तो अन्त समझो। मेरी पुत्री को खोज लाओ !' जब उसने देखा कि ल्यूकस सामर उसके निकट झुका हुआ है और उसको उठाने के लिए औरों को आवाज़ दे रहा है तब वह पसर कर लेट गया और लोगों को धक्के से हटाकर फिर चिल्लाया—'मेरी नन्ही पुत्री ! मेरी नन्ही बच्ची !' ल्यूकस समझा कि शायद वह आहत हो गई है और उसको खोजने लगा। अभी फायरिंग हो रहा था। अतः स्टार दीख पड़ी और ल्यूकस उसको गोदी में उठाकर ले चला। जर्मिनल उनको देखकर मुसकराया। उसने बाँह पर सिर रख दिया और कुछ ही मिनटों में उसका प्राण पखेरू उड़ गया।

जर्मिनल की मृत्यु की अपेक्षा लियन्सिच्को विलाकम्पा का ध्यान

स्टार की ओर अधिक था। वह उसके संबंध में ये सब बातें सोच रहा था। वह जानता था कि जब लड़ाई होती है तो मौतें भी होती ही हैं। चीलघर जाकर जर्मिनल की लाश को देखने की इच्छा प्रबल हो उठी। चीलघर की शिला पर पड़े हुए शव की मुखाकृति से यदि कुछ आभास मिल सके तो वह यह अनुमान करना चाहता था कि स्टार के भविष्य के संबंध में जर्मिनल की अंतिम दृष्टि का क्या मतलब था। चूँकि लोगों में यह अफ़वाह गर्म थी कि गैस और विद्युत विभाग के दो कामरेड ला-पता हैं, वह यह भी जानना चाहता था आया कोई और मृत्यु हुई है या नहीं। मज़दूरों की बड़ी-बड़ी टुकड़ियाँ सरगर्मी से इधर-उधर भागती और चिल्लाती हुई, सिंडीकेटों के दफ्तरों में आ-जा रही थीं। इस दृश्य के और कुछ शब्दों के आधार पर जो उसने अपने कानों से सुने थे, उसको यह बात निश्चय हो गई कि आम हड़ताल की घोषणा होने जा रही है। लियन्सिच्को उठ खड़ा हुआ और उसी ओर चल पड़ा। उसने अपने सहयोगियों को सलाम किया, लॉबी की दीवारों पर लगे हुए कुछ नोटिसों को पढ़ा और नीचे उतर आया। प्रकाश मन्द, निस्तेज और धूसर रंग का था। वह एक ट्राम पर जा बैठा। प्रॉग्रेसो, एस्पार्टिको, जर्मिनल ! एक सफ़ेद दाढ़ीवाले बूढ़े ने छड़ी फटका कर कंडक्टर को वादविवाद के चक्कर में घसीटना चाहा, परन्तु कंडक्टर अपने मत पर स्थिर था जिससे बूढ़ा कुछ खीज-सा उठा। ट्राम चढ़ाई पर जा रही थी; कई मोड़ों को तय करने के पश्चात् एक चौक में घंटी बजाकर ठहर गई। मकानों की छतों के ऊपर, क्षितिज में एक सुनहरा प्रकाश फैल गया। लियन्सिच्को चीलघर की ओर चला। जब वह सिविल अस्पताल की दीवार के पास पहुँचा तो संध्या काल के अर्ध विकसित अन्धकार में लैम्पों का प्रकाश चमकने लगा था। उपांत निर्जीव तथा तमोवृत था। पर उस बड़ी इमारत को यही दर्शनीय बना रही थी जिसमें मेनगेट नाम की सराय, मिकी की बार तथा दो

मिठाई की दुकानें थीं। उसके एक कोने पर क़हवाख़ाना और उसके बराबर ही टैक्सियों का अड्डा था। ऐसा प्रतीत होता था, मानो सारा नगर उमड़कर यहीं चला आया हो। एक घंटे भर में लोग थिएटर और सिनेमा से उपांतों की ओर लौटेंगे। लियनन्सिच्को यह सब देखकर मुसकराया। 'मूर्खो, तुम्हारे लिए कल बिलकुल दूसरे ही प्रकार का मनोरंजन होगा।' जब कि एस्पार्टको, प्रॉम्प्रेसो और जर्मिनल एक अज्ञात् महाशून्य की यात्रा कर रहे थे ये लोग अपनी रँगरलियों में मस्त थे। नागरिक जीवन की इस जघन्य उदासीनता के प्रति उसका हृदय घृणा से भरा जा रहा था। 'मूर्खो ! कल तुम क्या कहोगे ? कल आमहड़ताल इनका सिर कुचल डालेगी। वह मेमियाएँगे—'आज समाचार-पत्रों, ट्रामों, रोटी तथा मनोरंजनों का अभाव क्यों है ? क्या हुआ ?' प्रत्येक नागरिक अपना-अपना दुखड़ा रोयेगा। 'सिनेमा जाना क्या पाप है ? हम मनमानी शराब क्यों न पियें ? बस इसीलिए कि हम सप्ताह में एक दिन अपनी प्रेमिका के साथ मौज करते हैं, हमको जीवन की आवश्यक वस्तुओं से वंचित रखना कौन-सा न्याय है ? हमने किसी का कुछ बिगाड़ा तो है नहीं। हमने तो कोई अपराध किया नहीं !' ऊपरवाले वार्ड के ज़ीने पर चढ़ता हुआ लियन्सिच्को मुसकरा उठा। 'मूर्खो !' उसने गहरी साँस लेकर पीछे देखा। एक छोटे से अवसन्न कायर में एक उत्तुंग वज्र प्रस्तरों के मध्य में से उठने का प्रयत्न कर रहा था। दीवार उसके नीचे थी। नगर के प्रकाशित भाग गुलाबी घेरों से आवृत थे। 'मूर्ख !' रविवारवाली गहरी लाल टाई लगाये हुए पंसारी के चाकर लियन्सिच्को विलाकम्गा ने एक दीर्घ निश्वास छोड़ते हुए कहा—'क्या तुम नहीं जानते कि आज प्रातःकाल तुमने हमारे तीन भाइयों के प्राण लिये हैं ? व्यापारी महाशय, आपने; पादरी साहब आपने ; जनाबे आली, जज साहब, आपने ; और ओ, वेशवधू देवीजी, आपने ! परन्तु, आप सबको इसकी कीमत अदा करनी पड़ेगी।

कल आप लोगों को इसका मूल्य देना होगा !' अब उसको एक लॉबी पार करनी थी और एक अंतरीय मार्ग जिसमें कई द्वार और ज़ीने थे। कई चौकीदारों से चख-चख करने और पुलिसवालों को यह विश्वास दिला देने के पश्चात कि वह मृतकों का एक संबंधी था, वह बड़ी मुश्किल से विलाक की दूसरी ओर पहुँचा। अभी उसको पहले-जैसे एक ज़ीने से उतरना बाक़ी था। फिर एक छोटा-सा सहन पड़ता था। चीलघर उसके सामनेवाले ब्लाक के तहख़ाने में था। सहन का फ़र्श म्लान शिलाओं का था। दीवारों की काली वाह्यरेखा तथा स्लेटदार छत के ऊपर, सुनील प्रकाशमय आकाश था। चिमनियों के ऊपर दो तारे चमक रहे थे। दीवार के सहारे सामर और स्टार गार्सिया खड़े थे। एक क्षण के लिए लियन्सिच्को घबरा-सा उठा। शहीद की एकमात्र संतान स्टार शोक से विह्वल होगी। समवेदना प्रकट करने के लिए उसको कुछ बूर्ज्वा वाक्यों का आश्रय लेना पड़ेगा। कठिनता से प्राप्त होनेवाले वाक्य जिनका अर्थ कुछ भी नहीं। परंतु उसने कहा कुछ भी नहीं, क्योंकि स्टार पूर्ववत् स्वस्थ थी, मानो कुछ हुआ ही नहीं। जब वह उनके निकट पहुँचा तो सामर ने वात्सल्य भाव से स्टार को अंक में भरकर हृदय से लगा लिया। सामर का यह कार्य लियन्सिच्को को अर्थपूर्ण प्रतीत हुआ और वह एक मिनट तक मौन खड़ा रहा। ल्यूकस सामर ने कटाक्ष द्वारा लियन्सिच्को से एक प्रश्न किया जिसका उसको उसी प्रकार उत्तर देना था किन्तु उसने स्टार को सम्बोधित करते हुए कहा 'कल आम हड़ताल करने का प्रबन्ध हो रहा है।'

स्टार का मुख चमक उठा। उसके पिता की मृत्यु के प्रतिकार स्वरूप घातकों के विरुद्ध कुछ होना अवश्य चाहिये। ल्यूकस ने भुजा हटाकर, भवें तानकर कहा—

'आम हड़ताल ?'

लियन्सिच्को खिड़की के पार चीलघर के अन्दर देखने लगा। स्टार ने एक अद्भुत उदासीनता के भाव से कहा—'पोस्टमार्टम हो चुका।'

पत्रकार ने फिर कहा—'आम हड़ताल ?'

इस समय आम हड़ताल करने का परिणाम सभी कुछ हो सकता था। कितनी ही घटनाएँ द्रुतगति से, अभी—अपने समय से पहले ही घटित हो जाएँगी। समस्त देश में जो राज-विरोध की शक्तियाँ छिपी थीं वे सब उभर आएँगी। सम्भवतः ग़दर हो जाय। कौन जाने क्या न हो ; किन्तु यह भी सम्भव है कि कटु विफलता ही इसका परिणाम हो। वह खिड़की के पास जाकर चीलघर के अन्दर एकटक देखने लगा। बराबर-बराबर तीन शिलाओं पर प्राँग्रेसो, एस्पार्टको और जर्मिनल के शव चादरों से ढके पड़े थे। दो नौकर बालटियाँ लेकर अन्दर-बाहर आ-जा रहे थे। लियन्सिच्को सोचने लगा—'क्या यह सम्भव है कि हर एक चीज़ का अन्त इसी प्रकार होता है—कुछ भी न रह जाना !' लेकिन वह कुछ बोला नहीं क्योंकि उसे ख्याल था कि ल्यूकस कोई अधिक गहरी बात कह सकेगा। और वास्तव में हुआ भी यही। ल्यूकस ने प्रायः तत्काल ही कहा—

'मृत्यु है ही नहीं—जर्मिनल, एस्पार्टको और प्रॉग्रेसो अब भी हमारे विचारों में, हमारी स्मृतियों में क्रान्ति के पीछे-पीछे चल रहे हैं।'

'परन्तु क्या मृत्यु वास्तविक नहीं है ?' लियन्सिच्को ने ऐतराज़ किया।

विषम्न पदार्थ की तेज़ गन्ध को दूर करने के विचार से पत्रकार ने एक सिगरेट बनाया। वह बोला—'मृत्यु नहीं है। यदि हमारे ये कामरेड बोल सकते तो हम उनको आम हड़ताल के लाभों पर बहस करते हुए सुन सकते। उनको अपनी मृत्यु का ध्यान तक भी न होता—यथार्थ वस्तुओं के मध्य में मृत्यु का कोई महत्व ही नहीं है। मृत्यु जो हमको बाहर से आकर ग्रसित करती है—एक गोली, दो चीखें, रुधिर

और चेतना का लोप—ये सब हमारी इच्छा-शक्ति के बाहर की छोटी-छोटी बातें हैं। वही मौत सचमुच अत्यन्त गर्हित और भयानक है जो हमारे भीतर से हमारा विनाश करती है—असफलता !'

स्टार की आँखें चमक उठीं।

'यह सच है। मेरे पिता कभी असफल नहीं हो सकते थे। वह मर भी नहीं सकते। पिताजी सचमुच मरे भी नहीं हैं।'

उसके मुख पर मुसकराहट फूट पड़ी। फिर सहसा उसने तिरस्कार के भाव से कहा—'आओ यहाँ से चलें। बदबू आ रही है।'

तीनों सहन में होकर वहाँ से चले आये।

डाक्टरों ने शव-परीक्षा समाप्त की। उन्होंने प्रॉग्रेसो और एस्पार्टको की जिनके सिरों में चोटें आई थीं, खोपड़ियाँ चीरी थीं। उन्हें मिला वहाँ केवल लाल रुधिर और नीली नसें। उनके भेजों में ऐसा कोई विष नहीं पाया गया जो प्रेमोन्मादियों, आत्मघातकों या अन्य खराब दिमाग़वाले मनुष्यों के भेजों में बहुधा पाया जाता है। उनके मस्तिष्क स्वस्थ थे। उनमें केवल एक असाधारण गुण था—भविष्य का मद। इनके सम्बन्ध में सूक्ष्मदर्शी डाक्टर एक बड़ी बात नोट कर सकता था, क्योंकि आध्यात्मिक आशंकाओं तथा आशाओं से मुक्त मस्तिष्कों के निरीक्षण के बहुत ही कम अवसर प्राप्त होते हैं। उनकी सारी इन्द्रियाँ पदार्थवादी विश्वास, साहस और उदारता में डूबी हुई थीं। महत्वाकांक्षा ? भविष्य की व्यक्तिगत चिन्ता ! अधीरता ? इनका वहाँ कहीं पता भी न था। पदार्थवादी विश्वास स्वयं परिपूर्ण है और किसी अन्य आधार की अपेक्षा नहीं करता। अपने ही विश्वास से—स्वयं अपने में पूरा विश्वास रहने ही से, साहस और उदारता का उदय होता है। और जब स्वयं अपने विश्वास में मनुष्य की पूरी अचल श्रद्धा हो गई तो उसके लिए सांसारिक महत्वाकांक्षा और आशा का, स्मृति और माया का, उस अपदार्थ मानसिक छाया का जो मृत्यु को

भयानक और अन्धकारमय बनाती है, और जो कमज़ोर मस्तिष्कवालों के प्राणों को सदा उद्विग्न करती रहती है—इन सबका उसके लिए क्या मूल्य रह जाता है ? विश्वास ! आध्यात्मिक अथवा बुद्धि-विषयक नहीं—किन्तु रचनात्मक, इन्द्रियमय विश्वास ! वृक्ष और चट्टानवाला विश्वास ।

वे चुपचाप चले जा रहे थे । सहसा स्टार गार्सिया ने लियन्सिच्को की ओर मुड़कर कहा—

'किन्तु, फिर भी सब कुछ होते हुए भी मेरे पिता मर गये हैं ।'

'हाँ, उन्होंने हमारे पक्ष के लिए प्राण दिये हैं ।' विलाकम्पा ने उत्तर में कहा ।

स्टार ने पत्रकार से भर्त्सना के स्वर में कहा—

'तुम मुझे धोका दे रहे थे । पिताजी तो मर गये ।'

'मृत्यु का अस्तित्व ही नहीं है । मैंने तुम्हें धोका नहीं दिया ।'

विलाकम्पा ने साग्रह बीच में पड़कर कहा—

'स्टार, कह दो, अवश्य दिया है ।'

'तुम क्या जानते हो ? तुम्हें मृत्यु के सम्बन्ध में कितना ज्ञान है ?' सामर ने पूछा ।

पंसारी के कुली ने इसका गर्म उत्तर दिया । स्टार ने एक के बाद दूसरे को ग़ौर से देखा ।

सामर फिर बोला—'मृत्यु वास्तव में है ही नहीं, प्रिये । वह बस बूर्ज्वावर्ग के लिये है ।'

'तब फिर यह क्या है ? यह सब क्या है ?' विलाकम्पा ने क्रोध के साथ चीलघर को इंगित करते हुए पूछा ।

स्टार असमंजस में पड़ गई । वह अपना मुट्ठी बँधा हाथ मुख पर फेरने लगी । उसने अपनी ठोड़ी खुजाई । कभी किसी उँगली को दाँत से काटा । फिर उसने संदिग्ध भाव से कहा—

'परन्तु सामर, पिता तो मर गये। मुझे कुछ और बताना व्यर्थ है।'

सामर ने स्पष्टीकरण बन्द कर दिया। उसने देखा स्टार किसी प्रकार अपने आँसुओं को रोके रखने का प्रयत्न कर रही थी। उसने बिगड़कर कहा—

'अच्छा, बस ! अब यहाँ से चला जाय।'

युवती ने बिलाकम्पा की बाँह पकड़ ली।

'नहीं। मैं यहाँ ठहरूँगी।'

वह कँप-कँपाई और रोने लगी। ल्यूकस ने उसकी दूसरी भुजा पकड़ ली। 'घर चलो। तुम यहाँ क्या करोगी? तुम्हारा पिता मर गया। तुम्हारी बात ठीक है। अब कभी तुम उसकी बोली नहीं सुनोगी। न वह अब कभी अपने बिस्तर पर सोने जायगा, न कभी तुम्हारे लिए रविवार को मिठाई खरीदेगा और न कभी तुम्हें चुम्बन करेगा।' इस पर स्टार सिसक-सिसककर अश्रुधारा बहाने लगी। 'उसका सीना गोलियों से छलनी हो गया है और उसकी खोपड़ी चीर डाली गई है। तुम दुनिया में सबसे अधिक अभागी स्त्री हो। रोओ ! रोओ !' ऐसा प्रतीत होता था मानो स्टार कभी चुप होने का नाम ही न लेगी। और ल्यूकास भी कहता गया—'परन्तु तुम्हारे आँसू उसको दोबारा मारे डाल रहे हैं। यदि तुम इस प्रकार आपे से बाहर हो जाओगी तो तुम, जो कुछ उसका अंश तुम्हारे अंदर है, उसको ज़रूर खो दोगी। रोओ ! रोओ ! खूब रोओ बूर्ज़्वा की तरह !'

स्टार ने बड़ी कठिनता से अपने आपको सँभाला। वह कुछ कहना चाहती थी। उसकी दृष्टि से ऐसा प्रतीत होता था मानो वह कहीं बड़ी दूर देख रही थी। एक शिथिल, निर्जीव पुतली से वह एक क्रोधाविष्ट असभ्य स्त्री में परिणत हो गई। उसके नेत्र द्वेष से लाल हो उठे।

'आओ, अन्दर चलें।'

इतना कहकर वह चीलघर में गई। एक शिशा के पास पहुँचकर उसने चादर उठाई। दोनों पुरुष उसके पीछे भौचक्के-से चले आये। छत में लगे हुए बिजली के धुमैले बल्ब की ओर एकटक देखकर उसने सूफ़ियाना अन्दाज में कहा—'पिताजी! पिताजी! आप मरे नहीं हैं। कदापि नहीं।' पत्रकार ने स्वर मिलाया—निकट भविष्य के न्याय में विश्राम करो!

स्टार ने दोहराया—'कल के न्याय में विश्राम करो।' वह शव का चुम्बन करने जा ही रही थी कि सामर ने नम्रता के साथ उसको रोक लिया। उसको आवश्यकता थी किसी के सजीव प्रेम-पूर्ण हृदय से चिपटकर अपनी निराशा को उसमें डुबो देने की। वह पत्रकार से चिपक गई और उसने लियन्सिकी के सीने को आँसुओं से तर कर दिया। वह इसी तरह चिपटे-चिपटे बाहर आये। द्वार पर आकर वह फिर मुड़ी, और सिसकी भरकर फिर बोली—'निकट भविष्य के न्याय में विश्राम करो।'

उसको शब्दों की चाहना थी, अधिक शब्दों की। उसकी आँखों ने जो कुछ देखा था फिर देखा; उसके कानों ने चीखों को, प्रातः काल की आवाज़ों और गोलियों के शब्द को फिर दोहराया; उसका दिल असाधारण वेग से धक्-धक् कर रहा था; वह बड़ी कठिनता से, रुक-रुककर साँस ले रही थी और उसकी मुट्ठियाँ कसकर बँधी हुई थीं। उसकी समस्त सत्ता एक तीव्र विरोध थी। उसको शब्दों की आवश्यकता थी। इस अभाव की पूर्ति ल्यूकस ने कर दी—

'हम तुम्हारा बदला लेंगे और बूर्ज्वावर्ग तुम्हारे न्याय को जानेगा।' उसने इन शब्दों को दोहराया और बीच में अपने आवेशपूर्ण नाक के स्वर को भी मिलाती गई!

'हम बूर्ज्वावर्ग के ईश्वर का भी सफ़ाया कर देंगे।'

और सिविल गार्ड के नृशंस और दण्डनीय परमात्मा का भी!

और पाप के संचारक ख्रीष्ट का !

ईश्वर, मृत्यु, ख्रीष्ट, पाप उसके मुख से इस प्रकार निकल रहे थे जैसे क्रोध के पुष्प—तत्काल जला देनेवाले संक्रामक रोग के कीटाणु ! ल्यूकस की आँखें द्वेषाग्नि से जल रही थीं।

वह शान्ति खो बैठा था, किन्तु उसने अपने दिल पर क़ाबू किया और उनको बाहर ले आया। सड़क पर आते ही उसने टैक्सी बुलाई और तीनों उसमें बैठकर खामोशी से चल पड़े। स्टार ने सिसकियाँ रोक लीं, लेकिन फिर भी वह कभी-कभी ठंडी साँसें भर रही थी। जब टैक्सी उसके मकान के समीप पहुँचनेवाली थी तो उसने ड्राइवर से रोकने को कहा। उसके साथियों की समझ में यह बात नहीं आई। स्पष्टीकरण के भाव से स्टार ने कहा—'एक मिनट के लिए वहाँ रोक देना,' उसने एक गली की ओर संकेत किया—'मुझे मुर्गों के लिए दाना मोल लेना है। चूँकि आम हड़ताल होनेवाली है, मुझे उसके लिए कुछ दाना रख छोड़ना चाहिये।'

कामरेड स्टार संसार में अकेली रह गई।

मैं घर पर हूँ। मेरी दादी पिता के शव के पास बैठ कर प्रार्थना करने के लिए अस्पताल गई हुई है। वह उसको अन्दर नहीं जाने देंगे, परन्तु इससे क्या? उसके लिए अस्पताल की दीवारें भर देख लेना काफ़ी होगा। अन्यथा वह यह विश्वास कर लेगी कि उसकी दुआओं का फल किसी सूदखोर या किसी सिविल गार्ड को प्राप्त हो जायगा। पड़ोसियों ने मुझसे आकर कहा है कि मैं उनमें से किसी के घर जाकर सो रहूँ—मानो मेरे लिए यहाँ सोने की जगह नहीं है। परंतु मैं यहीं रह गई, क्योंकि आज से मैं अपना एकाकी जीवन आरंभ कर देना चाहती हूँ। पिताजी को मुझ से मृत्यु ने छीन लिया। मैं जानती हूँ कि मैं अब संसार में अकेली हूँ। पड़ोसियों ने कहा कि मैं अकेली डरूँगी। डरती तो मैं अवश्य अगर मेरे पास यह मुर्ग़ा न होता। वह

कैसा आँखें खोले कमरे का चक्कर लगा रहा है। वह चौकन्ना है; वह जानता है कि कोई घटना घटित हो गई है, यद्यपि मैंने उससे अभी तक कुछ भी नहीं कहा है। 'आओ, यहाँ आकर बात सुनो। क्या तुम नहीं जानते कि उन्होंने पिताजी का वध कर डाला है? तुम्हें इससे क्या? तुम्हें दाना देने के लिए मैं तो कहीं नहीं चली गई, ठीक है न? अब न मेरी माँ रही और न बाप। मेरी अवस्था अठारह वर्ष की है और पड़ोसी मेरे लिए दुःखित हैं। मैं अब अकेली हूँ। दादी किसी गिनती ही में नहीं। वह क़ब्र में पाँव लटकाये बैठी है और मैं जीवन में पदार्पण कर रही हूँ। उसका मुख झुर्रियों से भरा हुआ है, वह बुड्ढी है और मैं युवती और सुन्दरी हूँ; इसीलिए मुझपर दिन-रात बरसती रहती है। मैं बहुत रोई हूँ। कदाचित् अभी और रोऊँगी, और तुम मस्त हो। परन्तु नहीं! मेरे जीवन में रोने का यही अन्तिम अवसर होगा। मैं अकेली हूँ और जो लड़की संसार में अकेली हो उसको कभी न रोना चाहिये। और फिर एक अराजकवादी लड़की को तो किसी तरह भी रोना नहीं सुहाता! मैं भी पिताजी की और तुम्हारी तरह राज-सत्ता के विरुद्ध हूँ। मैं लैम्पों के कारखाने में काम करती हूँ। फ़ोरमैन के क़रीब-क़रीब बराबर ही मुझे आठ शिलिंग हफ़्ता मज़दूरी मिलती है। इसी में मैकनो का और तुम्हारा, अपना और दादी का पेट भरना है। तुम दाना खाते हो, बिल्ली कलेजी, और दादी और मैं आलू। कभी-कभी दाना और कलेजी भी आलू के बराबर महँगे हो जाते हैं; परन्तु तुम्हारे पेट छोटे हैं, उनको पहले भरा जायगा। चूँकि अब गड़बड़ के दिन आ रहे हैं, तुम्हारे लिए यह आनन्द मनाने की बात है। तुम दोनों निश्चिन्तता-पूर्वक कुकड़ूँ-कूँ और म्या-म्या करते हुए सारे मुहल्ले में गश्त लगाया करना।' पर नीचे करके मुर्गा तिरछा होकर मुझ पर झपटा। उसको चुप करने के लिए मैंने उसके एक ठोकर दी। कुकड़ूँ-कूँ करके वह मेरे पास आया और कूदकर मेरे घुटनों पर

बैठ गया। मैंने उसको पकड़ लिया। फिर बातचीत होने लगी। 'प्रिय, सुनो। मैं तुमको एक महत्वपूर्ण बात बतलाने जा रही हूँ। ज़रा ठहरो। देख लेने दो कि हम वास्तव में अकेले हैं या नहीं। सब चट-खनियाँ लगी हुई हैं या नहीं। यह सब देखकर मैं अभी तुम्हारे पास लौट आती हूँ। पिताजी मर गये क्योंकि उनके जीवन की प्रेरणा—उनका मिशन ही मरना था और सिविल गार्ड का मिशन उनका वध करना। मैं ऐसी कायर नहीं हूँ कि निराशा से अपने बाल नोच डालूँ। पिताजी से भी मैं इतनी ही मुहब्बत करती थी जैसी कि तुमसे करती हूँ। वह इसीलिए मरे हैं कि उन्होंने अपने जीवन भर वही किया जो कि उन्हें करना चाहिये था। और उनकी मृत्यु उसी प्रकार हुई जैसी कि एक क्रान्तिकारी की होनी चाहिये, परन्तु इससे हम किसी नई बात पर नहीं पहुँचते, ऐ मेरे मुर्गे! आज तक मैं जर्मिनल की पुत्री थी। अब मैं विभिन्न कर्तव्योंवाली सिंडीकेट की स्टार गार्सिया हूँ। समझे तुम! लोग कहते हैं कि मेरा जन्म सन् १९१६ में हुआ था, परन्तु मुझे इस बात की याद नहीं। मैं सोचती हूँ कि मेरा जन्म आज हुआ है। शनिवार को रुपया मिलने पर मैं अपना बड़े मोज़ों का पहला जोड़ा खरीदूँगी और अपने 'कमरबन्द' पर 'देश और स्वतंत्रता' और अपना नाम काढ़ूँगी। क्या तुम्हें इन बातों में कुछ मज़ा नहीं आता? पिताजी कहा करते थे कि 'यह मुर्गा मुझसे बड़ा अराजकवादी है' और तुम्हारे प्रशंसक थे। इसलिए मेरी दृष्टि में भी तुम्हारी इज्जत है, परन्तु यह नहीं हो सकता कि मैं तुम्हें सो जाने दूँ। देखो मैं अकेली हूँ। मैं, मैं ही हूँ। मैं आज जन्मी हूँ और मुझे उस समाज में जिसको पिताजी दण्ड-नीय समझते थे, एक सुन्दर जीवन व्यतीत करना है। मेरी राय में समाज निपट मूर्ख और सीधा-सादा है। पड़ोसी कह रहे हैं कि वे मेरे लिए मातमी कपड़े बनवाएँगे, परन्तु जीवन में पहली बार बड़े मोज़ों को पहनने के शुभ अवसर पर उनके साथ मातमी कपड़े पहनना कितनी

बड़ी मूर्खता होगी ! पड़ोसी मुझसे यह भी कहते हैं कि इस उम्र में अकेली रह जाना बड़ा खतरनाक है और यह कि मेरे ग़लत रास्ते पर चले जाने की बड़ी सम्भावना है। परन्तु क्रेटा ने यह बात कही है, वह एक सिपाही की विधवा स्त्री है और यही समझती है कि जो उनके यहाँ होता है वही हम लोगों में भी होना सम्भव है। मैंने उससे प्रश्न किया—'ग़लत रास्ते पर जाने से तुम्हारा क्या अभिप्राय है ?' और यह कि उसने मुझमें ऐसी कौन-सी बात देखी जिससे उसने यह बात कही, तो वह एक रहस्यपूर्ण भाव से मुसकरा दी और उसने मेरे मुख का चुम्बन किया। इन लोगों के जीवन में ऐसी कौन-सी घटनाएँ घटित हो चुकी हैं जिनके कारण ये लोग अन्त में लोगों को ऐसे रहस्यात्मक भाव से चुम्बन करने को विवश-से हो उठते हैं ? इसीलिए कि उनमें कुछ ग़लती अवश्य रही है। जहाँ तक स्वयं इस बात का सम्बन्ध है, मुझे इस विषय पर सोचने का समय ही नहीं मिला है। मैं खूब समझती हूँ कि मैं पुरुषों को पसन्द करती हूँ। उनमें से कुछ को, परन्तु उनके लिए हमारे दल का सदस्य होना अनिवार्य है, क्योंकि अन्य सब पुरुष मुझे पादरी-जैसे प्रतीत होते हैं। क्रान्ति की सफलता से पूर्व मैं बच्चे नहीं चाहती। इसके अतिरिक्त, जब कभी मैं किसी सुन्दर युवक को देखती हूँ तो सोचा करती हूँ—'क्या मैं इसके मुख का चुम्बन लूँगी ?' परन्तु चुम्बन के विचार ही से मेरा मन सदा घृणा करता है।

मुर्ग़ा मेरी गोदी में से नीचे कूद गया। उसने बाँग दी, पंख नीचे किये और उचककर खड़ा हो गया। कुकड़ूँकूँ करते हुए ही वह थोड़ी दूर दौड़ा, फिर पीछे हट गया। फिर मेरे ऊपर झपटा, मेरी टाँगों पर चोंचें मारीं। उसका इतना कड़वा मिज़ाज मैंने पहले कभी नहीं देखा था। मैं उठकर उसके पीछे दौड़ी, परंतु वह मेरे सामने मुँह करके झपटा। मैं हारकर एक कोने में जा पहुँची। तब मैंने दीवार पर से एक

डंडा उठाया और उसको धमकाया। तब वह कहीं माना, गुस्सा-सा पीकर हट गया। डंडा पास रखकर मैं बैठ गई। वह फिर बोला। अब वह बाहर जाना चाहता था। मैंने अपनी गोदी में थोड़ा दाना रखा। वह मेरे घुटनों पर आकर बैठ गया, दाना चुगने लगा और संतुष्ट हो गया। मैंने उसके पर दबा लिये, नाज का एक दाना अपने कान में रखा जिसको उसने चुग लिया। इससे मुझे बड़ी गुदगुदी मालूम होती है। अच्छा, वह पहली बात हमने कहाँ छोड़ी थी? 'केवल ऐसे दो पुरुष हैं जिनको चुम्बन करने का खयाल मैं ग्लानि के बिना कर सकती हूँ, और इसके बाद मैं कुल्ली करूँगी।' मुर्ग़ा कुकड़ूँ-कूँ करता और मुझे धमकाता है। मैं उसके दो एक चपतें लगाने जा रही हूँ। मैं तुम्हें उनके नाम नहीं बतलाऊँगी, मूरखराम मुर्ग़े! किसी को नहीं, और तुम्हें भी नहीं। अगर मैं यह बात बता दूँगी तो यह मामला महत्वपूर्ण हो उठेगा जिसका वास्तव में कुछ भी महत्व नहीं है। और बिल्ली! उसको तो मैं बिलकुल भूल ही गई थी। छत पर जो शोर हो रहा है, मालूम होता है वह इसी की करतूत है। आज जैसी रात को भी यह बिल्ली घर में नहीं बैठ सकती। जितने भी बिल्ली-बिलोटे हमने पाले, सब निकम्मे, निर्लज्ज ही देखे। पिताजी उसको कभी अराजकतावादी नहीं कहते थे। यदि मैंने भी कभी उसको इस विशेषण से विभूषित किया हो तो उस समय किया होगा जब वह नन्हा बच्चा था और उसने शरारतें नहीं सीखी थीं। मेरा विचार है कि बिल्लियाँ पक्की साम्यवादी हैं, परंतु मैं इन लोगों से इतनी नहीं जलती और पिताजी के विचार के प्रतिकूल इनसे सहयोग के लिए भी तैयार हूँ, क्योंकि मैं समझती हूँ कि हम सभी प्राणियों को पूँजीवाद के विरुद्ध युद्ध करना चाहिये--बिल्ली को, मुर्ग़े को और मुझको। जहाँ तक विचारों का संबंध है, मेरा मत यह है कि किसी भी व्यक्ति का चरित्र उसके विचारों से अधिक महत्वपूर्ण है। और पुरुषों में, मैं एक साम्यवादी के चरित्र को एक अराजकता-

वादी के चरित्र से ज़्यादा पसंद करती हूँ। सामर अराजकतावादी नहीं है, किंतु वह हमारा साथ इसलिए देता है कि वह संगठन तथा व्यक्तियों की क्रान्तिकारी शक्ति पर अधिक भरोसा रखता है। मुझे इसकी परवा नहीं कि उसके विचार क्या हैं। वह एक साम्यवादी है। खिलाकम्पा अराजकतावादी है। उसकी मुखाकृति शांत है, उसकी दृष्टि स्थिर है और वह बहुत अल्पभाषी है। अराजकतावादी होते ही ऐसे हैं, लेकिन साम्यवादी हमेशा बड़ी जल्दी में, घबराये से प्रतीत होते हैं, देखने में गुरुतर जान पड़ते हैं और बहुधा इस उधेड़बुन में रहते हैं कि आगे क्या करना है। सामर ने मुझे एक पर्चा लिखकर दिया है जिसमें उसने मुझे यह बताया है कि पिताजी के काग़ज़ों और उनकी अन्य चीज़ों के संबंध में मुझे आज रात को क्या-क्या करना है। उसने वह पत्र मुझे लिफ़ाफे के अन्दर रखकर दिया था और मैं उसको अपनी जर्सी के नीचे रखे हुए हूँ। लाओ, इससे पहले कि पुलिस खाना-तलाशी लेने आये उसको पढ़कर देखूँ कि क्या करना होगा। बड़ा लम्बा पत्र है! परन्तु यह क्या? 'प्रियतमे! मुझे क्षमा करना। सात बज गये हैं—लेकिन अभी तक पत्र नहीं लिख सका।' अपनी प्रेमिका के नाम पत्र लिखा है। भूल से मुझे दे दिया। परन्तु मैं अब इसको पूरा पढ़कर छोड़ूँगी। देखूँ तो प्रेम-पत्र में क्या लिखा जाता है। काग़ज़ नफ़ीस, अक्षर छोटे-छोटे। 'मैं बहुत नहीं लिखूँगा। प्रिये! यह तो तुम जानती ही हो कि मैं तुम्हारे प्रेम में दीवाना बना हुआ हूँ। तुम्हारे बाहुपाश तथा अधरों का भूखा हूँ। मैं तुम्हें ऐसा जीवन प्रदान करना चाहता हूँ जो तुम्हारे ज्ञान से परे है, और उसको प्रकाश और शान्ति से भर देना चाहता हूँ, परन्तु मुझे विश्वास नहीं होता कि ऐसा करना मेरे लिए सम्भव होगा। मेरे जीवन के चक्रवात में शान्ति कहाँ! जब मैं तुम्हारे-अपने प्रेम के अतिरिक्त सब कुछ भूल जाता हूँ तो बस मैं यही चाहता हूँ कि जो कुछ भी शान्ति एवं विश्रान्ति मेरी

आत्मा में है वह सब तुम्हें दे डालूँ, परन्तु क्या मैं तुम्हें यह दे सकूँगा—शान्ति और निश्चलता जो मुझसे कोसों भाग रही हैं। किसी की परवा न करते हुए मैं अपने ऊपर हँस रहा हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि इन सब आश्चर्य और प्रश्न के चिन्हों और डैशों को देखकर जिनसे मेरे पत्र में काफ़ी जगह घिर जाती है तुम कितनी चिढ़ उठोगी। जब कि मैं हँस रहा हूँ, उस आनन्द का कुछ अंश जो तुम मेरे लिए रखती हो और मुझे दिया भी करती हो अब भी मेरे पास है। काश तुम जानत कि मैं किस अधीरता के साथ तुम्हारे बिना दिन काट रहा हूँ। मेरा हृदय तुमसे मिलने के लिए कैसा पागल हो रहा है! परन्तु कभी-कभी जीवन, सभी कुछ—मुझे धक्का देकर भागता हुआ-सा प्रतीत होता है। यह भी कैसा उन्माद है, मेरे हृदय की रानी! जीवन जड़ता है, किन्तु हमारा प्रेम हमारी रक्षा करेगा, क्योंकि तुम्हारा एक चुम्बन मेरे लिए नये संसारों, जीवनों और नवीन आनन्दों की रहस्य-मयी सृष्टि कर डालेगा। तुम्हारी आँखों में आँखें डालकर मैं उनसे कुछ-कुछ परिचित हो चला हूँ, किन्तु जिस दिन तुम मेरी हो जाओगी उस दिन तो सचमुच देवता हो जाऊँगा। समस्त धर्मों में ईश्वर की जो कामना विद्यमान है, मैं उसको अपने धर्म के अनुसार पूरी कर लूँगा—तुम्हारे प्रेम, तुम्हारे हाथों और तुम्हारे अधरों के सेवन में! मैं तुम्हें यह किस तरह बता दूँ कि मैं तुमको कितना प्यार करता हूँ! मैं तो केवल इतना ही जानता हूँ कि मैं महान आनन्द तथा कराल दुःख दोनों में से गुज़र चुका हूँ। मैं जीवन के गोपनतम कोने और मोड़ देख चुका हूँ, मधुरता और विषमता, दोनों में। मेरा विश्वास था कि मेरी आत्मा सारे रहस्य जान चुकी थी, सब तक पहुँच चुकी थी। मैं जानता था कि आदमी क्यों एक दिन सुखी होते हैं और दूसरे ही दिन क्यों आत्मघात कर लेते हैं; कूड़े के ढेर पर एक दिन किस तरह एक फूल उगता है और उसी दिन उससे भी अधिक एक

और फूल खिलता है, और फिर वही सूर्य जिसने उनकी सृष्टि की थी उन दोनों को मार देता है। मैं यह भी जानता था कि जल किस प्रकार बादलों से उत्पन्न होता है और चट्टानों की सृष्टि करता है और फिर चट्टानों से किस प्रकार ज्वालामुखी बनते हैं, फिर चट्टानों और समुद्र के रंगों, प्रकाश और प्रेम से छोटे-छोटे प्राणी पैदा होते हैं जो ग्रहों की तरह स्वतंत्र हैं किन्तु उन्हीं की तरह प्रेम के दास हैं। इनमें कुछ ऐसे मनुष्य हैं जिनके हृदयों में सूर्य का कुछ अंश अवशेष रह जाता है। वे अपने आपको मनुष्य कहते हैं और उनके अन्दर का सूर्य का अंश उस विष रूप में परिणत होता है जिसको हम ज्ञान कहते हैं और कभी-कभी इसी विष द्वारा मर जाते हैं या आत्मघात कर लेते हैं। मैं यह सब जानता था। मैं अपने ज्ञान की जड़ों तक को जानता था और उन रास्तों को भी जानता था जिनमें होकर मुझे वह लेजानेवाली थी। मैं अपनी आँखें मूँद कर कभी दुःख-भरे गीत गाया करता था, कभी मार डालने कीइच्छा करने लगता था—कभी आत्मघात कर डालने की जैसा कि बहुत-से आदमी कर चुके हैं, या शायद मैं पहले ही अपने प्राण खो चुका था, अब केवल मृतक समान दाँत फाड़कर अट्टहास कर रहा था। सहसा, मेरे प्राणों की प्राण, तुम मुझे नज़र आईं। मेरा जीवन पूर्ववत् चलता रहा, किन्तु मेरा दुःखमय ज्ञान परिणत हो गया विश्वास में, प्रगाढ़ अनुराग में। मैं प्रतिदिन उस प्रकाश से, जो मेरे हृदय में था, उस सूर्य की ज्योति से जो अब तक मेरे अतंस्तल में छिपा हुआ था और सहसा चमक उठा था, उन्मत्त-सा हो जाता था। मेरा समस्त अस्तित्व उससे प्लावित हो उठता, और वह उठकर मेरे सिर को फिरा देता था। मैं आनन्द के गीत गाता और दिल खोलकर हँसता था। क्या मैं तुम्हें बता दूँ कि मेरे हँसने का क्या कारण था? मैं मनुष्यों के विषाक्त ज्ञान पर, चट्टानों की दुःखमयी चेतना और सरिताओं के द्रुतगामी प्रारब्ध

पर हँसता था। पहाड़ नकशे के चिन्ह मात्र हो गये, ज्वालामुखी पहाड़ों की आग्नेयवृष्टि एक हास्यास्पद खिलवाड़ मालूम होती थी, पुण्य गौरव-हीन स्वाभिमान में तुच्छ—गर्ह्य प्रतीत होने लगे। हर एक चीज़ व्यर्थ क्षुद्रता के साथ विनाश की ओर जाती हुई दृष्टिगोचर होती थी। हर एक चीज़ सिवाय तुम्हारे और मेरे! ब्रह्माण्ड का अपरिमेय सनातन रहस्य मैंने तुम्हारे आर्द्र-नेत्रों की गहराई में पाया और मेरा हृदय आनन्द से उन्मत्त होकर उछलने लग गया। तुम्हारे-मेरे से जो कुछ बाहर है केवल अवसाद मात्र है। हमारे प्रेम के अतिरिक्त जो कुछ भी है कुरुप है, मुझे छोड़कर हर कोई आह भरता और रोता है। मेरे सिवाय सब को सूर्य ने विषाक्त कर रखा है। मेरा विषाक्त ज्ञान उस प्रकाश से पिघल गया और उस सूर्य की रश्मियों से तपकर उड़ गया जो मेरे अतंस्तल में उदय हुआ है। और अब मुझे न कुछ ज्ञान है और न मैं कुछ जानना ही चाहता हूँ। मैं उस नवजात ग्रह के समान हूँ जो आनन्द के अनंताकाश में घूमता है और जिन नियमों का वह पालन करता है उनसे भी उदासीन-सा है। प्रियतमे! बस तुम और मैं! तुम और मैं! किसी अन्य का अस्तित्व है ही नहीं। वे सब शून्यता में विलीन हो गये, क्योंकि तुम्हें अर्पण करनेके लिए मैंने संसार का समस्त आनन्द छीन लिया है, क्योंकि तुम्हें देने के लिए मैंने उसके सारे सुख चुरा लिये हैं। मैंने उसकी आत्मा को अन्धकार के गर्त में फेंक दिया है जिससे प्रकाश की प्रत्येक किरण तुम्हें आलोकित करे! प्रिये, तुम और मैं!'

मैं यह कभी भी नहीं सोच सकती थी कि प्रेम-पत्र इस प्रकार लिखे जाते होंगे और न यही कि सामर—अब मैं उसको ठीक तरह समझी। पहले मैं स्पष्टता के साथ उसको न देख सकी थी। उसके चारों ओर एक गूढ़ परिधि देख पड़ती थी और मैं उसका कारण साम्यवाद समझती थी। वह साम्यवादी है, मैं सोचा करती थी और इसीलिए हम

उसे पूरी तरह नहीं समझ पाते। फिर भी, वह न जाने कितनी बातें जानता है और मेरी, लैम्पों के कारखाने में काम करनेवाली एक ग़रीब की लड़की की तरह भ्रांत नहीं होता, लेकिन यह अच्छा नहीं हुआ। वह ग़लती कर गया। अगर उसे मालूम होता कि पत्र किसके पास है तो वह उसको वापस ले लेता। यदि वह लिफ़ाफ़े पर पता लिख देता तो मैं उस पते पर पहुँचा देती और कल सुबह उससे कह देती। जब उसे यह मालूम होगा कि मैंने उसका पत्र पढ़ लिया है तो वह मेरे संबंध में क्या विचार करेगा ? क्या मैं बहाना कर दूँ और इसको छिपा रखूँ ? परन्तु—ओह ! वह तो मेरी पड़ोसिन है। तोपखाने के कर्नल की लड़की, ७५, लाइट, जो बारकों के बराबरवाले मकान में रहते हैं। बारकें तो बिलकुल क़रीब में हैं, मुहल्ले के छोर पर। एक बूर्ज्वा युवती से प्रेम—और फिर वह प्रेम भी कैसा कुछ !—यदि कोई पुरुष मुझे ऐसी ऊल-जलूल बातें लिखता तो मैं उस पर हँसे बिना न रह सकती। एम्पारो गर्सिया डेल-रायो। नाम तो बड़ा प्यारा है। मैं उसको न भूलने का प्रयत्न करूँगी। बड़ा बुरा हुआ कि जो पर्चा मेरे लिए लिखा था मुझे नहीं मिला। मेरे पिता की पुलिस से कुछ अनबन अवश्य होगी और मुझे उसको जानना चाहिये। यहाँ इस एकाकीपन में, प्रकाश इतना मन्द है कि सब जगह अन्धकारमय प्रतिबिंब दीख पड़ते हैं, शायद मेरे होश ठीक न रहें और मुझे याद न रहे। चुप जाओ, प्यारे। तुम्हें क्या हुआ ? ओह ! द्वार पर खटखटाने की आवाज़। ज़रूर पुलिसवाले होंगे—मैं पहले ही से यह सब समझती थी। यदि दादी यहाँ होती तो इनको कैसी जली-कटी सुनाती ! अब क्या करूँ ! अब तो इनको अन्दर आने देना ही पड़ेगा ! हैलो ! तुम्हारे विचार में कौन आया है ? सामर ? मैं उसको जल्दी से चिट्ठी देती हूँ। वह उसको बिना लिये ही देखता है। लापरवाही से मेरा हाथ हटकार वह अन्दर आता है। चारों तरफ़ दृष्टिपात करके वह कहता है—

'सिंडीकेटें बन्द कर दी गई हैं और केन्द्रीय समिति की आज रात को देहात में बैठक होगी। आम हड़ताल ज़रूर होगी। अब जब हम चल ही पड़े तो आगे बढ़ना चाहिये और जो कुछ भी कर सकें उसमें कसर न रखनी चाहिये।'

मैं उससे चिट्ठी के सम्बन्ध में कहना चाहती हूँ, किन्तु वह रात की मेज़ को हटाकर उसके नीचे से दो पिस्तौल निकालता हुआ मेरी बाट काटकर कहता है—

'सब लोग डर रहे हैं। बूर्ज्वा खौफज़दा हैं। कल गड़बड़ होगी।'

'मैं सच्चे हृदय से, निष्कपटता और सादगी के भाव से कहती हूँ कि इस हल्के में सबसे अच्छा काम बारकों पर धावा बोलना होगा।'

वह चौंककर मुझे घूरने लगता है। उसके हाथों में रिवालवर काँप उठते हैं। फिर वह एक चाकू माँगता है। उससे वह आँगन में जाकर एक खास जगह पर एक गड्ढा खोदता है। शीघ्र ही उसको कारतूसों के दो बक्स, एक और रिवालवर और एक छोटा नक्शा मिलते हैं। वह बड़े सन्तोष के भाव से इन सब चीज़ों को एक ओवरकोट की जेब में रख लेता है जो उसकी बाँह पर पड़ा हुआ है। छत की ओर उँगली उठाकर उसने कहा—

'किसी छेद में यहाँ दो दर्जन हाथ के बम होने चाहिये। कल सारे दिन तुम्हें अन्दर ही रहना होगा।'

मैंने आपत्ति करते हुए कहा—'जब हड़ताल है तो मुझे तो संघर्ष के मध्य में होना चाहिये। चाहे तुम लोग न समझो, मैं हर काम में कार-आमद साबित होऊँगी।'

'अच्छा, तो तुम मुझे मकान की चाबी दे दो।'

मैंने चाबी दे दी। फिर जब मैं चिट्ठी देने लगी तो उसने कहा—'अपने ही पास रहने दो। कल जाकर दे आना। क्या तुमने उसको पढ़ लिया है?'

इस प्रश्न के उत्तर में मैं ऐसा मुँह बनाती हूँ कि वह अपनी हँसी नहीं रोक सकता। तब वह दरवाज़ा बन्द करके चला जाता है। मैं इतनी हँसी कि सारे पड़ोसियों ने मेरे ठहाके सुने होंगे। फिर सहसा मैं चुप हो गई। पड़ोसी दिल में क्या कहते होंगे? बाप की मौत के दिन ठहाके मार रही है। अजीब लड़की है। मैं चिट्ठी को दोबारा पढ़ती हूँ। उसके शब्दों और सामर के अंग-विक्षेपों पर ध्यान देने से मुझे पूर्ण विश्वास होता है कि जिसको बूर्ज़्वा प्रेम के नाम से पुकारते हैं वह टाइफ़ायड या इन्फ्लुएंज़ा जैसा भीषण रोग ज़रूर होगा। तेरी क्या राय है इसमें, बता तो मेरे मुर्ग़े!

आकाश की रानी पृथ्वी की सैर करती है

जब मैं प्राची से निकलती तो अरुण-वर्ण और विशाल थी। फिर मैं 'लामानचा' पर रुकती-रुकाती, मंथरगति से चली, क्षीणकाय और पांडुर। मेरे दो बड़े दर्पण हैं, कासे दि कैम्पों की झील और लोज़ाया की कच्छ-भूमि। पहले मुझे कई गुम्बजों के ऊपर होकर गुज़रना पड़ता है, जहाँ मुझे देखने के लिए कई दूरबीनें लगी हुई हैं। जिस मनोयोग के साथ उन्होंने मेरे कपोलों पर के तिलों का अध्ययन किया, उससे पहले तो मैं यह समझी थी कि यह कोई सौन्दर्य्य-प्रबोधक संस्था होगी, परन्तु मुझे पीछे से यह मालूम हुआ कि मुझे इस प्रकार घूरनेवाले कुछ एक निर्धन वैज्ञानिक मात्र थे। यह बिलकुल सच है कि मैं कविसमुदाय को अभी तक यह विश्वास नहीं दिला सकी हूँ कि मैं वृद्धा हूँ और—ये लोग भी न जाने क्या-क्या ऊल-जलूल सोचते रहते हैं—और मैं

मर चुकी हूँ—वाह भाई ! यह सब भी कैसी अजीब और मज़ेदार बातें हैं। सौभाग्य से इस वेधशाला के समीप ही कई बड़ी और खुली हुई छतें हैं जहाँ युवक और युवतियों की जोड़ियाँ गाढ़ालिंगन करके, नाचती और प्रेमालाप किया करती हैं। और फिर वे मेरी ओर देखकर न जाने क्या-क्या कहा करते हैं। उन्हीं के कारण मुझे अब भी पृथ्वी से कुछ दिलचस्पी बाक़ी है।

परन्तु, दिलचस्पी रखना कुछ और है और प्रेम करना कुछ और। मैं पृथ्वी से प्रेम करती हूँ, परन्तु उसका कारण वह नहीं है जो मैं तुम्हें बतला आई हूँ। वह तो कुछ और ही अनूठी बातें है जिनको मैं स्त्री-स्वभाव तथा प्राणनाशक ग्रह होने के नाते अपने अन्तस्तल में गुम ही रखती आई हूँ। मैं तारा नहीं हूँ, परन्तु मुझमें विनाश की शक्ति है। पृथ्वी के सूर्य-परिक्रमा के मार्ग में जब मैं दूसरी ओर से आती हुई उसके ऊपर से जाती हूँ तो छायाओं के इधर-उधर डरकर भागने और छिपने में मुझे अजब लुत्फ़ आता है। पुलों के नीचे, मकानों के पीछे, लदड़-पदड़, गिरते पड़ते, किसी प्रकार मुझसे छिपने का व्यर्थ प्रयत्न—मुझे इन अटपटी छायामूर्तियों पर बड़ी हँसी आती है! मेरा प्रभाव क्रूर समझा जाता है क्योंकि मैं अपनी इच्छा मात्र से मनुष्यों तथा वस्तुओं की परमाणु-रचना में उलट-पलट कर देती हूँ जिससे उनकी आकर्षण शक्ति में आकाश-पाताल का अन्तर हो जाता है। इसका असर किसी पर कम, और किसी पर अधिक तथा विभिन्न होता है; परंतु मनोरञ्जन की मात्रा उसमें भरपूर रहती है। पत्रों के समाचार तथा सामाजिक गप-शप के कालम वास्तव में मेरी ही प्राइवेट डायरी के पन्ने होते हैं। कुछ ऐसे भी विलक्षण प्राणी होते हैं जो मुझसे अनजान में प्रेम करते हैं—और प्रेम की पराकाष्ठा भी यही है—और यद्यपि इनमें से अधिकांश मुझे कविताएँ अर्पित नहीं करते, तथापि मेरे प्रति इनका प्रेम कवियों के प्रेम से अधिक

गहरा होता है। यदि मैं उनको सोने न देना चाहूँ तो वे सोते भी नहीं! मेरी इच्छा मात्र पर, मेरी खुशी के लिए, वह अपनी सूरत तक बदल डालते हैं! वह मेरी ख़ातिर अपनी पत्नियों तथा घरवालों से लड़ बैठते हैं, अपना नाश कर लेते हैं, मर भी जाते हैं और आत्मघात तक कर बैठते हैं। लोग उन्हें 'चंद्रहात' या पागल कहते हैं। जब ये लोग राजनीतिक-क्षेत्र में जुट जाते हैं तो मुझे बड़ा आनन्द मिलता है। मैं इनको खूब नाच नचाती हूँ। राजतंत्रवादी प्रजातन्त्र की स्थापना करते हैं और किंकर्त्तव्य विमूढ़-से हाथ पर हाथ रक्खे बैठे रहते हैं। अन्य प्रजातंत्रवादी भाषण देने को खड़े होते हैं और साम्यवादी विचार उगलने लग जाते हैं। उदाहरण के लिए एक ऐसा मनुष्य लीजिये जो सच्चे दिल से यह समझता है कि मैं अपनी नवीन योजना द्वारा अपने देश को रसातल चले जाने से बचा रहा हूँ, परंतु वह करता क्या है? केवल नये कपड़ों से पुराने कपड़े बदल देता है! चूँकि ये लोग मेरे सच्चे चाहनेवाले हैं, मैं इनको पसंद करती हूँ; किंतु मैं इन पर हँसती भी खूब हूँ हालाँकि मेरे चौड़े चेहरे पर हँसी शोभा नहीं देती। राजनीतिज्ञ संसार में सबसे चपलबुद्धि तथा ज़रा में रंग बदल जानेवाले लोग होते हैं। उनका सिर फिरा देना बाएँ हाथ का खेल है, यद्यपि ऐसे परिवर्तन की ओर लोगों का ध्यान कम जाता है। मेरे हस्तक्षेप के बिना भी ये लोग ऐसे अस्थिर स्वभाव के होते हैं कि हवा के झोंके के साथ इनके विचार कुछ से कुछ हो जाते हैं। वैज्ञानिक ज़रा मुश्किल से क़ाबू में आते हैं। इनमें से एक ने मेरे संबध में लम्बे-लम्बे निबंध लिख मारे। मैंने उसका सिर ऐसा फिराया कि वह दो साल तक हाइड्रोजन के एक अणु को अपनी दाहिनी मुट्ठी में कसकर बंद किए हुए, हाथ ऊपर उठाए हुए लोगों से यह पूछता फिरा कि मैं इसका क्या करूँ! कविगण—जिनको भविष्य-वक्ता कहना ज़्यादा अच्छा होगा—जो कविताओं से मेरी अर्चना करते हैं—हर एक नगर में मेरी भक्त-मण्डली

मौजूद है, ये एक पर्चा निकाला करते हैं। अभी इन पत्रों को 'पागलों का पर्चा' नहीं कहा जाता। ये रंगरूट कवि होते हैं जिनका प्रेम मेरे प्रति पुरुषों के प्रेम से अधिक मधुर होता है। उनका प्रेम स्त्री-सुलभ प्रेम होता है। बिलौटों में मैं मरदानेपन का भाव उभारती हूँ, परन्तु इन कवियों पर दूसरे ही प्रकार का प्रभाव डालती हूँ। इन युवक-प्रेमियों की सरस विषयासक्ति से भरी हुई सुकुमार कविताओं से मैं पुलकित हो उठती हूँ। उनके अलंकारों में ग़ोता लगाना मानो कृत्तिका नक्षत्र के गुलाब और दूध के समुद्र में स्नान करना है। मेरी चुंबकीय प्रेरणा से इन नवयुवक सज्जनों के मस्तिष्क मूर्खताओं की ओर झुक पड़ते हैं। परन्तु बस, बहुत कह दिया। रात बढ़ती जा रही है। तारे अर्धरात्रिवाली कांति से चमक रहे हैं। मेरे नाज़ुक-दिमाग़ और भद्र कवि-भक्त इस समय मुलायम चादरों के मध्य में सुख की नींद सो रहे हैं। पूर्व दिशा से, जहाँ मोर्स टेलीग्राफिक (तार) प्रणाली की खर-खर से अंकित बिन्दुओं और रेखाओं के 'छींटे' मुझ पर उछट रहे हैं, गोलियाँ छूटने की आवाज़ें आ रही हैं। इसका यही मतलब हो सकता है कि नगर की दूसरी तरफ़ उन लोगों के दल जो मुझसे द्वेष रखते हैं, अथवा मेरी अवहेलना करते हैं, किसी विषय पर मंत्रणा करने को इकट्ठे हो रहे हैं। पुलिस की कारें खड़खड़ाती हुई इस गड़बड़ के स्थान को जा रही हैं। इन सिंडीकेटवालों की इच्छा भी यही है। कारों के नीचे छाया का फ़ीता सड़कों और गलियों में चक्कर लगा रहा है। आज रात को तुम पुलिस और सिंडीकेटवालों को इस अन्तर से पहचान सकते हो—प्रथम प्रकाश ढूँढ़ते हैं और द्वितीय छाया में दुबके खड़े हैं। परन्तु पुलिस की अपेक्षा मैं अधिक चालाक हूँ। जहाँ इस समय गोलियाँ छूट रही हैं, वहाँ चमकने के बजाय मैं नगर की दूसरी ओर जाती हूँ। वहाँ होटलों और बंगलों के मध्य में उनके छोटे-छोटे बग़ीचे भी हैं—शहर में मानो देहात ने टाँग अड़ा दी है। मकानों

के ब्लाक की ओर का एक झरोखा खुला हुआ है और मैं पारदर्शी परदे के पार पहुँच जाती हूँ। मैं कपड़े पहनने की मेज़ के दर्पण पर चमकती हूँ और खिसककर शयनागार की दीवार पर पहुँच जाती हूँ। एक रमणी, जो लेस में लिपटी हुई है और जिसका एक स्तन खुला हुआ है, तकिये में मुँह देकर रो रही है। उसके बराबर में खड़ा हुआ एक पुरुष बिना रुके बोले जा रहा है।

'तुम्हारा विचार है चूँकि पुलिस उनका पीछा कर रही है शरीफ़ आदमियों को चाहिये कि उनको अपने घरों में पनाह दें!'

'वह कोई अपराधी थोड़े ही है।' उसने सिसकी भरते हुए कहा।

'मैं यह बात पहले भी सुन चुका हूँ। वह तुम्हारा चचेरा भाई है और साम्यवादी है। वह गहरे रंग की फ़लालेन की कमीज़ पहनता है जिसमें एक ज़िप बंधक लगा हुआ है। वह दिल का काला है। वह सचमुच साम्यवादी है, परन्तु वह शांतिप्रिय नागरिकों के यहाँ क्यों छिपा रहना चाहता है? उसके जहाँ सींग समाएँ जाने दो। वह जाने और उसका मतलब!'

रमणी चौंक पड़ी।

'तो तुम उसको घर से बाहर कर दोगे? तुम उसको पुलिस के हवाले करना चाहते हो?'

'नहीं तो; परन्तु दया का भाव तो मध्यश्रेणी की हिमाक़त है।'

'इस समय तो इसी बात से तुम्हारा मतलब निकलता है। दया के भाव को तो तुम बड़ी खुशी से भूल जाने को तैयार हो।'

पति हँस पड़ा।

'मेरे विचार में तो तुम भी साम्यवादी जान पड़ती हो।'

वह कोई उत्तर नहीं देती। सुबकियाँ बन्द हो गईं। वह चिंतित भाव से कान लगाकर सुनती है। चारों ओर निस्तब्धता है।

'और फिर साम्यवादी भी कैसी आला क़िस्म की हैं—१५०० पौंड सालाना आमदनी है !'

'लेकिन इससे क्या ? क्या इससे मुझे सुख मिलता है ? रुपये के मुक़ाबले में किसी आदर्श से प्रेम करना क्या कहीं ज्यादा अच्छा नहीं है ?'

'चुप रहो ! या शायद तुम्हें आशा है कि वह साम्यवादी ये बातें सुन रहा है ?'

'पशु !'

'क्या तुम बुरा मान गईं ?'

'हाँ ।'

वह उठती है और पलंग से उतरना चाहती है । उसकी गोल और भरी हुई टाँग खुल जाती है ।

'तुम कहाँ जा रही हो ?'

'अपने कमरे में ।'

पतिदेव ने ज़रा ऊपर उठ, हाथ बढ़ाकर रात की मेज़ की दराज़ खोली । उसने कोई चीज़ निकाली और दाँत मींचकर कहा—

'मैं तुमसे बहुत ज्यादा प्रेम करता हूँ । यदि तुमने उस मार्ग में पैर भी रखा तो तुम्हें गोली मार दूँगा ।'

मैं फ़ौरन वहाँ से भाग निकली । इसके पूर्व एक बार मेरे ऊपर दर्पण में गोली चलाई गई थी । मुझे उससे कोई चोट तो नहीं आई, किन्तु मेरे दिल को धक्का ज़रूर लगा था । और एक बात यह भी है कि मैंने इस प्रकार के दृश्य बहुत अधिक देखे हैं । मुझे यह बात स्वीकार करनी होगी कि मैंने ही पति को पत्नी के साम्यवादी के कमरे में जाने का भयंकर परिणाम और खतरे की बात सुझाई थी । परमाणु-व्यवस्था में उलट-फेर कर देने से यह बात उसके मस्तिष्क में आई थी । पत्नी को गोली से मरवा देना बिलकुल आसान काम था, किन्तु सच तो यह है कि स्वयं मैं गोली चलने से घबरा जाती हूँ ।

जिन लोगों ने कुछ आदमी नगर के दूसरी ओर भेजकर पुलिस को भुलावे में डाला था, वह ज़्यादा दूर नहीं हो सकते। मकानों के ब्लाक के पीछे दो लौंग के खेत हैं। उसके बाद एक गोलाकार पहाड़ी, फिर राज-मार्ग। फिर नहर के किनारे-किनारे एक वृत्त-मेखला, तत्पश्चात् एक ढाल जहाँ पत्थरों की छाया पड़ रही है, फिर एक और छोटी-सी पहाड़ी जहाँ एक टूटी-फूटी जीर्ण पर्णशाला है। उसके पार, दूसरी ओर मैं अपनी किरणें नहीं भेज सकी। वहाँ एक छाया-रेखा है। रह-रहकर वहाँ वाटरप्रूफ़ (बरसाती) कपड़े की एक टोपी दीख पड़ती है, और ज़रा-सा कष्ट उठाकर मैं एक रिवालवर को चमचमा देने में भी सफल हो गई। सारांश यह कि दो आदमी पहरा दे रहे हैं और बाक़ी लोग कहीं आस-पास ही होंगे। मेरी श्रवण शक्ति अत्यन्त प्रखर है। यहाँ कोई मेंढक या झींगुर भी नज़र नहीं आता, अतः कोई बाधा देनेवाला शोरगुल भी नहीं है। मुझे दो शब्द सुस्पष्ट सुन पड़ रहे हैं : 'सेबटेज [१]' कैपिटलिज़्म [२]।' * इसका अर्थ यह है कि अभी काम आरम्भ ही हुआ है। पहला शब्द मज़दूर-संघ के अराजकतावादी दल का आवेगपूर्ण भाव की व्यंजना करता है और दूसरा सिंडीकेट के डेलीगेटों का मूल-मंत्र है। इन सम्मेलनों में ये लोग क्रान्तिकारी क्रिया की अपेक्षा कल्पित सिद्धान्तों की चर्चा ही अधिक करते हैं, परंतु प्रथम तो इन दोनों दलों की परिभाषा ही अस्पष्ट है। सभापति महोदय एक स्थूलकाय पुरुष हैं। उनके मुख पर प्रकाश डालने से वक्र रेखाओं के अतिरिक्त कुछ और नज़र ही नहीं आता। डेलीगेटों की संख्या बीस के लगभग है। अब मंत्री महोदय बोलना शुरू करते हैं : 'साम्यवादी दल का डेलीगेशन हमारे पास यह कहने आया है कि वे

---

* (१) जब संघर्ष के कारण मज़दूर हड़ताल करते हैं तो मिल-मालिकों की मशीनें इत्यादि बिगाड़ कर हर तरह से हानि पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं। यही सैबटेज कहलाता है। (२) पूँजीवाद

लोगों के निर्णय के अनुसार कार्य करेंगे। वे अपने प्रतिनिधित्व का प्रमाणपत्र भी लाए हैं। मैंने उनसे यही कह दिया है कि वे बस हमारा अनुकरण करें। (सब लोग करतलध्वनि करते हैं।) मैंने कह दिया है कि आम हड़ताल कल के लिए रखी गई है। वह लोग हमारे कार्य-क्रम को विस्तृत रूप से जानना चाहते हैं। चूँकि यहाँ तो अभी तक कुछ और निश्चित ही नहीं हुआ है, अतः मैंने अपना सारा ज़ोर आम-हड़ताल पर ही लगा दिया और उन लोगों से उसको परिपूर्ण बनाने में सहायता देने की प्रार्थना की है। चूँकि वैधानिक सुधारकों का बहुत ज़ोर है, उन लोगों का संस्था में अल्पमत है, किंतु हमारे तीस हज़ार अनुयायी अन्य लोगों को हड़ताल में जरूर खींच लायेंगे। साम्यवादी लोग अल्पसंख्यक होते हुए भी बड़े कर्मशील होते हैं और हमारी बहुत कुछ सहायता कर सकते हैं।'

वक्ता एक रूखा और खिन्नचित्त मज़दूर है जो अन्य चिताओं का बड़ा शिकार बना हुआ है। उसकी सहचरी अस्पताल में है। पति को तीन दिन से पत्नी का मुख देखना नसीब नहीं हुआ है। नर्सें—ईसाई ब्रह्मचारिणियाँ—दिन-रात मरीज़ की चारपाई घेरे रहती हैं और आठों पहर बराबर उसकी जान खाया करती हैं—'ईसा पर ईमान लाओ' और तरह-तरह से उसके पति की ओर से उसका मन फेरने का प्रयत्न करती हैं। 'देखो, तुम्हें देखने को आज भी नहीं आया। यहाँ वह क्यों आने लगा? विश्वासघाती है परले दर्जे का। ऐसे आदमी को तो गोली से उड़ा दे! निर्मोही, पापी, दग़ाबाज़ कहीं का।' वह आशा लगाए बैठी हैं कि मरते-मरते उसको अपने मत की अनुयायी बना लेंगी। इसी वजह से उसको पति का मुँह तक नहीं देखने देतीं। कहीं बना बनाया खेल न बिगड़ जाए। इस बेचारे श्रमजीवी पति का हाल यह है कि अपनी जीवन-सहचरी का मुँह देखने को तरस रहा है। वह उसकी चिर-संगिनी है। दोनों ने साथ-साथ दुनिया का सामना किया है—मुसीबतें

उठाई हैं—दो शरीर, एक प्राण होकर। उसका मन कैसा व्याकुल है—वह विवश है—उसको कोई उसकी मरणासन्न प्रेयसी के पास तक जाने ही नहीं देता।

इधर नर्नें अपनी धुन की पक्की हैं। साफ़-सुथरे बिछौने पर सुलाकर उसकी खूब सेवा शुश्रूषा करके, अपनी ऊँची भावनाओं और उदारता का प्रभाव डालकर कदाचित् उन्होंने मरीज़ को राज़ी-सा कर लिया है। वह शायद अब यही सोचती है कि जो कुछ ये कहती हैं ठीक है। जब उसने पूछा—'मेरा आदमी मुझे देखने क्यों नहीं आया?' तो उन्होंने इसका यही उत्तर दिया होगा कि वह मनुष्यों के प्रेम में विश्वास करके अपने आपको धोका दे रही है। उसको केवल ईश्वर पर—सर्वोपरि आश्वासन-दाता पर ही विश्वास करना चाहिये। इन दोनों का धार्मिक रीति से विवाह नहीं हुआ था। इसीलिए नर्नें पति को अन्दर आने नहीं देतीं और न पत्नी को यही बताती हैं कि वह उससे मिलने के लिए रोज़ाना दो बार आया करता है। बेचारी ब्रह्मचारिणियाँ अपना काम बड़ी दृढ़ता और आग्रह के साथ कर रही हैं। वह चाहती हैं कि जीवन पर से मरीज़ की ममता और श्रद्धा उठ जाय। वे भौतिक संसार का अस्तित्व ही मिटा देना चाहती हैं। वे यह अच्छा ही करती हैं। मैं मज़हब को पसन्द करती हूँ—इसलिए कि वह बड़ा विचित्र है, अद्भुत है। और ये नर्नें भी बहुत माननीय हैं। सामाजिक सुव्यवस्था तथा शांति की स्थिरता के लिए वे कितना काम करती हैं। औरों की कृतज्ञता के विचार को ज़रा भी मन में न लाते हुए, बिछौने का ठीक करना, मरीज़ों का मल-पात्र लाना-लेजाना, थर्मामीटर लगाना, इन सबको प्रेम-भाव से करना क्या कोई हँसी खेल है? मेरा तो दिल भर आता है। ये सब काम वह मानव-सेवा के भाव से नहीं करतीं, वह स्वयं इस बात का सविनय निषेध करती हैं, वह यह सब करती हैं ईश्वर के प्रेम और अनंत सुख के लिए! जब मैं

उनके धवल शीष वस्त्रों पर अपनी धवलता प्रतिबिंबित होती हुई देखती हूँ तो मेरे आनन्द का पारावार नहीं रहता, परन्तु यह दुष्ट उनसे द्वेष करता है। उसने अपना रिवालवर अपने पैरों के मध्य में पृथ्वी पर रख दिया है और अपने जीवन के सुख-सम्पन्न दिवसों को स्मरण करता हुआ मेरी ओर देखता है। फिर एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर अपनी बिना बनी ठोड़ी पर हाथ फेरता है, चिबुक खुजलाता और कान लगाकर सुनने लगता है। दूसरे वक्ता का भाषण होता है, परन्तु लोग कुछ ध्यान नहीं देते। इसका कारण यह है कि उसमें उन्हीं हज़ारों बार दोहराई हुई सामान्य उक्तियों के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं— 'बूर्ज्वाज़ी का अत्याचार, अपने शहीद सहकारियों का ऋण चुकाने की आवश्यकता, एक ऐसे अनन्तकालीन क्रान्ति की ओर अग्रसर होने की आशा जिसका बहुत लम्बा-चौड़ा परिणाम होगा।' इस सब पुरानी बातों को सुनते-सुनते जी ऊब चुका है। लो, अब दो घोषणा पत्र पास हुए—यह तो ज़रा ठोस काम हुआ। इनमें से एक आज ही रात को छपकर तैयार हो जाएगा और प्रातःकाल बाँटा जायगा। दूसरा समाजवादी लोकतंत्रवादियों (सोशल-डिमाक्रेटों) की उस विज्ञप्ति का उत्तर है जिसमें उन्होंने अपने मज़दूरों को काम न छोड़ने की सलाह दी है। एक और डेलीगेट जो कुछ ज़्यादा भारी-भरकम और कवि-सा प्रतीत होता है—परन्तु वह मेरा मित्र नहीं है, वरन् व्यक्तिगत रूप से मेरे विरोधी दल का एक नेता है— यह कहने की आज्ञा माँगता है कि उस घोषणा पत्र के उत्तर में जो समाजवादी (सोशलिस्ट) कल तीसरे पहर निकालनेवाले हैं एक और घोषणा-पत्र लिखे जाने का प्रबन्ध होना चाहिये जिसमें आम हड़ताल को शहीद कामरेडों की मृत्यु पर शोक-प्रकाशन का माध्यम बतलाते हुए सार्वजनिक रक्षा-विभाग के डायरेक्टर जनरल को पदच्युत किया जाना सन्धि की पहली शर्त घोषित कर देना चाहिये।

एक पुराना अराजकतावादी इसके विरोध में कहता है—'यह तो राजनीतिक दृष्टिकोण है', और राजनीति के विरुद्ध शब्दों की धारा बहाने लग जाता है। उसका ध्यान इस बात की ओर आकृष्ट किया जाता है कि सामर ने स्वयं वह घोषणा-पत्र नहीं लिखा है। उसने केवल पहले से यह बतला दिया है कि समाजवादी उसको निकालनेवाले हैं। परन्तु यह पोपला वक्ता अपने वही दो वाक्य दोहराये गया और अन्त में मेरी प्रशंसा में दो शब्द कहते हुए भाषण समाप्त किया—'हमारे विचार इतने ही सुस्पष्ट हैं जैसा कि चंद्रमा जिसके नेतृत्व में यह सभा हो रही है।' सामर कंधे उचकाकर कह उठता है—'राजनीति नहीं चाहिये!' और फिर—'हर एक चीज़ राजनीतिक है, यहाँ तक कि तुम्हारे सफ़ेद बाल भी, मेरे प्रिय मित्र!' लोग हँसते हैं और सामर आगे बढ़ता है—'मैं चंद्रमा के नेतृत्व को नहीं मानता क्योंकि वह बूर्ज़्वा और नीच दूती है।' वे सब फिर हँसने लगते हैं और समाजवादी घोषणा की बात भूल जाते हैं। सामर इस बात पर ज़ोर देता है कि समाजवादी 'अपनी सिंडीकेटों के मिल जाने के कारण हमारा साथ देने को बाध्य हैं और बदनामी से बचने के लिए उन्हे आम हड़ताल की घोषणा करनी ही होगी। हमें अपनी इस विजय से पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहिये और यह बात सब कामरेडों पर प्रकट कर देनी चाहिये।' अब वह सफ़ेद बालवाले वक्ता सामर के वाक्यों को दोहराकर कहते हैं कि अगर समाजवादी अलग-अलग रहे तो उनकी नाक कट जाएगी। और यदि ऐसी परिस्थिति उपस्थित हो जाय कि आन्दोलन के सार्वजनिक बन जाने के कारण वैधानिक सुधारकों को भी हड़ताल में मजबूरन शामिल हो जाना पड़ा तो फिर उनकी शान कैसी किरकिरी हो जायगी। सामर मुसकराया और रिवालवर के दूसरे सिरे से कंकरों की एक शकल बनाने लगा। अतः वह बोला—"मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि कामरेड मुझसे सहमत हो गये।" इस पर बुड्ढा कुछ सभँला और कुछ ऐसी बात कहने के

अभिप्राय से जो सामर ने न कही हो, उसने मुक्त-प्रेम की प्रशंसा करनी आरम्भ कर दी। तत्पश्चात् उसने मेरे प्रति धन्यवाद का वोट—प्रस्ताव पेश किया। मैं उसकी बहुत आभारी हूँ, किंतु ये लोग मेरी समझ में नहीं आते। मैं इन लोगों के दिमाग़ों को प्रभावित नहीं कर सकती, क्योंकि उसके लिए ग्रहण करने की शक्ति की आवश्यकता होती है जो इन लोगों में नहीं हैं। इनमें से कितने ही नवयुवक डेली-गेट इसी उलझन में पड़े हुए हैं कि धन्यवाद के प्रस्ताव के पक्ष में वोट दें या विरोध में। वे यह नहीं समझ सकते कि पूँजीवाद के विरुद्ध मैं किस प्रकार उनकी सहायता कर सकती हूँ और उनको इस बात का विश्वास दिलाने के लिए पोपले वृद्ध को कई कविताएँ सुनानी पड़ती हैं। सभापति अधीर हो उठता है और सबका ध्यान मीटिंग के कार्य-क्रम की ओर आकर्षित करता है। अतः धन्यवाद का वोट बेदिली से पास किया जाता है और फिर दूसरे दिन की गुप्त सभाओं का स्थान तथा समय निश्चित किया जाता है—फिर कमेटियों को हिदायतें और अराजकतावादी संघ के दलों के साथ काम करने के प्रश्न पर ज़िला डेलीगेटों द्वारा सम्मति देने का नम्बर आता है। दूसरे प्रश्न के प्रसंग में वह वृद्ध सार्वभौमिक भ्रातृत्व तथा अणुओं में परमाणुओं के सामंजस्य पर खूब बोला। युवक उसकी बातों पर ध्यान न देकर कारतूस गिनते रहे। वृद्ध ने प्राचीन सिद्धांतों की व्याख्या की और पार्लियामेंट के मेम्बरों के शब्द दोहराये। युवक मंडली अवसाद के साथ मुसकरा दी, किंतु सामर को ऐसा प्रतीत हुआ कि बुड्ढा भावुक तथा अलंकार-प्रिय बूर्ज्वा वक्ताओं के ढंग पर लोगों पर कुछ प्रभाव अवश्य डाल रहा था। मेरे प्रति धन्यवाद का वोट। मुझे कृतज्ञ तो होना ही पड़ा, परन्तु केवल दिखावे के लिए क्योंकि मैं इनको तुच्छ समझती हूँ, फिर भी कृतज्ञता से सदैव प्रसन्नता होती है। अब ये लोग एक शब्द के गूढ़ार्थ पर रस्साकशी करने लगे।

तीन अत्यन्त स्वमताभिमानी डेलीगेट आपस में मुफ़्त माथापच्ची कर रहे हैं और स्वप्नदर्शियों की तर्कशीलता के साथ अप्रासंगिक विषयों पर बहस कर रहे हैं। तीनों को यह पूरा यक़ीन है कि सिंडीकेटों के प्रतिनिधि उनकी युक्तियों को पूरी तरह नहीं समझ रहे हैं। अब इन तीनों से भिन्न स्वभाव का एक युवक-डेलीगेट जो आत्मसंयमी है और अपने दायित्व को समझता है, विवेक तथा क्रान्ति के हितों की दुहाई देता हुआ, मंच पर आता है और अपना सिक्का बिठा देता है। परन्तु तीन खुर्राट उस पर बुरी तरह बिगड़ उठते हैं। उसके शब्दों के असली माने बताते हुए वे पादरियों की तरह उसकी शास्त्रपरायणता की धज्जियाँ उड़ाने का प्रयत्न करते हैं। अन्य डेलीगेट शान्ति-पूर्वक बैठे रहते हैं। सहसा उनमें से एक संकेत द्वारा सबसे चुप हो जाने को कहता है। उपर्युक्त पर्णशाला के समीप ज़ोर की सीटी सुन पड़ती है और अब मैं भी हस्तक्षेप करती हूँ।

गृह-पंक्तियों के मध्य में सिविल गार्ड के घोड़े और पुलिस मोटरें दृष्टिगोचर होती हैं। खेतों में इनका ताँता-सा लगा हुआ है। मैं एक बादल पकड़कर इस तरह से रखती हूँ कि ये लोग छाया में छिप जाते हैं। एक और बादल लेकर मैं क्रांतिकारियों को ढक देती हूँ। अब ये लोग मौन हैं। अपने को सुरक्षित समझकर दूसरी सीटी की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो भाग जाने का संकेत होगी। जब पर्णशाला में छिपे हुए स्काउट दूसरी सीटी बजाना चाहते हैं, उस समय ये पुलिस के घेरे में हैं। इससे ज़्यादा अच्छी और कोई बात हो ही नहीं सकती थी। अब पुलिस औरों की फ़िक्र में आगे बढ़ती है। मैं बादल को पर्दे की तरह उठा देती हूँ। बुड्ढे अराजकतावादी के प्रस्ताव पर मेरे प्रति धन्यवाद का वोट पास हुआ था और अब मैंने इनका कैसा अनिष्ट किया है। अब इन पर पूरा प्रकाश पड़ रहा है। लो अब उन्होंने तुम्हें देख भी लिया! चिर मित्रो, अब भागना बिलकुल व्यर्थ है!

किन्तु युवकगण अपने रिवालवर निकालकर ढाल की आड़ में चले जाते हैं। अब इनके सामने एक समस्या है। क्या वे एक साथ रह सकते हैं और एक ही साथ भागकर बच सकते हैं? मैदान इतना खुला हुआ है कि एक-एक करके खिसक जाना असम्भव है। वे पुलिस के हाथों से निकलने का प्रयत्न अवश्य करेंगे, लेकिन उनको अब बराबर गोली चलाते हुए आगे बढ़ना होगा। ये बुरी तरह फँस गये हैं, किन्तु जब मैं बूर्ज़्वा ठहरी तो चाहे मेरे सर में दर्द ही क्यों न हो जाय, अपने वर्ग की सहायता करना तो कम से कम मेरा कर्तव्य है ही।

दो लड़के कंधे उचकाकर पुलिस से पुकार कर कहते हैं। 'ठहर जाओ! अब कुछ लुत्फ़ रहेगा!' पुलिसवाले पृथ्वी पर लेट जाते हैं। एक घाटी में छिपे हुए क्रांतिकारियों ने लगभग एक दर्जन गोलियाँ छोड़ी हैं। पुलिस पीछे हट जाती है। सिविल गार्डों के घोड़े बिदक कर दो अलग-अलग टुकड़ियों में बँट जाते हैं। दो सिपाही दुलकी मारकर साफ़ निकल जाते हैं। पुलिस ने कुमक माँगी है। डेलीगेट इशारों से बात करके पीछे देखते हैं। इनमें से तीन सावधानी से रेंग कर पीछे खड़े हो जाते हैं। वह कामरेड जो मंत्री थे उस काग़ज़ को उठा लेते हैं जिसमें उन्होंने नोट रख दिये थे। एक मटमैले रंग का नाटा-सा आदमी चिल्लाकर गोली चलाता है—'यह जर्मिनल के नाम की! अब दूसरी एस्टार्को की!' अभी तक कोई हानि नहीं हुई है। दो दल अलग-अलग हो जाते हैं। एक बहुत जल्दी पीछे जाता है। दूसरा आगे बढ़ता है। जब वह नहर के किनारेवाली वृक्ष पंक्ति के पास पहुँचते हैं तो तीन गज़ के फ़ासले पर एक पुलिसवाला दिखाई देता है। वह और सिडीकेटवाले एक ही साथ गोली चलाते हैं! पुलिसवाला धड़ाम् से गिर पड़ता है और डेलीगेट भागे जा रहे हैं। इनमें से एक अपनी ज़ख्मी भुजा को पकड़े हुए भाग रहा है। सामर उसके साथ-साथ है। अपनी पेटी और रुमाल से वह बिना रुके हुए फंदा

बनाकर मित्र के गले में डाल देता है और उसकी भुजा उसमें लटका देता है। सिविल गार्डों के टोप नहर की दूसरी तरफ़ देख पड़ते हैं। उन्होंने ज़मीन के उतार-चढ़ाव को समझने में ग़लती की है, और अब नहर भागने वालों की सहायक है। सामर अब निर्भयता के साथ सफ़ेद बालों वाले वृद्ध और ज़ख्मी मित्र के बीच में दौड़कर आ पहुँचता है। एक क्षण के लिए उसका मन बड़ी दूर चला जाता है—अम्पारो गार्सिया डेल रायो के पास। उसके लिए वह लज्जित हो उठता है। फिर वह सोचने लगता है—'यदि वह अब देख पाए तो मुझे चोर या कोई अपराधी समझे। शायद वह भी मेरे काम को लज्जा-जनक खयाल करे।' कुछ दूर से गोलियों की आवाज़ आती है और एक गोली उनके सिरों के ऊपर से होकर निकल जाती है। उसके कानों में अभी तक उस वृद्ध की आवाज़ गूँज रही थी, जब कि वह मेरे प्रति धन्यवाद के वोट का प्रस्ताव पेश कर रहा था। चंद्रमा के प्रति धन्य-वाद का वोट! और अब उसी चंद्रमा ने उनके साथ विश्वासघात किया था! उसने मेरी ओर क्रोध से दृष्टि उठाई और मुझे कोसा भी, परंतु उसको यह मालूम नहीं है कि मैं इसी क्षण अपनी किरणों से पूर्ववर्तीय मज़दूरों के मकानों, ७५ नं० तोपख़ाने की बारकों तथा कर्नल के बग़ीचे को अपनी आभा की किरणों में निमज्जित कर रही हूँ और खुले हुए झरोखे से प्रविष्ट होकर अम्पारो की सुकुमार और गोल-गोल भुजाओं का चुम्बन कर रही हूँ, जब कि वह सोते हुए कोई दुःस्वप्न देखती मालूम होती है। भावुक कवि के लिए कितनी प्रेरणा है—निद्रा-निमग्न सुन्दरी के आँसू। परंतु सामर ने तो भावुकता का बध करके उसको अपनी आत्मा की गहराइयों में दफ़न कर दिया है। अब वह प्रकट रूप से कोई कोमल बात नहीं कह सकता।

सामर, अब ख़तरे से अपने आप को बाहर समझकर, और मेरी इच्छा से प्रभावित होकर, याद करता है कि वह अपनी प्रियतमा से इस

रविवार को नहीं मिला है और न उसके पास वह अपना पत्र ही पहुँचवा सका है। अम्गारो ने कदाचित् टेलीफ़ोन द्वारा उसके मकान पर उससे बातचीत करने की व्यर्थ कोशिश की हो। शायद कई बार। मुमकिन है कि किसी पुलिसवाले ने उसको उत्तर में डाटा और उसकी बेइज़्ज़ती की हो। अब जैसे ही कि ये लोग खूब चक्कर खाकर शहर में पहुँचते हैं, वह अपने साथियों से तत्काल अलग हो जाता है।

'तुम कहाँ जा रहे हो?'

'घर।'

'वहाँ पुलिस होगी। तुमको इस तरह अपने को पकड़ा देना ठीक नहीं है। तुमको छिपे रहना चाहिये।'

दूर से गोली चलने की आवाज़ आती है।

'किस लिए?' सामर ने हँसकर कहा—'चन्द्रमा के प्रति विश्वास के वोट पास करने को?'

तीसरा साथी मन्द स्वर में गम्भीरता के साथ कहता है—

'हम वृद्ध नहीं हैं और न हमारे बाल सफ़ेद हैं।'

'परन्तु अब जो कुछ हो चुका है उसके बाद हमें अलग हो जाना चाहिये।'

सब लोग अलग-अलग हो जाते हैं। वे वृक्षों के नीचे के अँधेरे में चले गये हैं जहाँ मैं उनका पीछा नहीं कर सकती। मेरे विचार में अब आज रात को कुछ होना नहीं है। परन्तु लामानशा की ओर ऐसी कौन-सी घटना घटित हो गई है जिसने मेरे प्यारे कवियों के शत्रुओं को इतना उद्विग्न बना दिया है? निस्सन्देह मुझे इस प्रश्न का उत्तर सिविल अस्पताल में या चील घर में मिलेगा। चलो, अब वहीं चलें। चूँकि आगे के वार्ड की छत मेरे मार्ग में बाधा देती है मैं खिड़की द्वारा प्रवेश करने में असमर्थ हूँ। आँगन में एक लम्बा पतला वृक्ष है जिसके सर पर एक भारी और काला ताज है। फ़र्श के पत्थरों पर काई जमी हुई

है। वे बड़े-बड़े तो हैं किन्तु छेदों से चलनी हो गये हैं। आवाज़ से मालूम होता है कि शवों के बक्स घसीटे जा रहे हैं। वे उनमें शवों को रखने जा रहे होंगे। अब हथौड़ों की आवाज़ सुन पड़ती है जिससे ज्ञात होता है कि संदूक खाली नहीं हैं। यदि ये श्वेत होते और इन पर श्वेत कुमुद बिखरे होते तो मेरे भद्र कवि करुणार्द्र कविताएँ रचते। उनके दिमाग़ नाज़ुक होते हैं! गली में एक वृद्धा काले कपड़े पहने हुए अस्पताल की दीवार से लगी हुई कराह रही है। बुढ़ापा बड़ा भयानक होता है। वह लोगों की कमर झुका देता है और वह बुढ़िया मेरी ओर दृष्टि उठाकर देख नहीं सकती। अब एक युवक उसके पास जाकर कहता है:

'मैं लियन्सिक्को विलाक़म्रा हूँ। आपकी पोती कहाँ है?'

'घर पर।'

अब बुढ़िया उससे अपना दुखड़ा रोने लगती है। किस तरह अस्पतालवालों ने उसको अपने पुत्र का मुँह देखने से वंचित रखा। वह एक ही साथ गालियाँ भी देती है, ईश्वर से प्रार्थना भी करती है, कुफ़ भी बकती है और अपमान भी करती जाती है। उसके बाएँ हाथ में माला है और उसने आधी फेर ली है। अपने दूसरे हाथ से वह अपने साए के अन्दर हाथ डालती है और कोई गोलाकार चीज़ बाहर निकालती है।

'मैं इसको कुतिया के इन पिल्लों में से एक के सर पर मारूँगी!'

यह एक छोटा-सा बम है। लियन्सिक्को बड़ी खुशामद से, उसको 'चची आइज़ाबेला' कहकर, उससे बम माँगता है। वृद्धा उसको बम दे देती है। अब यह स्पष्ट मालूम होता है कि वृद्धा को बम से कोई लगाव नहीं था और उसने लियन्सिक्को को इसी अभिप्राय से दिखाया था कि वह उस बम को उससे माँग ले। लियन्सिक्को शोक के साथ मेरी ओर देखता है और वृद्धा की प्रार्थना में बाधा देता है।

'बेचारी स्टार! वह भी कैसी अभागिन है! संसार में अकेली रह गई।'

'और मैं?' चची आईज़ाबेला चीख उठती है—'वह जीवन की सीढ़ी के ऊपर चढ़ रही है। सोलह वर्ष की अवस्था में चाहिये ही क्या—बस एक कंघी और आइना। लेकिन मैं क्या करूँ? अब मेरी कौन खबर लेगा?'

हल्लो! तीन नये और अरुण सितारे? इनकी गति देखकर अनुमान होता है कि ये हमारे यहाँ सात दिन ठहरेंगे। तीन नये दुमदार सितारे! हल्लो! सुनो—ओ उधर जानेवालो! तुम्हारे नाम क्या-क्या हैं?

——एस्पार्टको।

——प्रॉग्रेसो।

और तुम? तुम्हारा क्या नाम है?

——मैं जर्मिनल हूँ।

कामरेड सामर द्वारा 'कार्य' में भयंकर भूल

पाँच घंटे तक मैं एक कामरेड के मकान में पड़ा सोता रहा। खटमलों ने मुझे जगा दिया। मैं उठा और स्टार से मिलने के लिए उसके मकान की ओर चल पड़ा, जो वहाँ से बहुत क़रीब है। वहाँ पहुँचने से पहले मैंने उसकी आवाज़ सुनी—वह गा रही थी। अगले मकान के द्वार में खड़ा हुआ एक पड़ोसी उसका गाना सुन रहा था। वह बड़बड़ा रहा था—'और उसका बाप इस समय मुर्दा पड़ा हुआ है!'

मुझे घर में आते देखकर वह चुप हो गई और अपने मुँह पर हाथ रख लिया। मैं उससे यह बात नहीं कहना चाहता था कि उसकी इस हरकत से उसके पड़ोसियों को दुःख होता है। चची आइज़ाबेला अभी तक घर वापस नहीं आई थी। दादी के प्रति स्टार का भाव बिलकुल वैसा ही था जैसा कि माता का अपने शिशु के प्रति हुआ करता है।

मैंने उससे यह बात कही और यह भी याद दिलाई कि वृद्धा दादी है, परन्तु स्टार ने हँसकर उत्तर दिया कि उसकी दादी उसकी अपेक्षा कहीं अधिक 'बच्ची' प्रतीत होती है। तत्पश्चात् उसने अपने घुटने के बराबर हाथ लेजाकर कहा—

'बस इतनी बड़ी। कभी-कभी वह ऐसी ही मालूम होती है। इसी लिए जब वह मुझे बुरा-भला कहती है तो मुझे क्रोध नहीं आता।'

'वह तुम को क्यों डाँटती-फटकारती है?'

'इसलिए कि मैं जवान हूँ और मेरी खाल चिकनी और दृढ़ है।' मैंने उससे अपने साथ चलने को कहा। उसने मेरी ओर ग़ौर से देखा।

'क्या कोई 'कार्य' करना है?'

उसका मतलब था 'क्या कोई निर्दिष्ट काम करना है?'

मैंने कहा—'हाँ, परन्तु कोई खतरा नहीं है।'

'खेद!' उसने कहा, 'मुझे तो इन समाजवादियों की आँखों में काजल लगाना है।'

उसका तात्पर्य था उनको कारखानों से बाहर निकाल लाना। इसका अर्थ यह था कि वे लोग हड़ताल में सम्मिलित नहीं होंगे। मैं उसके बिस्तर पर बैठ गया! उसने एक गोल टोपी निकाल कर पहनी। फिर उसने वह उतार दी और फर्श के नीचे से एक छोटा प्लेटदार रिवालवर निकाला और उसको टोपी में लपेट लिया। तत्पश्चात् टोपी उठाकर वह मेरे सम्मुख खड़ी हो गई।

'मैं तो बिलकुल तैयार हूँ।'

'परंतु क्या तुम इस छोटे-से खिलौने का खेल जानती हो?'

उसने इस प्रश्न का उत्तर देने की परवा नहीं की। तदनन्तर मैंने फ़र्श के ऊपर से एक गुड़िया का कंकाल उठाया जिसकी आँखों से आँसुओं की जगह लकड़ी का बुरादा झर रहा था। मैंने उसकी एक टाँग पकड़कर कहा—

'और यह क्या है ?'

उसने मुझे बताया कि वह कपड़े के चिथड़ों और बुरादे से गुड़ियाँ बनाया करती है परन्तु वह किसी एक को भी पूरा न कर सकी, क्योंकि जभी वह पूरी होनेवाली होती थी वह उसे दादी को दिखाया करती। दादी हँसकर कह देती थी—'यह गुड़ियाँ नहीं है, मेंढ़की है।'

इस पर वह उसका अच्छी तरह निरीक्षण किया करती थी और उसको भी बुढ़िया की बात ठीक जँचती थी। वह उसको घृणा से एक तरफ़ फेंक देती थी और नई गुड़िया बनानी आरम्भ कर देती थी, परन्तु सबका परिणाम वही होता था। उसने द्वार पर आकर कहा—

'आठ वर्ष की आयु से मैं गुड़ियाँ बनाती आ रही हूँ ; परन्तु अभी तक एक भी अच्छी गुड़िया नहीं बना पाई।'

हम गली में जा निकले। वस्तुतः स्टार बड़ी मृदु प्रकृति है। किसी ने ज़रा कह दिया तुम्हारा कार्य मेंढ़की जैसा है और वह बस उसको एक दम मूर्खतापूर्ण और व्यर्थ समझने लग जाती है। जब चची आइज़ाबेला अपनी राय देना भूल जाती थी वह अपनी गुड़िया से प्रेम किया करती थी और सोचती थी अबकी बार यह ठीक बनी है। परन्तु मुझे तो इस बात से ज़्यादा खुशी होती है कि मेढ़कियों से स्टार घृणा नहीं करती है और उनके कठोर माँसल सौंदर्य से वह आकृष्ट होती है।

थोड़ी ही देर बाद स्टार कोई चीज़ भूल आने के कारण फिर मकान गई। वह हल्के बनफशई रंग का एक बड़ा-सा खत लेकर वापस आई। गत रात्रि को वह मेरा पत्र लेकर कर्नल के यहाँ गई थी। पहरे पर वहाँ जो सारजन्ट था उसने कुमारी अम्पारो का यह पत्र उसको दिया था। पत्र के तैयार रहने से यह अनुमान होता था कि जो घटना उस रात्रि को घटित हुई थी वह अम्पारो के लिए अप्रत्याशित न थी। उसका स्टार से मिलने न आना यह स्पष्ट बता रहा था कि

उसको किसी बात का डर नहीं था। मैंने पत्र बिना पढ़े ही जेब में रख लिया। हवा एक दम बदल गई। कदाचित् इसका कारण यह हो कि पौ-फटनेवाली थी। हम मानक्लोआ की ओर चल पड़े।

चूँकि मैं उसका झरोखा देखना चाहता हूँ, हमें अपने मार्ग से कुछ हटकर जाना पड़ेगा। खिड़कियों तक लाल ईंट की दीवार बेलों से लदी हुई है। कुछ बेलों ने खिड़की के एक ओर ऊपर तक फैल जाने का सफल प्रयत्न भी किया है। कितने ही सुनील पुष्प प्रातः वायु से पुलकित हो रहे हैं, ओस के बिन्दु उन पर मोतियों की तरह चमक रहे हैं। ऊषा एक सुन्दरी है, उसका मनोहर अरुण वर्ण है। वह लम्बी कृश और लावण्यमयी है। उसके सुनील नेत्र तेजोमय हैं। उसकी भुजाएँ भी वैसी ही मृदु, सरस तथा सुकुमार हैं। ऊषा सुन्दरी वसन्त काल में गाती है :

> वायु में देवदारु की सुगन्ध है,
> समीरण मई के सौरभ से भाराक्रांत है,
> वायु मे वह हँसता हुआ आया,
> वायु में वह गाता हुआ विदा हो गया,
> इस ललित प्रेम को हम किस नाम से पुकारें ?

मैंने उसका पत्र जल्दी से जेब में रख लिया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो सभी लोग जाग रहे हैं और मुझे खिड़कियों में से देख रहे हैं। हम कर्नल के मकान से आगे बढ़ गये। वह तो अभी शिशुवत् निद्रामग्न होगई होगी। वह इस अर्धचेतन अवस्था में कामदार लकड़ी और संगमरमर का एक सुंदर स्वप्न-सी प्रतीत होती होगी। स्टार ने मुझे तिरछी दृष्टि से देखकर कहा—

'तुम्हारी वाग्दत्ता बूर्ज़्वा है ना !'

परंतु सौंदर्य, विमल आचार, पवित्रता बूर्ज़्वा थोड़े ही हैं। वह एक बूर्ज़्वा घर में पैदा हुई है ; उसने मठ के उस छात्रालय में, जहाँ

सुसम्पन्न पिताओं की पुत्रियाँ ही प्रवेश पा सकती है, शिक्षा प्राप्त की है, परन्तु यह सब छोड़कर वह यौवन के उषाकाल में मेरी ओर भुजा पसार कर आई है। बूर्ज़्वाज़ी, पूँजीवाद तथा सामाजिक अन्याय से वह एकदम अनभिज्ञ है। वह उस सुंदर पुष्प की तरह है जो तने, डालियों और पृथ्वी में फैली हुई जड़ों के सम्बंध में बिलकुल अनजान रहता है। सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं की विषमताओं से अनभिज्ञ है। हमारा एक दूसरे से परिचय हुआ। उसने मेरी प्रेमाञ्जलि स्वीकार की, स्वयं उन्मत्त हो उठी। जो मैं नहीं जानता, दुनिया की ऐसी किसी भी चीज़ को जानने की उसने इच्छा नहीं की। हम दोनों ही बस एक दूसरे के संसार हैं। अपने संबंध में तो मेरा कुछ न कहना ही सबसे उत्तमहै। बारकों में प्रभातकालीन संगीत आरंभ हुआ। उसमें कितनी तरलता तथा कितना स्वर-साम्य था। कितना मोहक तथा विशुद्ध संगीत था यह, मानो हमारी कल्पना का झरोखा खोलकर अनंत का संदेश दे रहा हो! संगीत के इन कर्णमधुर स्वरों को मैंने कोसा। मेरे प्रेम के अतिरिक्त जो कुछ भी उसके कानों को प्रिय मालूम होता है, मैं उससे द्वेष करता हूँ। अपने प्रेम से ओत-प्रोत शब्दों के अतिरिक्त हर एक मधुर स्वर से! जो कुछ मेरे हृदय में उसके लिए है उसकी तुलना में यह सब सौंदर्य क्या है? किंतु इस संगीत के स्वरों में केवल लय और पवित्रता ही नहीं हैं, मध्य श्रेणी की चालबाज़ियाँ, उसकी अंधी और स्वच्छंद शक्ति, पूँजीवाद के मिथ्या गौरव के ठाट बाट, साज़ो-सामान भी हैं, जिनके साथ बूर्ज़्वा कौशल तथा स्वदेशानुराग का मिथ्या प्रलाप मिला हुआ है। वे सब चीज़े जो मेरे पीछे पड़ी हैं और कभी-कभी मेरा नाश करने की धमकी दिया करती हैं! यह संगीत उसको मुझसे दूर ले जाना चाहता है या मुझे ही पकड़कर उन्मत्त बना देना।

'क्या वह कर्नल की पुत्री नहीं है?'

मैं क्रोध से स्टार की तरफ़ मुड़ा।

'हाँ, है। परंतु इससे प्रयोजन? तुम इन बातों के संबंध में कुछ भी नहीं जानती हो।'

स्टार बुद्धिमत्ता के ढंग से मुसकरा दी। कदाचित् वह सब समझती है।

'मैं उसको जानती हूँ। वह अनन्य सुन्दरी है। परन्तु, प्रिय बन्धु सामर, तुम्हारे लिए नहीं है।'

'तुम उसके सम्बन्ध में क्या जानती हो?'

'अपने हड़ताली भाइयों के लिए मैं कभी-कभी मेस (भोजनालय) का बचा-खुचा खाने का सामान लेने बारकों में जाया करती हूँ। वे लोग भी जाया करते हैं, परन्तु जब-कभी मैं जाती हूँ तो वे जितना किसी पुरुष को देते हैं उससे दुगना-तिगुना मुझे दे देते हैं। वह सामान मैं भूखे भाइयों में बाँट देती हूँ। मैं नौकरों के ज़ीने से कर्नल के मकान में भी जाया करती हूँ।'

'क्या तुमने उसे देखा है?'

'उसी ने मुझे वे पुराने कपड़े दिये हैं जो मैं सबसे ज़्यादा जरूरतमंद कामरेडों को दिया करती हूँ। क्या तुमने फ्लोरियल को कभी ग़ौर से नहीं देखा! वह जो कोट पहने हुए है वह कर्नल गार्शिया डेलरायो ही का कोट है।'

यह सब मुझे बुरा लगता है। मेरे मित्र उसके पिता के भिखमंगे हैं। इस विचार से मेरे हृदय पर चोट लगती है। यह सब मेरे दिमाग़ में पहुँचा ही क्यों? अम्पारो मेरे लिए क्यों नहीं है, मैं इस प्रश्न को स्टार से पूछे बिना नहीं रह सका। वह मेरी ओर कुछ देर बराबर देखती रही।

'तुम अराजकतावादी हो। अथवा साम्यवादी हो। तुम गिर्जे की रस्म से तो विवाह करोगे नहीं और वह सब कुछ त्यागकर तुम्हारे साथ दुनिया भर की आफ़तें झेलने के लिए आएगी नहीं। तुम्हें भी यह अच्छी तरह मालूम है।'

उसके शब्दों की सरलता ने मुझे उद्विग्न कर दिया। मेरे सारे मृदु स्वप्नों और द्विविधाओं का यहाँ एक विवेकपूर्ण वाक्य में फ़ैसला हो गया। यह ज़रा-सी लड़की कभी बिना पूछे राय नहीं देती, परन्तु जब देती है तो बहुत ही सुलझी हुई। ऐसी विवेकपूर्ण राय जिससे मैं काँप उठता हूँ।

हम दोनों चुप-चाप चले जा रहे हैं। प्रातःकाल उसी संगीत से अब भी प्रभावित है और आकाश का धूसरवर्ण कम नहीं हुआ। मानक्रोआ के समीप पहुँचकर मैंने पूछा—

'प्रिय स्टार, तुम जीवन को क्या समझती हो?'

'भई, प्रश्न भी क्या किया है! मैं तो केवल इतना ही कह सकती हूँ कि मैंने इस विषय पर कभी विचार ही नहीं किया।'

मैंने रुककर उसकी आँखों में आँखें डालीं।

'क्या तुमने कभी यह नहीं सोचा कि जीवन ज़्यादा अच्छा या बुरा हो सकता है?'

उसने केवल कन्धे उचका दिये। सुनील आकाश की भाँति, उसकी नीली आँखों में भी एक तारा है। उसके नेत्र मृदु, सौम्य एवं विश्रान्तिपूर्ण हैं, मर्मभेदी नहीं। अब वह कहने लगी—

'तुम मुझे अवश्य मूर्ख समझ रहे होगे।'

'प्रिये, मैं तो कुछ भी नहीं समझता।' मैंने चलते-चलते कहा।

वह जानती है कि मैं 'कार्य' करने जा रहा हूँ और वह कह चुकी है कि वह मेरे साथ चलेगी। वह संसार के अन्त तक मेरे पीछे-पीछे चली जाएगी। पिछले उपांत से आगे हम बराबर नीचे उतरते जा रहे हैं। चूँकि हम 'केन्द्र' नहीं जा रहे हैं और हमारा काम एक उपांत में है जहाँ न तो रेल जाती है और न ट्राम, अतः ग्रामों में होकर जाना ही उत्तम है। सरिता के दूसरे तट पर विश्वविद्यालय की इमारतों ने इस भूप्रदेश में जान-सी डाल दी है। प्रायः एक घण्टे में हम एक

ऐसे नियुक्त स्थान में पहुँचते हैं जहाँ धातु की दो ध्वजाएँ हैं और एक विद्युत्-परिवर्तन केन्द्र है।

अब मैंने चारों ओर दृष्टि डाली। राजमार्ग कुछ फ़ासले पर था। समीप में दो इमारतें थीं। वहाँ पूर्ण एकान्त था और थी निस्तब्धता। सरिता के घुमाव पर जल इतना साफ़ है कि उसकी तली के कंकड़ स्पष्ट देख पड़ते हैं। सूर्य-किरणों के नृत्य से जल जगमगा उठता है।

'स्टार, क्या तुम जलपान कर चुकीं ?'

'नहीं।'

'तो क्या यहाँ स्नान करोगी ?'

'हाँ, परन्तु मैं अच्छी तरह तैरना नहीं जानती। तुम मेरा उपहास तो नहीं करोगे ?'

हम दोनों ने कपड़े उतारने शुरू किये। जब वह अपनी जरसी उतार चुकी तो मैंने सोचा कि मेरा प्रस्ताव ठीक नहीं था। किन्तु वह इतनी प्रसन्न थी कि मैं भी प्रफुल्लित हो उठा। जल, वायु, प्रकाश सभी उन्मत्त किये देते थे। सारे कपड़े उतार डालने से पहले हमने अपने सरों को भिगोया। तब मैंने अपनी क़मीज़ और जाँघिया उतारा और पानी में कूद पड़ा। जल शीतल था, परन्तु माघ-पूस की अपेक्षा कम। मैंने जल का आलिङ्गन किया, उससे खेलता रहा। धार के विरुद्ध तैरा। मुझे अपना शरीर हलका और फ़ुरतीला मालूम होने लगा। मैंने अभी तक मुँह फेर कर नहीं देखा था कि मुझे पीछे से पानी में छपछप और हँसने का शब्द सुन पड़ा। भुजाओं और पैरों से चमकता हुआ जल उछालती हुई वह मेरे पास आ पहुँची। हाँफते हुए हमने बात की।

'क्यों, तुम तो तैरना नहीं जानतीं ?'

वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। वह इस कला में मुझसे किसी तरह कम न थी, बल्कि उसके तैरने का ढंग ज़्यादा अच्छा था।

'यदि तुम जल की अपेक्षा स्थल पर ज़्यादा अच्छा 'कार्य' न कर

सके तो मुझे कमेटियों में तुम्हारी निन्दा करनी पड़ेगी। ठीक है ना ?' यह कहती हुई वह मुझसे आगे निकल गई।

मैं मुश्किल से उसके पास पहुँच सका। बराबर पहुँचकर, मैंने भी अपने अच्छे से-अच्छे ढङ्ग से तैरने का प्रयत्न किया।

'वह रहा मैड्रिड। एक घण्टे में उनको मालूम हो जायगा कि कोई मजदूर काम पर नहीं आया है और बूर्ज्वा लोगों को ताज़े टोस्ट के बग़ैर नाश्ता करना पड़ेगा। हड़ताल धूम से होगी। समाजवादी भी सम्मिलित हो रहे हैं।

स्टार हँसी और उसने भिखमंगे की तरह मिनमिनाकर कहा—

'बेछने आटे की रोटी का एक टुकड़ा इस ग़रीब बूर्ज्वा को भी।'

'क्योंकि वह बेचारा मधु-प्रमेह से कष्ट पा रहा है।' मैंने भी कहा।

'क्या मधु प्रमेह के रोगी उसे खाया करते हैं ?'

'हाँ।'

मैं जल के ऊपर चुपचाप बहने का प्रयत्न करता हूँ, परन्तु धार मुझे खींच रही है। मैं दौड़ना आरम्भ करता हूँ, मेरा सन्तुलन बिगड़ जाता है और मैं फिर तैरने लगता हूँ। वह किनारे पर पहुँचकर काँपने लगती है। मैं पूछता हूँ सरदी तो नहीं लग रही है। वह हाँफती हुई कहती है, नहीं। वह संगमरमर की एक सुन्दर मूर्ति-सी प्रतीत होती है। उसके पैरों की उँगलियाँ, कुचों के अग्रभाग और नाक का सिरा, सभी लाल हो रहे हैं। देखने में वह इतनी दुबली-पतली है, परन्तु उसमें गज़ब की ताक़त भरी हुई है। मैं चारों ओर दृष्टिपात करता हूँ। एक भी मनुष्य नज़र नहीं आता। भला इस समय यहाँ कौन आएगा। यहाँ के खेत भी बे-जुते पड़े हैं। वह मेरा भाव समझ जाती है।

'यदि बूर्ज्वा हमें देख पायें तो पागल समझें।'

'या हमारी छोटी-सी अराजकवादिता देखकर स्वयं पागल हो उठें।'

वह किनारे से हँसकर कहती है—

'या तुम्हें देख कर ही। कौन जानता है बूर्ज्वा किस समय क्या कर बैठें।'

मैं समझता हूँ कि वह मुझे उल्लू बना रही है। यही मालूम करने के खयाल से उसकी ओर देखता हूँ। वह एक पाँव के तलवे से कीचड़ छुड़ाने में व्यस्त है। जो कुछ उसने कहा है, उसका उसको कुछ ध्यान नहीं है, यही मालूम होता है। फिर भी मैं ठहाका मारकर हँसता हूँ। पैरों के ऊपर की मिट्टी साफ़ करते हुए, वह कहती है—

'बूर्ज्वा कैसे गदहे होते हैं!'

मैं उससे दौड़ लगाने या पानी में चले आने को कहता हूँ। वह तैरने लगती है। अब सूर्य उठकर हमारी ओर आ रहा है। उसकी किरणें इस समय धातु की पताका और विद्युत् परिवर्तन-पत्र पर पड़ रही हैं। अतः शीघ्र ही वह हमारे सर पर आ पहुँचेगा। मैं तैरता हुआ दूसरे किनारे पर पहुँचता हूँ। लगभग चौबीस गज़ का फ़ासला है। मैं लौट आता हूँ। मैं सोचता हूँ स्टार यह सब किस तरह जान गई, और फिर जानकर भी न उसमें कुतूहल है और न रहस्यमयता का भाव। वह मेरी बूर्ज्वा प्रेमिका से कितनी विभिन्न है। अम्पारों का खयाल है कि शिशु का जन्म चुम्बन से होता है। एक दिन उसने किसी समाचार पत्र में पढ़ा 'सजातीय मैथुन।' उसने पूछा—वह सभी बातें मुझसे पूछा करती है—मुझसे उसका अर्थ और मुझे मजबूरन उससे झूठ बोलना पड़ा। मुझको उससे सच बोलना चाहिये था; परन्तु मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि ऐसा करने से मैं उसको बिगाड़ने का अपराधी होऊँगा और फिर, अगर मैं बता भी देता, तो वह मेरी बात को समझ न पाती। मैंने उससे झूठ बोला। कभी तो यह झूठ मुझे बिलकुल नहीं खलता–उसके साथ मेरा सम्बन्ध सुन्दर झूठों की एक शृङ्खला मात्र है–परन्तु कभी-कभी मुझे ऐसा करना

बेहद अखर जाता है। यदि मैं करोड़पति होता—क्या यह संभव था? —तो मैं उसको ऐसे देश में ले जाता जहाँ की भाषा वह न जानती होती और, पिगमेलियन की तरह, मैं वहाँ उसका चरित्र साँचे में ढालता। मैं ऐसा प्रबन्ध करता कि अपने समस्त जीवन में वह सौंदर्य के अतिरिक्त कुछ और जान ही न पाती और उसका जीवन आनन्द का एक अनन्त निद्रालस-पूर्ण स्वप्न होता। उसको सदैव नैतिक बाल्यावस्था में रखता। मेरे स्वर के अतिरिक्त वह कोई आवाज़ न सुनती, उन बातों के सिवाय जो मैं उसको स्वयं बताता वह जीवन की सभी बातों से अनभिज्ञ रहती। मैं भी कैसा कलाकार होता!

मैं किनारे पर बैठ जाता हूँ। ऊपर चढ़ते हुए मेरे पैर कीचड़ से सन जाते हैं जो मुझको धोने पड़ते हैं। स्टार फिर सरिता में चली गई है। जल के अन्दर उसकी खाल कैसी मुलायम मालूम होती है। मछली की तरह वह कैसी अन्दर ही अन्दर नीली छाया के देश में घूमती फिरती है। अम्पारो जैसी लड़कियों के अस्तित्व से मेरे विश्वासों पर धक्का लगता है, मैं सोचता हूँ। मेरी दृष्टि में बूर्ज्वा-वर्ग की सरलता और पवित्रता ज्ञानहीनता मात्र है, जो आज एक त्रुटि है और कल एक अपराध समझी जायगी। मेरी आशाओं के अनुकूल समाज में केवल दो दण्डनीय अपराध होंगे—बीमारी और ज्ञानहीनता। स्वच्छता और रोगहीनता का अभाव शरीर और मस्तिष्क दोनों में। औरों के लिए हानिकारक, अतएव दण्डनीय। मेरी नन्हीं अपराधिनी, मेरी प्रियतमा! और कैसा न्यायशील जज, मैं! और स्टार? वह अब बिना तैरे जल के ऊपर चुपचाप बह रही है। मुझसे बहुत ज्यादा अच्छी तरह। यद्यपि वह अभी लड़की ही है, फिर भी उसकी टाँगें और बाँहें सुडौल हैं, उसके नितम्ब सुकुमार और गोल; यद्यपि वह हलकी है तो भी काफ़ी पानी हटा देती है। स्टार एक सच्ची कामरेड है। मैं उसको एक स्फटिक-मूर्ति की तरह देखती हूँ, मेरी इन्द्रियों पर इसका कोई

प्रभाव नहीं पड़ता। वह अभी रमणी नहीं है ; उसके रक्त में अभी प्रेम की गुदगुदी नहीं है। भविष्य में, उसके पास प्रेम किस प्रकार आएगा? किनारे पर जल निष्प्रभ है, उसके बाद चमकीला हिस्सा है और नली में वह बिलकुल सफ़ेद और पारदर्शक है। रेल की सीटी की आवाज़। तीन बार। क्षितिज मुड़कर रास्ता तैयार कर देता है। स्टार, होठों से नहीं, हलक़ से सीटी की नक़ल उतारती है और अपने तीव्र स्वर में कहती है—

'उत्तर से एक्सप्रेस आ रही है।'

तत्पश्चात् वह मुझे बताती है कि दक्षिण रेलवे के बेकार मज़दूर मालगाड़ियों को लूट-लूटकर अपना गुज़ारा कर रहे हैं। ऐसी बातों के प्रकाशन में उसे बड़ा आनन्द मिलता है—एक निरामय आनन्द जिसको क्लांत, कृपण और प्रतिगामी बूर्ज्वा ने सदा के लिए खो दिया है। अब स्टार जल में से मुझको आज्ञा दे रही है—व्यायाम करो।' मैं शीताकुल हूँ। मैं चाहता हूँ जल्दी से हमारे ऊपर धूप आजाय। अभी कुछ मिनटों की देर मालूम होती है।

'तुम एक सुन्दर मछली हो!' मैंने उससे कहा।

'तो क्या तुम मेरा तमाशा देख रहे हो?'

'हाँ।'

पानी से निकलकर, दोनों हाथ नितंबों पर रक्खे हुए, वह सीधी मेरे समीप आती है—

'तो अब मैं नहीं तैरूँगी।'

वह मुझे बताती है कि लड़कपन ही से उसको जल से बड़ा प्रेम था। एक गाँव में रिश्तेदारों के साथ वह गर्मियाँ व्यतीत किया करती थी। ग्रामीण वृद्धाएँ, चाहे वह कितनी ही निर्धन क्यों न हो, पुराने खयालात की बुर्ज़्वा होती हैं। स्टार आठ वर्ष की थी। एक दिन वह गाँव के कम उम्र आवारा लड़कों के साथ सरिता के कुंडों में स्नान

करने गई। लोगों ने उसको एक दिन नहाने के बाद, बग़ल में कपड़े दबाए हुए, बिलकुल नंगा देख पाया। अपने बाल-मित्रों से सुने हुए गीत को वह ख़ूब ज़ोर से गा रही थी :

बड़े दिन की सुबह ईसा का जन्म हुआ।

आने दो उसी दिन को, तो मैं अपने नितंब ढकूँगी।

वृद्धाएँ क्रोध में उसके नितंबों पर थप्पड़ और जूते मारती हुई घर तक ले गईं, और कहने लगीं 'देख लेना, यह बिगड़ जाएगी ज़रूर'। उन्होंने स्टार को एक सप्ताह तक घर में बंद रक्खा। जब जर्मिनल को इस बात की ख़बर हुई तो वह स्टार को लिवाने को गया, सम्बन्धियों से झगड़ा हुआ और हमेशा को नाता टूट गया। स्टार आवारा लड़की नहीं है, परंतु उसको देखकर पहले कुछ आश्चर्य-सा होता है। उसकी उपर्युक्त बातें उसके बिगड़ने का लक्षण नहीं हैं, बल्कि उसके अच्छे स्वास्थ्य और विनोदशीलता का स्वाभाविक परिणाम हैं। अब सूर्य की किरणें हम तक आ पहुँची। लो, अब यह अंतिम ग़ोता है, धूप में शरीर सुखाने से पहले। स्टार के सारे बाल पानी में शराबोर हैं और उसका शिर एक चिकने, कच्चे फल जैसा प्रतीत होता है, अथवा मानो कोई केशहीन शिशु हो। किंतु वह मुझसे कहती है कि उसके पास छोटी सी एक कंघी है जिससे वह अपने और मेरे, दोनों के, बाल संवारेगी। जल से बाहर आकर, मेरी कमीज़ से पाँव पोंछकर हम दोनों मोजे पहनते हैं। हम अब धूप में खड़े होकर शरीर सुखाने लगते हैं। फिर हम इधर उधर की बातें करने लगते हैं—'जब बड़ा दिन आएगा तो मैं अपने नितंब ढकूँगी।' स्टार बैठना चाहती है। मैं उसके लिए अपनी कमीज़ और जाकट बिछा देता हूँ। वह लेट-सी जाती है। रह-रहकर वह अपन सिर हिला रही है जिससे मेरे ऊपर छींटें आते हैं। साथ ही वह हँस पड़ती है। मैं उसकी एक टाँग उठवाता हूँ ताकि मैं अपनी भावी पत्नी की चिट्ठी जाकट की जेब में से निकाल सकूँ। पत्र निकालने में उसको

औंधा हो जाना पड़ता है और दूसरी ओर की जेब से एक पेंसिल गिर पड़ती है।

'एक बूर्ज्वा का पत्र पढ़ने के लिए तुम एक कामरेड को कष्ट देते हो।' स्टार उलहना देती है।

'मेरी प्यारी, मैं उसको पढ़ूँगा नहीं।'

मैं उसकी बग़ल में बैठ जाता हूँ। चारों तरफ़ देख-भालकर लिफ़ाफ़े की पीठ पर मैं कुछ वक्र रेखाएँ खींचता हूँ। तत्पश्चात् एक सीधी रेखा और कुछ और रेखाएँ। मैं इस भू-प्रदेश का नक्शा बना रहा हूँ। एक छोटा-सा स्केच जिसमें ध्वजाएँ, नदी और विद्युत् परिवर्तन केन्द्र जहाँ भारी विद्युत् धारा सनसना रही है। यहाँ-वहाँ मैं संख्याएँ लिखता जाता हूँ। सरिता का पार इकत्तीस गज़ है और वह लगभग चार फ़ीट गहरी है। यद्यपि प्रवाह तेज़ है तो भी पार करना आसान है। बाँए मोड़ पर खड़ा हुआ स्काउट चारों ओर तीन मील तक देख सकता है। स्टार ज़रा ऊपर उठती है—

'क्या तुम मेरा स्केच (रेखा-चित्र) बना रहे हो?'

मेरे कन्धे पर हाथ रखकर वह मेरी भुजा के ऊपर से देखती है।

'यह तो नक्शा है। दरिया है और ध्वजाएँ।'

वह मेरे कन्धे पर हाथ मारकर कहती है कि मेरा शरीर खुश्क हो गया है और यदि मैं अब कपड़े पहनना चाहूँ तो वह मुझे कपड़े दे दे। परन्तु जिस बैठक से मैं स्केच बनाने बैठा था उससे मेरी नाभि में पानी भर गया है। सूर्य की ओर मुख करके मैं ज़ोर से हिलता हूँ। स्टार हँसकर चिल्लाती है—

'सीटी! सीटी!'

वह मेरे पेट पर उँगली फेरती हुई नीचे ले जाती है और मेरी नाभि दबा देती है। उसी क्षण एक इंजन सीटी देता है। मेरी तौंद मानो देश का खतरे का बटन है। जब मेरी नटखट सहचरी ने उँगली

हटा ली तो इंजन भी चुप हो गया। वह उलझन में पड़कर, इस रहस्य को समझने के लिए चारों ओर दृष्टि दौड़ाती है। वह मेरी तोंद फिर दबाती है और फिर भूभाग के पूर्व से पश्चिम तक इंजन की सीटी बज उठती है। हँसी न रोक सकने के कारण हम दोनों ठहाका मारते हैं। मैं उससे कहता हूँ कि यह बात आश्चर्यजनक नहीं है। एक नग्न मनुष्य देश का रक्षक है। इंजन और देश एक ही चीज़ के भाग हैं और इसके अतिरिक्त जब मैं छोटा था तो मुझे भाप के इंजन से सचमुच बड़ा प्रेम था।

'ना भाई, सो मेरी बात नहीं?' उसने कहा, 'मुझे तो ट्रामवे से प्रेम है। तुम नहीं जानते कि मुझे यह सोचकर कितना दुःख होता है कि ट्रामवे का स्टाफ़ सुधारक दल में है।

हम धूप में कपड़े पहनते हैं।

विश्वासघाती मज़दूरों के विरुद्ध पिकेटिंग करने के लिए उसको आठ बजे फैक्टरी के फाटक पर पहुँच जाना है।

मुझे भी काम है। हम सेगोविया गेट से होकर वापस आते हैं। हम बार में जलपान के लिए ठहर जाते हैं। क़हवे और दूध का एक-एक प्याला पीते हैं और कुछ विस्कुट खाते हैं। भूखे रह जाने के कारण फिर दूसरी बार वही एक-एक प्याला और बिस्कुटें। बिल चुकाने के बाद मेरे पास कुल छः पेंस रह जाते हैं। अगर उस पत्र में जिसके लिए मैं लेख लिखा करता हूँ, कल मेरा लेख नहीं निकलेगा तो मेरे लिए बड़ी कठिनाई का सामना होगा। अगर लेख निकला तो इसका यह अर्थ होगा कि हड़ताल पूरी नहीं हुई है और यह कि कम्पोज़िटर अब भी काम कर रहे हैं। यह उससे भी बुरी बात होगी। अच्छा, बस! मुझे इस विषय पर सोचना नहीं चाहिये। स्टार को बहुत जल्दी है। आधी बिस्कुट कुतरती हुई फ़ैक्टरी की ओर अग्रसर हो जाती है। जब मैं अकेला रह जाता हूँ तो एक खिड़की के पास बैठकर अपनी प्रेयसी

का पत्र निकालता हूँ। मैं मज़दूरों के अन्दर जाने और बाहर आने की आवाजें सुनता हूँ। मैं उनकी बातें सुनता हूँ। एक मज़दूर के हाथ में घोषणा-पत्र है, वह उसको ज़ोर से पढ़ता, बहस करता और उसको ऊँचा उठाकर हिलाता है। लोगों का ध्यान हड़ताल की ओर आकृष्ट हो रहा है। एक शोफ़र आकर कहता है कि वह अपनी मोटरकार पर ताला लगाने जा रहा है और यह कि 'केन्द्र' में सिंडीकेटवाले खूब काम कर रहे हैं। अब गली में चीखें सुन पड़ती हैं और लोग पीछे मुड़कर भागे जा रहे हैं। हल्ला होता है। एक नानबाई ने दुकान खोलने का दुस्साहस किया है। हड़तालियों की एक टोली यहाँ आ पहुँची। उन्होंने दुकान की खिड़की पर पत्थर फेंके। वे धक्के दे रहे हैं, ठोकरें मार रहे हैं और गालियाँ दे रहे हैं उस नानबाई को। बार का मैनेजर कह रहा है—कपाट बन्द कर दो और केवल एक दरवाज़ा अधखुला रहने दो। इस वक्त पत्र पढ़ना कठिन है, किन्तु मैं एक बार पढ़ने की कोशिश करता हूँ और तिरछी लिखावट, कोमल शब्दों तथा वेदनापूर्ण भावों से अपने हृदय को सांत्वना देता हूँ। चूँकि कल हम लोगों की भेंट नहीं हुई थी, पत्र पर जहाँ-तहाँ आँसुओं के धब्बे भी हैं। काग़ज़ के दो तख्ते हैं। वह मुझे बताती है कि वह मेरे ही 'विचारों' की है और यह कि उसके विवाह के कपड़ों के अन्तिम भाग पर जो अब तैयार किया जा रहा है, लगभग ५००) खर्च होंगे और उसमें जो सामान लगेगा और काम होगा उससे कितने ही ग़रीबों का पेट भरेगा—मसलन दर्जियों, कशीदा काढ़नेवालों इत्यादि का। 'मेरा ख़याल है कि इस बात से तुम्हें ख़ुशी होगी।' 'आज रात को मुझे फ़ोन पर बुलाना। यदि आपकी इच्छा हो तो रायलटी सिनेमा चलियेगा। पिताजी ग़ड़बड़ की आशंका से मुझे वहाँ जाने देना नहीं चाहते, परन्तु कार द्वारा वहाँ पहुँचने में कितनी देर लगेगी। और आप फ़ोन पर कह दें कि वायुमंडल शांत है। यदि कुछ गड़बड़ भी हो जाए, सम्भव

है वे लोग सिनेमा में घुसते ही प्रकाश बुझा देंगे, आप अँधेरे में अपनी जगह बैठकर पढ़ने का ढोंग रच देना जिससे बदमाश आपको पहचान न सकें।' करुणा तथा चिंता से पूर्ण 'दो पृष्ठ।' मैं सुनती हूँ कि आप क्रान्ति करने जा रहे हैं। मुझे डर है कि कहीं आप मुझे कम प्रेम न करने लगें। यह तो मैं पहले ही से जानती हूँ कि आपके हृदय में पहला स्थान क्रांति का है, दूसरा मेरा। यह कहने की आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती कि मेरे विचार और आपके विचार एक ही हैं और यह बात यहाँ भी सब लोग जान गये हैं। पिछले दिन पापा ने मुझसे हँसी में यह बात कही थी; किन्तु मैं जानती हूँ कि उनका भाव गम्भीर था और मेरे प्रिय ल्यूकस, तुम्हें इसका विश्वास ही नहीं होता!' उसकी उद्विग्न आँखें, धड़कती हुई छाती, आँसू पोंछने के लिए हाथ से क़लम रख देना,—उसका यह करुण-चित्र मेरी आँखों में फिर रहा है। और मेरे समीप रहने की उसकी उत्कट आकांक्षा मेरे हृदय को मसोसे डालती हैं। मैं तन्मय होकर उसका पत्र पढ़ रहा हूँ। काफी की मशीन की सीटी मुझे चौंका देती है। मैं स्वभावतः अपनी नाभि के ऊपर से पेटी ज़रा ऊँची कर देता हूँ—और लो वह सीटी बन्द हो गई।

मैं पत्र समाप्त कर देता हूँ। गली में उद्वेग बढ़ता जा रहा है। एक गोली भी छूटती है। मेरे सर में खून चक्कर खाने लगता है। बाहर जो शान्ति और उल्लास है वह रविवार की मामूली सविच्छेद शान्ति और सजीवता है। परन्तु गोली तो लाल रविवार की परिचायक है! और यह पत्र! यह अफ़ीम के सत का इंजेक्शन जो मैं नेत्रों द्वारा खुद लगा रहा हूँ! बूर्ज्वा प्रेम! मैं लिफ़ाफ़े को तोड़-मड़ोर गोली बाँधकर, फेंक देता हूँ। एक व्यक्ति उगालदान पर थूकने का बहाना करके इस गेंद को उठाकर अपनी जेब में रख लेता है। इसके बाद मुझे होश-सा आता है। मुझे पत्र पढ़ने से नशा हो गया

था। मुझे यह खबर ही न थी कि मैं क्या कर रहा हूँ। जब होश आया तो मुझे अत्यन्त क्षोभ और वास्तविक भय के साथ याद आया कि मैंने...

दूसरा इतवार

विद्रोह फैलता है

निंदा का वोट—फिर भी अभिमुख

फ़ुलबूट की पट्टी में मैं अपना रिवालवर रखता हूँ। उसके बाहर निकले हुए हैन्डल में एक डोरा बँधा हुआ है जिसको मैं पेटी में बाँध लेता हूँ। पतलून की दाहिनी जेब में एक काफ़ी बड़ा छेद बना रखा है, डोरा खींचते ही जिसके द्वारा रिवालवर हाथ में आ जाता है। खतरे के वक्त मैं डोरे को भी बूट की पेटी में डाल देता हूँ। पुलिस तलाशी लेती हैं परंतु उसको रिवालवर नहीं मिलता। यह एक पुराना चकमा है। कई और भी हैं। किन्तु चूँकि यह कभी विफल नहीं हुआ है, मैं इसी को तरजीह देता हूँ।

कामरेडों को हिदायत की गई थी कि वे निःशस्त्र रूप से सड़कों-गलियों में न घूमें। शस्त्र ज़रूर रक्खें, किन्तु भम्भड़ में घबड़ाकर उनका अंधाधुंध प्रयोग भी न करें। यह बड़ी दूरदर्शिता की बात थी। आज

हम बिना हथियार के सड़कों पर नहीं जा-आ सकते, क्योंकि बहुत-से उच्छृङ्खल आवारागर्द भी हमारे पास भीड़ लगाए हुए हैं। मुझे खूब याद है कि जब मैं बेकार था और दिन-रात यूँही गलियों में मारा-मारा फिरता था तो न तो मुझे इस बात का ध्यान रहता था और न कोई परवा होती थी कि मैं क्या कर रहा हूँ। मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि मैं कोई विभिन्न प्रकार का आदमी हूँ जिसका सारा संसार विरोधी है। यह मेरा बड़ा बुरा ज़माना था! किंतु रविवार का दिन सबसे खराब हुआ करता था। सभी आदमी खाना खाते हुए देख पड़ते थे और पेट भर कर पार्कों में हवा खाने जाते थे और मैं भूख का मारा सारे शहर में चक्कर लगाता फिरता था, किन्तु मेरे नसीब का न किसी मेज़ पर खाना था और न कोई कुर्सी ही जहाँ मैं ज़रा देर बैठकर दम ले सकता। मकानात मेरे मार्ग में बाधा मात्र थे और सूर्य मेरे मुख को झुलसाए देता था। बिलकुल नारकीय समय! एक दफ़ा जब मैं बिलकुल बेजान-सा हो गया तो मैंने इस प्रकार बनकर चलने का प्रयत्न किया मानो मैं किसी काम से जा रहा था, परंतु लोग फ़ौरन ताड़ गये कि मैं बेकार घूम रहा था। जब मुझे कोई आदमी अकेला नज़र आता था तो मेरा हृदय द्वेष से जलने-सा लगता था। जिस बात से मेरे दिल पर सबसे ज़्यादा चोट लगती थी वह यह थी कि बूर्ज़्वा लोग मुझे फटेहाल और भूखा देखकर अपने सुख से अधिक सुखी होते थे। फिर मैं कहीं बेंच पर बैठकर किसी पर हमला करने या कहीं डाका डालने की तरकीब सोचा करता। वह आदमी, जिसको दुनिया में आकर आगे-पीछे बाँधने के दो चिथड़ों के सिवाय कुछ मिला ही न हो, मज़दूरी करने, डाका डालने या भीख माँगने के अतिरिक्त कर ही क्या सकता है? मुझे काम कहीं मिलता नहीं था, और मुझे भीख माँगना आता नहीं था। फिर यदि मैं इस दुर्दशा में हर दो-चार घंटे बाद किसी नई जगह डाका डालने की तरकीब सोचा करता था तो इसमें किसी को क्या आश्चर्य

हो सकता है ? परंतु यह सब कोरी कल्पना ही होती, मैं करता-धरता कुछ भी न था। आवारा लोगों के कोई नियत विचार नहीं हुआ करते और एक निहत्था हड़ताली का हाल शहर में ऐसा ही होता है जैसा कि किसी आवारागर्द का, किंतु हम इस मुसीबत से बचे रहे। हम परिषद् के लोग, आकाश की आँतें निकाल लाने की हिम्मत रखते हैं—यह देखने के लिए आया कि वहाँ फ़रिश्ते हैं या सुगन्धित धूप के बम, और यह कि क्या सचमुच भविष्य की पताका शिशु ईसा की मैली गुदड़ी ही की बनाई जायगी !

हमने संघों की सभा में सामर पर निन्दा का वोट पास किया है। मैंने प्रस्ताव पेश किया था और यह कामरेड की सबसे पहली बड़ी भूल थी। अगर वह खुद को सँभालेगा नहीं, तो वह हमारा स्नेह-भाजन नहीं रहेगा। क्या मैं उससे अब भी क्रुद्ध हूँ ? तो मुझे इसका ज्ञान नहीं, परन्तु इतना स्पष्ट था कि यदि मैं वह प्रस्ताव न उठाता तो कोई न कोई दूसरा ऐसा अवश्य करता। उसके अपराध के परिणाम स्वरूप हमारी कल की 'सेवोटेज' (कल-कारखानों के औज़ार आदि बिगाड़ने) की योजना का कुछ न कुछ अंश ज़रूर विफल रहेगा। कैसी भारी भयङ्कर भूल ! आज्ञानुसार उसने भूभाग का रेखा-चित्र बनाया और उसको भोजनालय के फ़र्श पर फेंक दिया। जहाँ से उसको, मालूम तो यही होता है, किसी पुलिस वाले ने उठा लिया। और अब उसका कोई इलाज भी तो नहीं ! कभी कभी ज़रा-सी एक बात से, दम-भर में सारा बना-बनाया खेल बिगड़ जाता है ! उस विद्युत्-परिवर्तन् यंत्र पर ज़रूर पहरा लगा दिया जायगा। यही नहीं, मुसीबत तो यह है कि पुलिस यह अनुमान अवश्य कर लेगी कि हम केवल एक ट्रांसफार्मर (विद्युत् परिवर्तन यंत्र) ही को नहीं बिगाड़ेंगे, बल्कि उन सबको जो नगर को प्रकाशित किया करते हैं और वे ग़ालिबन अब सभी पर पहरे बैठा देंगे। इससे अधिक निन्दनीय बात और हो ही क्या सकती थी ?

संभव है इस संबंध में किसी कामरेड को अपने प्राण तक गँवाने पड़ जाएँ, और सारी आफ़त तो यह हुई कि सारी योजना ही का सत्यानाश हो गया। सामर ने सचमुच बड़ी मूर्खता की। शायद हम लोगों को उस पुलिसवाले का पता लग जाय और हम किसी तरह उसको वह स्केच थाने में ले जाने से रोक दें। इसमें हम कोई कसर उठा न रखेंगे। सामर ने उसका हुलिया बताया है और तीन कामरेड उसकी खोज में भेजे गये है, किन्तु मुझे भय है कि वह उनके हाथ न आएगा। सामर इस खोज को निरर्थक समझता है। और वह मुझसे और बेरोज़गार कमेटी से प्लाज़ा मेयर की एक मधुशाला में दस बजे मिलने का वायदा करके खिसक गया। बेकार लोग साढ़े दस बजे उस तरफ पहुँचेंगे। देखें वहाँ क्या गुल खिलता है।

अभी तक तो हड़ताल ख़ूब ज़ोरों पर है। समाजवादी भी हमारे साथ हैं। सारे शहर का रंग एक नज़र से मालूम हो जाता है। आज रात को हड़ताल आम हो जायगी। कल रात हमारी सिंडीकेटों की ओर से एक डेपूटेशन वैधानिक सुधारकों की सेवा में उपस्थित हुआ था, परन्तु उन लोगों ने मिलने से इनकार कर दिया। आज उन लोगों ने दो घोषणा-पत्र निकाले हैं जो पुलिस द्वारा वितरण किये जा रहे हैं। उनमें मज़दूरों को यह सलाह दी गई है कि वह ग़ैरजिम्मेदार सलाहकारों की बातों पर कान न दें जो उनको बरबाद करने पर तुले हुए हैं। किन्तु ये लोग ऐसे गदहे हैं कि पुलिस द्वारा पर्चे बँटवाने को सहमत हो गये। पुलिस के हाथों में इस प्रकार के पर्चे का खुला अर्थ है— ग़द्दारी और मक्कारी। उनके इस काम पर उन्हीं की सिंडीकेटों के सदस्य स्वयं 'छी-छी' कर रहे हैं और उसका नतीजा भी कुछ नहीं हुआ। सारी टैक्सियाँ बन्द हैं। नगर के 'केन्द्र' में किसी दुकानदार को दुकान खोलने का साहस नहीं है। सार्वजनिक कार्य-विभाग (पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट) म्यूनिसिपल सर्विस सहित, बिलकुल

बन्द हैं। वेटर ग़ायब हैं। पल्लेदार, मैकान सजानेवाले, धातु शोधक, आराकश, बढ़ई, पहले की तरह, सब के सब घर बैठे हैं। मालिक तक काम पर आनेवाले नौकरों को निकम्मे गुलामों की तरह आत्माहीन समझ रहे हैं। सड़कों पर शान्ति का राज्य है। चहल-पहल बहुत कम है। किसी-किसी लाइन पर ट्रामें चल रही हैं। उनमें सिर्फ सिविल गार्ड आ-जा रहे हैं, क्योंकि जनता में उनपर चढ़ने का साहस नहीं है। हम अपने तीन सहयोगियों की मृत्यु पर सारे शहर को मातम मनाने के लिए मजबूर कर देंगे। आगे के लिए हमें इनको पाठ पढ़ाना होगा। अब मैं पुअरटा डेल सोल में आ पहुँचा। बाईं तरफ़ के कोने में, बेरोज़गार राजमज़दूर, रोज़मर्रा की तरह, आज भी धूप खा रहे हैं। सड़कों पर बूर्ज्वाजी बहुत ही कम दिखाई दे रहे हैं। मज़दूरों की संख्या बहुत बड़ी है। उनकी चाल ढाल में सन्देह और मनोरञ्जन का जो मिश्रण देख पड़ता है, वह उनके हड़ताली होने का परिचायक है। गलियों पर अभी तक किसी का अधिकार नहीं हुआ है। देखें किस की विजय होती है। सिविल गार्ड, सार्वजनिक रक्षादल तथा अभिघात पुलिस के आदमी सार्वजनिक इमारतों के दरवाज़ों में लुके-छिपे मौजूद हैं, और अपने मामूली स्थानों में भी वे दरवाज़े आधे बन्द किए हुए हैं। गृह-विभाग में भी आज काले नक़ाब दिखाई देते हैं, ठोड़ी के तस्मे चढ़े हुए हैं, उक़ाब-जैसी तेज़ आँखें हर एक दिशा में घूर रही हैं। यद्यपि मैड्रिड के बाहर किसी प्रकार के दंगे होने का कोई कारण अथवा लक्षण नज़र नहीं आ रहा है, तो भी टेलीफोन बराबर बज रहा है, टिकाटिक तार जा रहे हैं। हमारी मांडलिक संस्था ने भी उसी तरह पत्परता दिखाई है। समाचार-पत्रों के बन्द होते हुए भी हमें यह सूचना मिल गई है कि दोनों कैस्टाइलों में स्थानीय संघ इस विषय पर मंत्रणा करने के लिए सभाएँ कर रहे हैं। यह कोई छोटी बात नहीं है। खेद इसी बात का है वहाँ उत्तेजना

की सामग्री नहीं के बराबर है। परन्तु बेकार मज़दूर इस कमी को शीघ्र ही पूरा कर डालेंगे।

आवाज़ें, गड़बड़। यह पुअरटा डेल सोल समुद्र की खाड़ी का नाईं है, जहाँ सदैव उत्तेजना बनी ही रहती है। मैंने कुछ समय यह देखा है कि पुलिस ने यहाँ की खुली जगह खाली करवा दी है, और सारे नाके घेर लिये हैं; मगर कुछ ही देर बाद मानो खरंजा तोड़ कर भूगर्भ से बहुत-से आदमी निकलकर शोर मचाते, हाथ-पैर फेंकते दीख पड़ते हैं। सहसा गोली चलती है। बिजली के खम्भों के ऊपर, नगर के नाकों पर विद्रोही देख पड़ते हैं। जो पुअरटा डेल सोल में होता है, वही सारे स्पेन में हुआ करता है। हमारी कार्य-प्रणाली की यही तो विशेषता है कि सरकार को यह पता ही नहीं चलता कि शत्रु कहाँ है। यह पद्धति हमारी निकाली हुई नहीं है, यह हमारे जातीय स्वभाव का प्रसाद है। लोग कहते हैं कि बादशाहत का इसी ने अन्त किया था। एक क्षण ऐसा आता है कि सारा वायुमंडल उत्तेजनामय हो उठता है और उस हवा में साँस लेने मात्र से मनुष्य उत्तेजित हो जाता है। उम्मीद और तैयारी से बिलकुल सम्बन्ध न रखनेवाली असाधारण घटनाएँ पलक मारते घटित हो जाया करती हैं। हम लोगों ने आम हड़ताल का निश्चय किया है। हड़ताल को परिपूर्ण बनाकर निःसन्देह हम पूरी तरह सन्तुष्ट हो जाएँगे। परन्तु जब हम गली में जाकर सिविलगार्डों का मुख देखते हैं तो सहसा उनको मार डालने को उतावले हो उठते हैं। हमारी संस्था आगे बढ़ने में सदैव हमें सहायता और प्रोत्साहन देती है। एक कहता है, 'बस, इतनी ही दूर,' तो हज़ार आवाज़ें कहती हैं—'नहीं, आगे।' इन हज़ार आवाज़ों में मज़दूर, स्त्रियाँ, सफेदपोश और भिखमंगे सभी तरह के मनुष्य होते हैं। हम आगे बढ़ते हैं और शीघ्र ही हमें मालूम हो जाता है कि संघ की योजना का अतिक्रमण हो गया है। हम ज़रा रुककर निर्णय करते हैं—'बस, यहाँ तक।' परन्तु वायु

और खरंजे के पत्थर, प्रकाश और इमारतें हमको पुकार कर कहती हैं--'इससे आगे।' हम स्थानीय संघ से विचार-विमर्श करते हैं। वहाँ से हस्ताक्षर और मुहर सहित आज्ञा मिलती है—'और आगे।' हम अब मांडलिक संस्था के सामने मामला रखते हैं तो वहाँ से भी यही आवाज़ आती है—'आगे।' तत्पश्चात् राष्ट्रीय (नेशनल) कमेटी और प्रायद्वीप केन्द्रीय (पेनिनसुलर सेंट्रल) तक यह बात पहुँचती है। सब यही उत्तर देते हैं। प्रायः शब्दों में नहीं, केवल एक संकेत के रूप में--उस चिह्न में जो आज और आगामी कल का प्रतीक है। सनातन, अक्षय संकेत--'सदैव आगे ही!' आज का आरम्भ-स्थान मेड्रिड में है। वही कभी बारसीलोना या सेविली में होता है। जब हम राजसत्ता की रक्षा-पद्धति को बग़ैर किसी अनुशासन, या विशेष संगठन के पोला करने का कार्य करते हैं तो हमारी सारी सस्था बग़ैर किसी कान्फ्रेंस या फोन पर बातचीत किये ही हमारी पीठ पर रहती है। हम यह नहीं जानते कि हम कहाँ जा रहे हैं। कामरेड प्रॉग्रेसो, एस्पार्टको और जर्मिनल! उस रविवार की रात को उन्होंने हमारी सिंडीकेटें बन्द कर दीं थीं, हमारे विरुद्ध अपनी सारी शक्तियाँ लगा दी थीं, फिर भी हमने आम हड़ताल का निर्णय कर ही डाला और जैसा कि सामर ने मुझे बतलाया है, रात की गुप्त-सभा में चारों ओर हिदायतें भेजने का प्रबन्ध भी किया गया था। यों तो हम अड़तालीस घण्टे से अधिक की हड़ताल नहीं करते, किन्तु उन्होंने अब तो हमें सब कुछ गुप्त रखने को बाध्य कर दिया है, उन्होंने अँधेरे में ढकेलकर हमें आगे बढ़ाया है, और अब हमें भी देखना है कि आगे क्या-क्या होता है! राष्ट्रीय कमेटी ने अपना आदेश दे दिया है, अब आज्ञाओं या तारों की कोई आवश्यकता नहीं है। वही आदेश वायु में है, 'आगे।' अब हम उसको जान गये। 'आगे।' 'सदैव और आगे।' शहीद भाइयो, शांति की नींद सोओ! जहाँ तुम चाहोगे वहीं हम जायँगे। आकाश सुनील

है ; बूढ़े भिखमंगे गिरजाघरों के दरवाज़ों पर खड़े प्रतीक्षा कर रहे हैं और बारूद की गन्ध से वातावरण भयावह हो रहा है।

सभा के नियुक्त स्थान पर पहुँचने के लिए मुझे पुअरटा डेल सोल में होकर जाना चाहिये, परन्तु इन तैयारियों को देखकर जो पूर्वचिन्ता के नाते की गई हैं, मैं लौट पड़ता हूँ और छोटी-छोटी बग़ली गलियों की भूल-भूलइयों में घुस पड़ता हूँ। मैं ड्यूटी पर हूँ और मेरा यह कर्तव्य है कि इन भद्रगण को मुझे जेल ले जाने के हर्ष से वंचित रखूँ। दो पत्र-विक्रेता 'लीफ़लेट' नाम के पर्चे के आज के संस्करण को ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर बेच रहे हैं। आज सोमवार है और इस बूर्ज़्वा तथा अर्द्ध सरकारी पर्चे के अतिरिक्त कोई समाचार पत्र निकला नहीं है। इन छोटी-छोटी गलियों में भी हड़ताल का रंग स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। इन छोटे दुकानदारों ने भी या तो दुकानें खोलीं ही नहीं है, या किसी-किसी ने अगर खोली भी हैं तो दरवाज़े भेड़ लिये हैं। एकान्त और निश्चलता विषाद उत्पन्न करते हैं। आज लाल रविवार है, सच्चा लाल रविवार! उन लाल रविवारों के समान नहीं जो केवल मेरे ही लिए थे, जब मैं बेकार था और मेरा शरीर और मस्तिष्क दोनों शिथिल थे, और न उन बुर्ज़्वा रविवारों की तरह जब कि बूर्ज़्वा लोग इसलिए विश्राम नहीं करते कि उन्होंने कोई श्रम का काम ही कब किया है और हम लोग इस लिए मज़दूरी से विश्राम लिया करते थे कि हमारे हृदयों में संघर्ष की आग हमें बराबर जलाती रहती थी। और न उन व्यक्तियों के रविवारों जैसा, जो भूख से व्याकुल होकर काले पड़ गये हों और न धनवानों के उन रविवारों जैसा जब कि वे बढ़िया कपड़े पहनते हैं और गिर्ज़ों से घण्टियाँ बजती रहती हैं, वरन् वास्तविक लोहित रविवारों, हमारे विशिष्ट रविवारों के समान। ऐसे रविवार जिनमें न कोई टैक्सी है और न कोई ट्राम और न कोई बूर्ज़्वा लोग ही कहीं सड़कों पर चहल-क़दमी करते नज़र आते हैं! वे

रविवार जिनमें खाली सड़कें और विमल वायु सुखद हैं और हम सिविलगार्डों को गोलियाँ मारकर विजय करने जा रहे हैं और क्लांत तथा उनींदे पुलिसवालों के चमकीले टोप उनके सिरों से गोली मारकर उतार फेंकना चाहते हैं। अब मैं प्लाज़ामेयर में आ गया। स्तम्भोंवाले बड़े शानदार प्रवेशद्वार, सतरहवीं और अठारहवीं शताब्दियों के मकानात। चतुर्थ फ़िलिप के शासन-काल के। इतिहास से ओत-प्रोत। नगर के प्राचीन ग्रन्थागार। काग़ज़ों की फ़ाइलें और घंटों की घन-घन। वृक्ष—कितने ही बौने और कितने ही पूरे देव। पुनः चतुर्थ फ़िलिप का ज़माना। हमारे लिए इतिहास और कला दोनों निरर्थक हैं। न तो हमें महाराजों का इतिहास चाहिये और न उनके दरबारों की शृंगारात्मक कला! दूर, इन सब को दूर करो! सबको स्वाहा! वह देखो, कपाट मुक्त दीवारों पर वे कौन हैं? उनके पैर आकाश में हैं। इनमें से कुछ को हमें धूल-धूसरित करना होगा ताकि उनकी जगह हम भी अपनी प्रतिभा और अपनी शान की कोई चीज़ दिखा सकें! इतिहास को मिटा दो! यह स्कायर बहुत सुन्दर कहलाता है। यह आस्ट्रियन राजवंश के काल का परिचायक है। लेकिन हमारे लिए इसमें कोई भी आकर्षण नहीं है। हम अपने प्रयत्नों में, अपने ही लिए जीते हैं और हम भूत के लिए नहीं बल्कि अपने विचारों और भविष्य के लिए युद्ध करते हैं!

एक कोने में, दहलीज़ के नीचे से एक संकड़ा पत्थर का ज़ीनावाला रास्ता है। उसके बाद गोल पत्थरों के फ़र्शवाली छोटी-सी खुली जगह है। एक प्रकार के छज्जे से लगा हुआ एक शीशे का दरवाज़ा है जिस पर लाल पर्दा पड़ा है। बे-रोज़गार कमेटी, विभिन्न संगठनों का संघ तथा सामर यहाँ मिलेंगे। ठीक दस का समय है। मैं संघ का प्रतिनिधि हूँ और सबसे पहले यहाँ आ पहुँचा हूँ। बैठने से पहले मैं चारों ओर दृष्टिपात करके देखना चाहता हूँ कि संकट के

समय यहाँ से भागने का मार्ग कौन-सा है। वे लोग मुझे शराब देते हैं। मैं सबसे अँधेरे कोने में जा कर बैठता हूँ। तत्पश्चात् मुरिल्लो आता है। वह साम्यवादी है। शहद के छत्ते के सामन उसके मस्तिष्क में हज़ारों कक्ष हैं जिनमें से प्रत्येक में, उसके कहने के अनुसार, एक संकटावस्था अपने हल के सहित मौजूद है। वह कुछ-कुछ बूज़्वा जैसे कपड़े पहनता है परन्तु अपनी खाकी जर्सी को कभी नहीं उतारता, चाहे कितनी ही गर्मी क्यों न पड़ती हो। वह पीला और पतला-दुबला है और सदा इस प्रकार बात करता है मानो कुछ-कुछ सो रहा है। वह सेलखरी के समान है। वह मेरे समीप आकर मेज़ के दूसरी ओर खड़ा हो जाता है।

यद्यपि समाजवादी उसको संयमित करने का प्रयत्न कर रहे हैं, वह कहता है, 'हड़ताल काफ़ी ज़ोर पर है।'

'और तुम लोग ?' मैं प्रश्न करता हूँ।

'हमारी स्थिति यह है कि बग़ैर ज़्यादा जल्दी किये हुए जनता को अग्रगामी बनाने में सहायता की जाय।'

'लेकिन आप लोगों ने किया क्या है ?'

वह कुछ हिचकिचाने के बाद जेब से एक छपा हुआ सर्कुलर निकालता है।

'यह तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय का पत्र है जिससे हमारी स्थिति स्पष्ट हो जाती है।'

'यह है क्या ?'

'जनता को अग्रगामी बनाने में सहायता देना।'

मैं घड़ी की ओर देखता हूँ। मुरिल्लो हठपूर्वक बैठ जाता है।

'हम को एक क़दम के बाद दूसरा क़दम बढ़ाना चाहिये।'

गली में मनुष्यों की आवाज़ें और खरञ्जे पर घोड़ों की टापों का शब्द सुन पड़ता है। मुरिल्लो थोड़ी देर सुनता रहता है। वह फिर कहने लग जाता है :

'इसमें कोई संदेह ही नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय का यह पत्र मंडल कमेटी की राय का समर्थन करता है। सर्वसाधारण में अग्रगामिता आती जा रही है। क्या तुम्हारे साथ चलने के लिए हम अपनी चाल त्याग दें? इस प्रश्न का निर्णय कार्यकारिणी समिति करेगी। क्या हम इसके लिए दौड़ने लगेंगे? यह पत्र मेरे मत की पुष्टि करता है।'

'मेरी राय में वे तुम्हारी बात नहीं मानेंगे, मुरिल्लो।'

मुरिल्लो अपने पत्र पर आँखें गड़ाये बातें किये जाता है। यदा-कदा मैं बाधा दे देता हूँ—'मुझे आशा है कि वे तुम्हारी बात को अस्वीकार कर देंगे।'

परन्तु चूँकि वह कभी दूसरे की बात पर ध्यान ही नहीं दिया करता है, वह अपनी ही कहे जाता है। अंत में, जब मैंने ख़याल किया कि वह मेरे बात काटने को भूल चुका है तो उसने पूछा :

'वे मेरी बात क्यों नहीं मानेंगे?'

'क्योंकि इससे मज़दूरों के दो दल हो जायेंगे।'

हम बड़ी अधीरता के साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं। कमेटी के सदस्यों के आने में बहुत विलम्ब हो गया है। और सामर? क्या उसको कुछ हो गया है?

मैंने मुरिल्लो के सामने एक समस्या रखी।

'यह तो बताओ कि तुम साम्यवादी हल—राजसत्तात्मक पूँजीवाद-को बूर्ज़्वा बुद्धिवाद के आंशिक रूप में स्पेन की जनता से अस्वीकृत कराने के लिए क्या तरकीब करोगे? तुम्हारे संबंध में मुझे भारी उत्तरदायित्व का अनुभव होगा।'

मुरिल्लो चुप रहा। अंत में वह बोला :

'तुम्हारी स्थिति क्या है?'

'अच्छा। फ़िलहाल बेकारों में उत्तेजना फैलाना। यदि तुम इससे

अधिक व्यापक उत्तर चाहते हो तो सुनो। मेरा मार्क्सवादी वातावरण में लालन-पालन हुआ है, किंतु मुझे मार्क्स ने अपने आप से भी अधिक मार्क्सवादी बना दिया है। मेरा यह अभिप्राय है कि मार्क्स की प्रेरणा-शक्ति ने ढकेल कर मुझे मार्क्स से भी परे पहुँचा दिया है। मैं न तो आत्मा की और न बुद्धि की सहज कर्मशीलता में विश्वास रखता हूँ—यह केवल एक बूर्ज़्वा भावना मात्र है—मैं केवल ठोस यथार्थ-कार्य में विश्वास करता हूँ। हमारे संघर्ष में बुद्धि का काम केवल इतना है कि वह कार्यों का ठीक निरूपण करे और उनमें भविष्य के लिए उचित संबंध स्थापित कर दे। किसी पार्टी के सिद्धान्तों के आधार पर उनकी व्याख्या कदापि न होनी चाहिये और भूतकाल के अनुभव से उसको संबद्ध करना तो सर्वथा अवांछनीय ही है। हमें क्रान्ति करने दो! हम करके छोड़ेंगे! वही आज हमें बतलाएगी कि हमें कल क्या करना होगा। हम सब मिलकर विजय प्राप्त करेंगे। और विजय भी सभी की होगी। बस इतना ही पर्याप्त है। मैं जानता हूँ कि तुम्हारी योजना की अपेक्षा यह कुछ अधिक अस्पष्ट और देर से समझ में आनेवाली बात है, किंतु यदि जनता तुम्हारे कार्यक्रम को स्वीकार कर ले तो मैं भी उसको सहर्ष इसलिए स्वीकार कर लूँगा कि मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि यह हमारी क्रान्ति योजना की ओर बढ़ने का एक क़दम होगा। परंतु जनता उसको अस्वीकार करेगी और एक अधिक चिकनी सड़क को उस पर तरजीह देगी। उनकी यह तरजीह भी एक शक्ति और कारण है जिसको मैं बहुत अच्छी तरह समझता हूँ। क्योंकि मैं भी अपने आप को उसी जनता में से एक समझता हूँ—मेरी अनुभूति भी बिलकुल उन्हीं जैसी है, मेरे मित्र मुरिल्लो! मेरी बुद्धि अल्पमत की ओर मुझे कभी ले ही नहीं जाती। मैं स्वतः प्रवर्तित कार्य का समर्थक हूँ और परिणाम-स्वरूप अपनी व्यक्तिगत भावनाएँ रखते हुए भी मैं उसी को अंगीकार करता हूँ। समझे मेरी स्थिति?'

और सब लोग आ चुके थे जब कि कुछ मिनट विचार करने के पश्चात् मुरिल्लो ने मुझसे कहा :

'तुम भी एक बूर्ज्वा अराजकतावादी और अवसरवादी हो !'

मैं खिलखिलाकर हँस पड़ा। यह सरासर मेरा अपमान था परंतु मुरिल्लो बिना सोचे-समझे निर्णय देने का अभ्यस्त है और अविचारपूर्ण निर्णय भी सीधे और स्वर-प्रवर्तित कार्य का सगा भाई ही है और मेरे लिए मज़ेदार भी है। सामर यह समाचार लेकर आया कि :

'उन्होंने काट्रो केमिनॉस में मशीनगनें निकाल ली हैं।'

'किसने ? हमने ?' मैंने पूछा।

'तुम्हारे पास मशीनगनें हैं ?'

हड़ताली समिति के सदस्य एक रहस्यपूर्ण मुसकान मुसकरा दिये लेकिन किसी ने कुछ कहा नहीं। उनमें से एक ने मुरिल्लो से पूछा :

'तुम्हारे दल के कितने लोग मैड्रिड में हैं ?'

'लगभग तीन सौ, परन्तु आगामी कांग्रेस से अलग हो रहे हैं क्योंकि हम समझते हैं कि कार्यकारिणी समिति वाम पक्ष की ओर जा रही है।'

'परन्तु तुम लोग शासन-शक्ति हाथ में लेने के लिए निर्बल अल्प-संख्यक हो ; है न ठीक ?' सामर ने कहा।

मुरिल्लो ने फिर वही पत्र निकाल लिया और सर्वसाधारण की अग्रगामिता के सम्बन्ध में बकवास करने लग गया। किप्रिआनो गोमेज़ नामी एक राज ने ज़ोर से हाथ फिराकर कहा :

'बस, भाइयो ! अब इन मूर्खताओं को रहने दो। यहाँ तो अब काम करना है।'

हम इस प्रश्न पर कि हमें फ़ौरन क्या करना है बहस करने लगे। पुलिस रिज़र्व स्टेशन से वह स्थान दूर था। हमारे 'कार्य' करने के अब दो स्थान निश्चित हुए। सामग्री की एक दुकान जिसके सहायक

कार्यकर्ता 'ग़द्दार' थे और उसके सामने के छोटे से स्क्वायर में स्थित एक बड़ी हथियारों की दूकान। हड़तालियों में से प्रायः सभी को शस्त्रों की आवश्यकता थी।

'उनकी संख्या कितनी है ?'

'जो लोग प्रतीक्षा में वहाँ मौजूद हैं उनकी संख्या पन्द्रह सौ के क़रीब होगी। उनमें कुछ साम्यवादी भी हैं और कुछ समाजवादी हड़ताली भी।'

मुरिल्लो ने आग्रह किया कि साम्यवादी सहयोग को स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं करनी चाहिये। किप्रियानो अधीर हो उठा और उसने मुरिल्लो की ओर इस तरह देखा मानो वह उसको कोई अजीब बेहूदा क़िस्म का जानवर समझ रहा है। किप्रियानो अराजकतावादी था। सामर ने उसको समझाया :

'क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि मुरिल्लो साम्यवादी है ?'

किन्तु मुरिल्लो की ओर ध्यान न देते हुए वह अपनी युक्ति का स्पष्टीकरण कर रहा था, और अन्य सबकी सम्मति चाहता था। उसके विचार में हथियारों की दुकान और सामग्री की दुकान दोनों जगह एक ही साथ 'कार्य' करना चाहिये था। इस काम में जो दिक्क़तें पैदा हो सकती थीं मैंने उनके सम्बन्ध में कुछ कहा। जहाँ तक सम्भव हो, हमें अपने सहयोगियों के प्राणों को संकट में नहीं डालना चाहिये।

'क्यों ?' मुरिल्लो ने बात काटकर कहा, 'उनका मरना तो स्वाभाविक ही है। हड़ताली ही तो अगुआ होते हैं।'

किप्रियानो ने उसकी ओर एक क्रोधपूर्ण दृष्टि डालते हुए कहा कि स्वयं उसके और एक साथी दोनों के पास मिलाकर बीस 'हाथ के बम' थे ; किन्तु वे ऐसी चीज़ न थे जो भूखों के हाथों में दी जा सके! वे केवल सौम्य और विश्वसनीय लोगों को ही दिये जा सकते थे। वह उनको हम लोगों में बाँट देना चाहता था। यदि हमने उनका सर्वोत्तम

उपयोग किया तो उनसे बहुत कुछ प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो सकती थी। इसके अलावा उनके पास रिवालवर भी थे। मुरिल्लो ने 'आज्ञा' माँगी। उसको कोई काम था। उसने कुछ इश्तहार दिये और हमारी सफलता की शुभकामना प्रकट की। वह उठकर जा ही रहा था कि किप्रियानों ने सिर हिलाकर कहा :

'यह आदमी न तो साम्यवादी है और न कुछ और ही। यह मनस्वी भद्र मात्र है! सच्चे साम्यवादी वहाँ मौजूद हैं। साम्यवादी, दिलोजान से जो हमारे साथ हैं, और तुम—' मुरिल्लो फिर बैठ गया। उसने कहा कि वह बम तो नहीं फेंकेगा किन्तु साम्यवादी दल के स्पेनी विभाग के एक प्रतिनिधि के रूप में वह हमारे साथ-साथ रहेगा। सामर ने किप्रियानो के साथ अपने ऊपर पुलिस-कुमक की गति-विधि की देख-रेख रखने का काम लिया। उनके साथ दस कामरेडों के जाने का निश्चय हुआ जो तीन-तीन की टुकड़ी में विभक्त होंगे। विलाकम्पा ने सामग्री की दुकान के हमले का नेतृत्व अपने हाथ में लिया। उसने इस काम को किंचित् गर्व के भाव से अंगीकार किया। यह सामर के कार्य से अधिक खतरनाक और हिम्मत का था। विलाकम्पा और सामर में कुछ मनमुटाव था। दो घण्टे पहले सामर के विरुद्ध निन्दा का वोट पेश करने में उससे मेरा साथ दिया था। अतः सामर पर वास्तव में दो व्यक्ति दोषारोपण करनेवाले थे। प्रत्येक कामरेड ने अपनी ड्यूटी को दृढ़ता और शान्ति के साथ शिरोधार्य किया। वे बूर्ज़्वा दल की निर्बलता और अपने पक्ष की दिन प्रति दिन बढ़ती हुई शक्ति को भली भाँति जानते थे। उनके मस्तिष्क अत्यन्त तेजोमयी सम्भावनाओं तथा आकस्मिक घटनाओं के सुखद चित्रों से जगमगा रहे थे।

'यदि आज रात को हड़ताल व्यापक हो गई,' वे मन-ही-मन कह रहे थे, 'तो हमको अन्य मांडलिक संस्थाओं से हमारे साथ मिल जाने को कहना मात्र रह जायगा।

वे यह प्रतीक्षा कर रहे थे कि समाजवादियों के लिए हड़ताल स्वीकार करना अनिवार्य हो जायगा, चाहे वे जनता की दृष्टि में निर्वीर्य न मालूम होने के विचार ही से ऐसा क्यों न करें। सामर इस विचार से पूर्णतः सहमत नहीं था।

हम बाहर आकर, पूर्व निश्चित योजनानुसार तीन टुकड़ियों में विभक्त हो गये। मुरिल्लो ने समाजवादी संयुक्ति और मिलकर काम करने के लाभों पर उपदेश किया। सतरहवीं शताब्दी के उस स्मारक से उतर कर नीचे पहुँचे, जिस पर कि क्वेवेडो के धूर्त अपने शरीरों को खुजलाकर सहर्ष गर्हित, धर्मविरुद्ध आचरण कर रहे हैं। इस छोटे-से स्क्वायर में सन्नाटा छाया हुआ था। इसके बाद दो गलियाँ छोड़कर, एक आम बाज़ार के समीप, आदमियों की चहल-पहल और इधर-उधर खड़ी हुई टोलियों से रविवार का कुछ-कुछ भाव प्रकट होता था। चूँकि यहाँ बहुत-सी स्त्रियाँ गलियों में फेरी लगानेवालों से सामान खरीदने निकल आई थीं, इन टोलियों की ओर अधिक ध्यान आकर्षित नहीं होता था। बहुत-से परिचित मुखों को यहाँ देखकर, मैं यह तत्काल ताड़ गया कि यहाँ कम-से कम दो हज़ार कामरेड धावे के संकेत की प्रतीक्षा कर रहे थे। हमारी कमेटी इधर-उधर बिखर गई। जहाँ-तहाँ हमारे कामरेड रुक जाते और तत्क्षण तीन-चार आदमी हर एक के चारों ओर आ खड़े होते और उसकी बातों को कान लगाकर सुनते थे। यह प्राथमिक कार्य है। अब ये तीन-चार श्रोता वहाँ से खसककर लोगों को वे ही बातें बताते जा रहे हैं। पलक मारते शब्दों का एक जाल फैल जाता है। ज़रा-सी देर में वे सब बातें तरकारी बाज़ार के इस सिरे से उस सिरे तक, हड़तालियों की उस जमात तक जो स्क्वायर के नाके पर हवा खाने का ढोंग रचे हुए है, बहुत जल्दी पहुँच जाती हैं। इनमें सभी प्रकार के मनुष्य हैं, जिनको भूख ने समान बना दिया है! जैसे ही मैं एक टोली के पास से होकर जाता हूँ कोई कह उठता है:—

'यदि मैं समाजवादियों में मिल जाऊँ तो मुझे कुछ सहायता मिल जायगी। क्या दो-ढाई शिलिंग किसी आदमी और उसके विचारों को मोल लेने के लिए काफी हैं?'

वे इससे इनकार करते हैं। सूर्य अधिक पीला पड़ जाता है और सिनेमा के स्क्रीनों-जैसे एलूमीनियम-वर्ण आकाश पर छोटे-छोटे मेघ चक्कर लगा रहे हैं। सड़क के दूसरे सिरे पर, बहुत-से मज़दूर एक जगह जमा होकर सहसा एक छोटी-सी गली में दौड़ कर घुस जाते हैं। मेरी ड्यूटी किप्रियानो और सामर के साथ है। मैं उनको खोजकर उनके समीप चला जाता हूँ। कामरेड बेतहाशा दौड़ रहे हैं। मैं कमेटी से ज़रा अलग हो गया; क्योंकि एक दरवाज़े की आड़ में, नींद में ऊँघता हुआ, मुझे पूजेनियो कासानोवा देख पड़ा। वह एक कामरेड की वापसी के इंतजार में जिसको उसने यह कहते हुए सुना है कि उसके पास दो रिवालवर हैं, कल दोपहर से बिना हिले-जुले, यहीं मौजूद है। उसके पास कोई रिवालकर नहीं है। मैंने उससे साथ चलने को कहा और फिर हम दोनों सामर के साथ जा मिले। हम गलियों के मार्ग से बन्दूकों की दुकान की ओर जा रहे थे। बग़ैर वर्दी, घुमक्कड़ों की तरह, मोड़ से जाते हुए तीन आदमियों पर किसी को क्या सन्देह हो सकता है, उनसे कोई कह ही क्या सकता है। परन्तु हम तीनों के पास चार-चार बम और एक-एक रिवालवर हैं। दूसरी गलियों में भी वही हाल है। अगर यहाँ सेना भी आ जाए तो हमारे हमले की जगह से बहुत दूर मुठभेड़ होगी और हमारे सहयोगी हथियार और खाद्य सामग्री प्राप्त करने में सफल हो जायँगे।

मुरिल्लो उत्तेजित भाव से सूचना देता है:

'साम्यवादी आगे हैं। उन्होंने पाढ़ का एक खम्भा उखाड़ लिया है। और उसको बन्द कपाटों के ऊपर धड़ाधड़ मार रहे हैं। बेकार आगे नहीं हैं। ये काम करनेवाले हड़ताली हैं, बेकार लोग नहीं। जिस

तरह काम होना निश्चय हुआ था उस तरह नहीं हो रहा है। ऐसा क्यों हुआ, मैं यह मालूम करने जा रहा हूँ।'

वह चला जाता है और किप्रियानो सिर हिलाकर कहता है :

'मालूम होता है इसके दिमाग़ में कोई फ़ितूर समा गया है। अगर यह सतर्क न रहा तो इसके साथ कामरेड भी उल्लू बन जायँगे।'

धातु के कपाटों पर घनाघन चोट पड़ रही है। मज़दूरों के हाथ तुले हुए पड़ रहे हैं।

'आ, अ, अ, ऊ, ! आ अ अ ऊ !'

क्रन्दन, चीत्कार तथा जयनादों की गड़बड़ में भी एक शोर सुनाई देता है। कामरेड उत्तेजना से पागल हो रहे हैं। आने भी दो सिविल गार्डों को, छापा मारनेवाली पुलिस को और सार्वजनिक रक्षा-विभाग वालों को! तुम अपना जोश मत कम होने देना!—खबरदार! हम तुम्हारी रक्षा करेंगे!

नम्बर नौ के हाथ दो बम। साफ़ आँख और दृढ़ हाथ, परन्तु शोर इतना ज़्यादा है कि हमें यह नहीं सुन पड़ता आया शत्रु का आगमन हुआ है या नहीं। किप्रियानो अकेला आगे बढ़ जाता है। फिर वह दौड़ता हुआ वापस आता है। उसके कनटोप का अगला हिस्सा मुँह पर है और कोट का कालर उठा हुआ।

'होशियार, मित्रो! इन कोनेवाले दरों में घुस पड़ो। यदि गड़बड़ हुई तो कोने से मुड़कर किसी सुरक्षित स्थान पर भाग चलेंगे।' एक बड़े, पुराने मकान में हम छिप जाते हैं। चोटों की आवाज़ से हमें यह मालूम होता है कि दरवाज़े टूट चुके हैं। सामर का मुख बहुत पीला पड़ गया है। उसने भी अपने कोट का कालर चढ़ा लिया है और टोपी मुँह पर कर ली है जिससे अब उसकी नाक के अतिरिक्त उसका चेहरा सब ढक गया है। सामर और किप्रियानो दोनों ने अपने रिवालवर निकाल लिये हैं। मेरे दोनों हाथों में एक-एक है और मेरे मुँह में एक

जलता हुआ सिगार। उनका फ़लीता लगभग एक इञ्च लम्बा है। अब हम देखेंगे ! बग़ल की गली में, जहाँ सामान की दुकान पर छापा डाला जा रहा है, शोर बढ़ता जा रहा है। किप्रियानो फिर घबड़ाया हुआ मालूम होता है। शत्रु अदृश्य हैं। हम अपनी ही साँसों की आवाज़ सुन रहे हैं।

वे ज़रूर दूसरे कोने पर होंगे। अभी मालूम हुआ जाता है।

हमारी तरह जो कामरेड दूसरी गली में नियुक्त हैं वे तीन फ़ैर करते हैं। घोड़े फिसल कर पीछे हटते हैं। वे पीछे भागते हैं और टापों की आवाज़ प्रतिक्षण हमारे समीपतर आती हुई मालूम होती है। सामर कूद कर पीछे जाता है और दीवार से सट जाता है :

'होशियार ! लो, वे आ गये !'

फ़ौजी बंदूकों की दबी हुई आवाज़ अब सुन पड़ती है। कुछ गार्ड फ़ायर कर रहे हैं और बाक़ी हमारे कोने की तरफ़ आ निकलने के अभिप्राय से पीछे हट रहे हैं।

'लो, वह आ पहुँचे, मित्रो !'

किप्रियानो हाथ बढ़ाता है और अपने रिवालवर को महराब के कोने से लगाकर फ़ायर करता है। सामर भी। एक घोड़ा अवश्य गिरा होगा। सिपाही पीछे हटनेवाले हैं और मेरे लिए बम छोड़ना अत्यन्त आवश्यक भी नहीं है, परन्तु मैं फलीता जला चुका हूँ और बम को हाथ में रख नहीं सकता। अतः मैं उसको फेंक देता हूँ। बम बड़े ज़ोर से फटा है। उनमें भगदड़-सी मच गई। प्रायः सभी घोड़े घूम गये हैं। उनमें से तीन दरवाज़ों के बिलकुल समीप हैं। कैसे बढ़िया निशाने हैं। हम फ़ायर करते हैं। एक गार्ड आहत होकर पीछे हटता है और दाँत मींचे हुए किप्रियानो कुछ बड़बड़ाता है। बग़लवाली गली में भी ऐसा ही दृश्य है। गोलों के फटने के पश्चात् वेदना-पूर्ण चीत्कार सुन पड़ती है।

और अब हड़तालियों का एक रेला-सा आता है। सब के पास ख़ूब शस्त्र हैं और सब उत्साह-पूर्ण हैं। उनमें से एक मशीनगन लादे हुए है। चूँकि वह उसको चलाना नहीं जानता, उसको ज़मीन पर फेंक देता है। तत्पश्चात् उसकी नज़र एक काग़ज़ पर पड़ती है जिस पर हिदायतें छपी हुई है। फ़ायरिंग हो रहा है और वह बावजूद फायरिंग के छपी हुई हिदायतों के मुताबिक़ मशीनगन पर उंगलियाँ चला रहा है। दो मज़दूर गिर पड़े हैं और बाक़ी आगे चल पड़ते हैं। गार्ड पीछे हट जाते हैं और घोड़े भय से भागे जा रहे हैं। अब मुरिल्लो यहाँ आ पहुँचता है। मेरे प्रश्न के उत्तर में वह पैशाचिक हर्ष के साथ कहता है :

'सामग्री की दूकान अब खाली है और बंदूकों की दुकान भी। रिवालवर निकालने के लिए कामरेडों ने खिड़कियों के शीशे मुक्कों से तोड़े हैं। किसी-किसी के हाथ कुछ कट गये हैं।'

'अब तुम चले जाओ।'

'चला जाऊँ ? क्यों ?'

'अब सिविलगार्ड आते होंगे और किसी के कंधे पर सिर नहीं छोड़ेंगे।'

'परंतु इससे क्या ?' मुरिल्लो ने उत्तर दिया। उसके मुख का रंग राख जैसा विवर्ण हो गया था।

'हड़ताली अपना कर्तव्य पालन करेंगे। उनके आगमन की प्रतीक्षा करेंगे।'

'जान-बूझकर मरेंगे ?'

'हाँ।'

इतने में चार साम्यवादी मज़दूर आते हैं। मुरिल्लो ने हाथ झटकाकर उनसे कुछ प्रश्न किये; जिनको मैं नहीं सुन सका। तदनन्तर उनके सीनों पर हाथ रखकर उसने उनको रोकने का प्रयत्न किया।

वे उसको धक्का देकर हटा देते हैं और आगे बढ़ते हैं। बहुत दूर से गोलियाँ आना अब भी जारी हैं। छूटी हुई गोलियों के मध्य में मुरिल्लो नाच रहा है और बड़बड़ा उठता है :

'क़दम पर क़दम बढ़ रहा है। तुम मुझे जख्मी नहीं कर सकते। मुझको गोली नहीं लग सकती, क्योंकि मैं हड़ताली नहीं हूँ। और न तुम ही, मित्रो।'

उसका हम तीनों से अभिप्राय था। किप्रियानो ने अपना रिवालकर रख लिया और हम छिपने के स्थान से बाहर निकल आये। मुरिल्लो की एक आस्तीन पकड़कर वह उसको कोने की दूसरी ओर खींचकर ले जाता है। वहाँ पहुँचते ही वह कहता है :

'हम कमेटी में तुम्हारे ऊपर दोषारोपण करेंगे।'

'क्यों ?' मुरिल्लो निर्भयता से पूछता है।

'क्योंकि तुम अजीब अहमक़ हो !'

इसके बाद ही विलाकम्पा आ गया। वह बहुत प्रसन्न था। हमें यहाँ से भाग जाना है। हम अब यहाँ एक क्षण भी नहीं ठहर सकते। सामर विलाकम्पा की ओर बड़े विलक्षण भाव से देखता है क्योंकि सुबह संघ की सभा में उसके विरुद्ध अभियोग चलाया था। विलाकम्पा उसकी आँख से आँख मिलाता है। मुझे डर है कि कहीं दोनों आपस में गुथ न जायँ, परंतु सहसा मुझे सामर मुसकराता हुआ देख पड़ता है और विलाकम्पा के कंधे पर हाथ रख देता है। विलाकम्पा भी मुसकरा रहा है। तत्पश्चात् दोनों बातें करने लग जाते हैं। इस आकस्मिक संधि से कुछ आश्चर्यान्वित तथा शांत-चित्त होकर दोनों एक दूसरे को अपने-अपने अनुभव सुनाते हैं।

शत्रु बुरी तरह हारे हैं। सभी जगह उनके पैर उखड़ गये। हमने कठिनता से एक दर्जन फ़ैर किये होंगे। हमारे कुछ साथी वहीं पीछे रह गये हैं, क्योंकि संसार की कोई भी शक्ति उन्हें पीछे नहीं हटा सकती।

एक को दूसरे का शिर कठिनाई से दीखते हुए भी दोनों पक्षों की ओर से कुछ गोलियाँ छूटती हैं। तीन कामरेड खाद्य सामग्री से लदे हुए चले आ रहे हैं, किन्तु जब वे गोलियों की आवाज़ सुनते हैं तो सब सामान भूमि पर पटक देते हैं और रिवालवर तानकर आगे बढ़ते हैं। सामर अपना कालर ठीक करता है और जेब में हाथ डाल लेता है, जहाँ वह अपना रिवालवर रखा करता है। उसकी उँगलियाँ छेद से बाहर निकली हुई हैं। वह कुछ काग़ज़ात निकालता है। एक गोली उनके पार हो चुकी है जिससे उसका नितंब भी छिल गया है। इन काग़ज़ों में अम्पारो का पत्र भी है। वह उसके नन्हें-नन्हें टुकड़े करके हवा में उड़ाता है। वे टुकड़े नन्ही-नन्हीं बूँदों की तरह नीचे गिरते हैं। बग़ल से आवाज़ आती है :

'छः पकड़े गये हैं। वे उनको डंडों से पीटते हुए गलियों में से तेज़ी से ले जा रहे हैं।'

ताबूतों का विध्वंस

अस्पताल के पासवाले एक होटल में मैंने दो हड़तालियों के साथ भोजन किया। खाने का सामान हम साथ लाये थे। हमें केवल शराब की क़ीमत और खाना पकाने की मज़दूरी मात्र देनी पड़ी। बहुत थोड़े पैसों में काम चल गया। भोजन में सबसे बढ़िया क़िस्म का चावल, सुअर का मांस, मटर, और सुस्वादु भोजन विशेष जैसे चक्रवाक के जिगर की जेमी और स्टजेन मछली के अंडों का अचार थे। पीछे की दोनों चीज़ों को मेरे साथियों ने बस चखकर छोड़ दिया—उन्हें वे पसन्द न आईं। मुझे भी वे अच्छी तो न लगीं, परन्तु चूँकि मैं इस लाइन में काम करता हूँ, मुझे मालूम है कि क्या बढ़िया चीज़ है या कम से कम यह कि कौन-सी चीज़ ज्यादा क़ीमती है; अतः मैंने यह सोचकर कि मेरा ज़ायक़ा खराब है और ये चीज़ें बढ़िया हैं, उन सबको

खा लिया। हड़तालियों को शस्त्र मिल गये थे—अब वे खुश थे। अब उन्हें अपनी सफलता की पूर्ण आशा है। बूर्ज्वाज़ी के पराभव का उन्हें पूर्ण विश्वास है—उनका तो बस सफ़ाया ही समझो। शाही सत्ता के विनाश में तो इतना भी न करना पड़ा था।

एक कोने में चाची आईज़ाबेला पड़ी सो रही है। उसके पास शराब की बोतल रखी हुई है। उसने सारी रात अस्पताल के फाटक पर खड़े-खड़े प्रार्थना करने में व्यतीत की है। प्रातःकाल उन्होंने उसको यहाँ पहुँचा दिया। उसके बाल सफ़ेद और सीधे खड़े हैं। उसका मुख छिला हुआ अखरोट जैसा प्रतीत होता है। उसके सामने छः बजे से जो गिलास रखा हुआ है, उसने उसको अभी तक छुआ भी नहीं है। थोड़ी-थोड़ी देर बाद वह पानी माँगती है। एक ही स्वर में वह कभी 'प्रभु की प्रार्थना' दुहराती है या गालियाँ देने लग जाती है। इस बूढ़ी के अन्तस्तल में क्या हो रहा है, यह कौन जानता है? उस माता की दुःखावस्था से जिसका पुत्र मारा गया हो, या उस धन-लोलुप वृद्धा से जिसका सारा खजाना लूट लिया गया हो, इस बूढ़ी की दशा अधिक गम्भीर है। वह हमसे भी नाराज़ है और सराय के मालिक से भी। हमने उसको खाना दिया तो वह हमें बेतहाशा गालियाँ देने लगी। मेरे साथ के दो हड़तालियों में से एक हँसकर बोला—'बुढ़िया सठिया गई है।'

तदनन्तर एक आर्जेन्टाइन वहाँ आ पहुँचा। वह बढ़िया कपड़े पहना करता है और कभी-कभी हमारी सिंडीकेटों में भी आया करता है। वह धीरे-धीरे चढ़ते हुए स्वर में इस प्रकार बात किया करता है, मानो हब्शियों के 'टाँगो' नृत्य में गान समाप्त हो जाने पर कोई पात्र अपना रटा हुआ पार्ट सुना रहा हो। मुझे मालूम हुआ है कि वह बहुत मालदार है और हमारी संस्था का कुछ दिनों से मेम्बर भी है। जब वह बातचीत करता है तो ऐसा मालूम होता है कि मदंगति-फ़िल्म

में कोई पहलवान अपना 'काम' दिखा रहा है। सामर ने मुझे बतलाया है कि उसके वाक्यों पर ध्यान देने से मुझे यह स्पष्ट मालूम हो जायगा कि वह सदैव बूर्ज़्वा समाचार-पत्रों के शीर्षकों का उपयोग किया करता है। यह बात ठीक है। उसने अन्दर आते ही मुझसे कहा :

'लाशें तीन बजे दफ़नाई जायँगी,' और फिर सिर हिलाकर बोला—'परिस्थिति अधिक गम्भीर हो गई।'

वह जनाज़े पर सुर्ख़ गुलनार के फूलों का हार चढ़ाना चाहता था लेकिन दुकानें न खुलने के कारण वह विवश था। इस पर एक हड़ताली ने कहा :

'बस, अब इन मूर्खताओं को रहने दीजिये। जो कुछ दे सकें रिलीफ़ (सहायता) कमेटी को दे डालिये।'

'कौनसी मूर्खताएँ ?' उसने तनककर पूछा।

मैंने उसको शान्त करते हुए कहा—'इनका अभिप्राय सम्मान प्रदर्शन से है, किन्तु इस समय कोई कलात्मक रीति हमें शोभा नहीं देती।'

परन्तु वह फिर कहता ही रहा :

'यह बड़ी भयानक बात हुई। पुलिस ने अपने कर्तव्य का अतिक्रमण किया है। गोलियों द्वारा सार्वजनिक शान्ति की रक्षा नहीं होनी चाहिये। ऐसा करने से जनता के अन्तःकरण पर भारी आघात पहुँचेगा।'

वह सम्पूर्ण वाक्य का कुल ज़ोर एक ही शब्द पर लगा देता था और उस शब्द को आधा चबा जाता था। वह मानो ताल के साथ अपनी भुजाएँ ऊपर उठाता था और एक पैर पर झूम जाता था।

'यह निश्चय तो अनिवार्य ही था।'

'कौन-सा ?'

'आम हड़ताल का। वह बड़ी भीषण थीं।'

'क्या थीं भीषण ?'

'कल की महान् घटनाएँ !'

हम सब उससे सहमत थे। वह कहता गया—

'तीन श्रमजीवी कुटुम्ब घोर विपत्ति में।'

इस बात पर भी हम सहमत थे। मेरी समझ में न आया कि मैं उससे क्या कहूँ। जिन लोगों के दुःख से हमारे प्राण आठों पहर, चौबीसों घण्टे व्याकुल रहते थे, उन्हीं की बात आज हमें एक बूर्ज्वा बताने चला था। मैंने चची आइज़ाबेला को इंगित करते हुए कहाः

'यह जर्मिनल की माता हैं।'

वृद्धा ने उसकी ओर घूरते हुए कहा—'और तुम कौन हो ?'

'मैं भी क्रान्ति का एक और समर्थक हूँ।'

'एक और ? तुम गुप्तचर तो नहीं हो ?

'अजी श्रीमतीजी !' उसने चिल्लाकर कहा, 'मैं तो आप ही के पक्ष का हूँ। आपके पुत्र की तरह।'

'मेरे पुत्र के समान तो बहुत थोड़े हैं।'

तत्पश्चात् वह वृद्धा के समीप बैठकर बोला—'आप जो चीज़ चाहें आज्ञा कीजिये।' वृद्धा ने धन्यवाद दिये बिना ही इनकार कर दिया। वह बराबर उसकी ओर ताकती रही, किन्तु उसके साहचर्य तथा आदर भाव से खिन्न न हुई। वह अवश्य यही सोच रही होगी—'इसका व्यवहार मेरे साथ ठीक ऐसा है जैसा कि एक वास्तविक भद्र महिला के साथ किया जाता है।' इसी समय मैं अपने साथियों को यह बतला रहा था कि हाल ही में पुलिसवालों ने उस आर्जेंटाइन के घर की तलाशी ली थी। वह इस बात से प्रसन्न हुआ, क्योंकि उसकी सबसे बड़ी इच्छा यही थी कि लोग उसको क्रांतिकारी समझें। पुलिसवालों ने उससे उसके राजनीतिक सिद्धान्तों पर जिरह की। उसने अपने को अराजकतावादी बतलाया। उससे थोड़ी देर बात करने के पश्चात्

उन दो पुलिसवालों में से एक ग्रामोफ़ोन पर जा बैठा और दूसरा नोट करता रहा। कुछ देर तलाशी लेने के बाद वे एक नया रेकार्ड बजाते और यह निर्णय कर लेने पर कि कौन-सा रेकार्ड सर्वोत्तम है, वे उस रेकार्ड को पुनः चढ़ा देते और घर में इधर-उधर घूम-फिर कर फिर संगीत का रसास्वादन करने लग जाते थे। इस बात से आर्जेंटाइन क्रुद्ध होकर मन-ही-मन कहता—

'क्या ये मुझे जेल नहीं ले जायँगे ?'

तदनन्तर उसने अपने गिरफ़्तार न होने का कारण यह बतलाया कि पुलिस कूटनीतिक झमेले की सम्भावना से भयभीत हो गई थी, किन्तु वास्तविक बात यह थी कि उन कांस्टेबलों ने जब तक सब रेकार्ड न बजा लिये तलाशी जारी रखी, और चलते समय क़ीमती सिगरेटों का एक बक्स अपने साथ ले गये।

इस पर हड़ताली हँस पड़े और कुर्सी पर बैठा हुआ आर्जेन्टाइन थोड़ा बेचैन-सा देख पड़ा। वृद्धा चची आइज़ाबेला ने क्षुब्ध स्वर में कहा—

'संसार की सभी स्त्रियाँ यद्यपि वे मेरी भाँति प्रतिष्ठित एवं आदरणीय नहीं हैं, फिर भी यदि इनमें से किसी के पुत्र की हत्या की जाती है, तो वे थाने में, अदालत में या जज साहब के पास फ़रियाद लेकर जा सकती हैं। वहाँ उनकी रक्षा की जाती है, उनकी ओर से पैरवी की जाती है। परन्तु ज़रा मुझे तो बतलाओ कि मैं कहाँ और किसके पास फ़रियाद लेकर जाऊँ ? मेरे पुत्र के घातकों को कौन दंड देगा ?'

एक मिनट तक चुप रहकर उसने कहा--

'काश, मैं जवान होती !'

उसने कसकर मुट्ठी बाँधी और मेज़ पर हाथ पटका। आर्जेंटाइन ने इसके उत्तर में जो कुछ कहा, वह मैं स्पष्ट न सुन सका। 'जनता का न्याय,' 'क्रांति की अदालत,' ये ही दो चार शब्द कान में पड़ गये।

चची आइज़ावेला आँखों में आँसू भर कर गालियाँ देने लगी।

'तीस वर्षों तक बराबर जर्मिनल यही विश्वास करता रहा कि एक-आध महीने में क्रान्ति हो जायगी। वह भी बस यही शब्द कहा करता था। मेरे विचार में तुम बिलकुल उस जैसे ही हो।'

आरजेंन्टाइन युवक ने सहमति प्रकट की। फिर बुढ़िया ने सिर हिलाकर इशारा किया और मेज़ के नीचे हाथ ले जाकर चुपके से कोई चीज़ उसके हाथ में दी। हाथ में लेते ही वह समझ गया कि हाथ का बम है। उसके चेहरे का रंग सहसा बदल गया। बम हाथ में लेकर वह उठ खड़ा हुआ। बम छिपा लेने के लिए बुढ़िया ने बहुतेरे इशारे किये, परन्तु उसकी दशा तो अब एक स्वप्नशील की जैसी थी। रूक्ष वदना वृद्धा की ओर देखकर वह मुसकराया और उसके बार-बार सिर हिलाने के उत्तर में उसने 'सहमति' सूचक सिर हिला दिया। उस वक़्त वहाँ दो अन्य वृद्ध और एक युवक मौजूद थे। मैं उस समय के अपने भय को बयान नहीं कर सकता। उनमें से एक बूढ़ा सरायवाले से बातचीत करने के अभिप्राय से उसके समीप जा बैठा। वह डाक्टरों का एक सहायक था—एक प्रकार से चीलघर का कुली। उसका कार्य था बालटियाँ तथा कीटाणु-विनाशक दवाइयों की बोतलें चीलघर में लाना और बाहर ले जाना। वह शव-परीक्षा में भी सहायता किया करता था। उसका हृदय अब काफ़ी कठोर बन चुका था। उसके मुख पर निरपेक्षता तथा संतोष की छाप थी। वह उस दुकान के खजांची से जहाँ कि मैं काम किया करता हूँ, बहुत कुछ मिलता-जुलता है। भिक्षुणियों (ननों) और डाक्टरों की संगति से उसके व्यवहार में शिष्टता सी आ गई है।

जर्मिनल के शव-निरीक्षण के सम्बन्ध में वह इस प्रकार बातचीत कर रहा था मानो वह उसी ने किया हो।

'उसकी खोपड़ी की हड्डी बड़ी मोटी थी। उसके ललाट में हमें

तीन बार छैनी लगानी पडी। हथौड़े की तीसरी चोट पर कहीं अन्दर घुस पाई।'

चची आइज़ाबेला यह सब सुनती रही। उसकी आँखें पत्ती की आँखों की तरह गोल-गोल प्रतीत हो रही थीं। उसको किसी बात पर आश्चर्य नहीं हो रहा था। बूढ़ा आगे कहता गया :

'वह मनुष्य जवान और कंकरीट के तूदे की भांति सुदृढ़ था! मैं अब निर्बल हो गया हूँ। किसी प्रकार गिरते-पड़ते इन दो पैरों से चलकर बाहर से बालटियाँ अन्दर लाता और अन्दर से बाहर ले जाया करता हूँ!'

चची आइज़ाबेला ने कोमल स्वर में कहा—

'उसकी खोपड़ी ही ऐसी थी जिसमें अपनी वृद्धा माता के चुम्बनों की अपेक्षा हथौड़े और छेनी के प्रति अधिक स्नेह भरा हुआ था।'

उस वृद्धा को इस बात का गर्व था कि उसने उस सुदृढ़ शरीर को, उस खोपड़ी को, जिसके खोलने में हथौड़े की तीन चोटें दरकार हुई थीं, जन्म दिया था। अब आर्जेन्टाइन काँपने लगा। कामरेड ने उससे बम लेकर अपने पास रख लिया। तत्पश्चात् वह आर्जेन्टाइन अपने हृदय की उथल-पुथल छिपाने के लिए द्वार पर गया और शीशों में देखने का बहाना करने लगा। मैं चची आइज़ाबेला के समीप पहुँचकर उसके सम्मुख बैठ गया। मैंने कुछ क्रोध के स्वर में कहा—

'ऐसा तुमने क्यों किया? तुम्हारे पास कितने बम हैं?'

'इनके अतिरिक्त चार और।'

'इनका क्या करोगी?'

वृद्धा उत्तर देने के पूर्व ज़रा देर झिझकी। फिर उसने अनिच्छा से कहा—

'मेरी इच्छा थी कि सभी का खात्मा करदूँ, परन्तु साहस न हुआ। यह कोई आसान काम नहीं है।'

'लाओ, वे सब मुझे दे दो।'

'अपनी कंचुकी के भीतर से निकालकर मेज़ के नीचे हाथ बढ़ाकर, उसने मुझको वे दे दिये। मैंने पूछा--'ये कहाँ से आये?' उसने खिन्नता के साथ उत्तर दिया--

'यद्यपि उसने यह बात कभी न सोची थी, तथापि वह मेरे बिना जाने हुए कभी एक पत्र भी न रखता था। अँगीठी के खोखले में उसने लगभग दो दर्जन बम रखे थे।'

मैंने उसको आज्ञा दी कि वह फिर किसी चीज़ को हाथ न लगाये। उसने मुझे बतलाया कि बमों के साथ एक लिखा हुआ पर्चा भी रखा था, जिस पर किसी कमेटी का हुक्म था। मैंने दूसरा पर्चा लिखा— 'जर्मिनल, एस्पार्टको और प्रॉग्रेसो के सिलसिले में चार काम में लाये गये।' उसके नीचे हस्ताक्षर के स्थान पर मैंने एक संख्या लिख दी।

'देखो उस पर्चे के साथ यह पर्चा अवश्य रख देना। इस गुप्त स्थान तक पहुँच किस प्रकार होती है?'

'अँगीठी के भीतर के एक छिद्र द्वारा।'

'क्या कामरेडों को उसका पता है?'

'हाँ, वह सब कामरेडों को मालूम है।'

भटियारा, जो ख़ूब मोटा-ताज़ा और गुलाब की तरह लाल था और जिसके पलकों के बस्त थे ही नहीं और जिसकी भौंहें केवल नाम मात्र थीं, चीलघर के कुली के साथ गपशप में तन्मय था।

'जैसा कि तुम कहते हो—जिस तरह सुअर मारा जाता है उसी तरह मनुष्य भी। गला काटकर ही न?'

चीलघर का कुली किसी दूसरी बात पर अड़ा हुआ था, जिसको मैं सुन नहीं सका। सराय के मालिक ने उत्तर दिया—

'अरे भाई, राइफ़िल की तो बात ही और है।'

उसने अपनी आँखों से उस सुअर के भय का प्रदर्शन किया

जिसके लिए बड़े दिन की मृत्यु बेला आ पहुँची है। मैं उस बेचारे का इसलिए मज़ाक नहीं उड़ाता कि मैं एक क्रांतिकारी हूँ और उसने हमारे प्रति सहानुभूति दिखाई थी।

जब मैं उस मेज़ पर वापस आया जहाँ कि मेरे मित्र बैठे हुए थे तो आर्जेन्टाइन ने शीशे के द्वार से पुकार कर कहा—'छापा मारनेवाली पुलिस से भरी हुई तीन लारियाँ आई हैं और वे गली को आदमियों से खाली कर रहे हैं। सरकारी शक्ति ने फिर कार्य करना आरम्भ कर दिया है। जनाज़े के जलूस में गड़बड़ हो जाने की आशंका है।' फिर सहसा उसने कहा—'भयानक परिस्थिति उपस्थित है। पुलिस शस्त्रों की खोज कर रही है। वह यहाँ आती हुई मालूम होती है।' हम लोग अपने रिवालवर निकालकर मेज़पोश की तह में छिपा देते हैं। बस पृथ्वी ही पर एक क़तार में दीवार से लगे हुए रह जाते हैं। इतने में पुलिस तलाशी लेती हुई आ पहुँचती है। सराय के मालिक को कुछ आज्ञाएँ दी जाती हैं। बार का वेटर द्वार बन्द करने जाता है। हम बिलकुल निरपेक्ष भाव से पुलिस की ओर दृष्टिपात करते हैं, जिसका सोलहों आने ठीक परिणाम होता है। हमारी तलाशी ली जाती है। हमारे पास से कुछ भी 'बरामद' नहीं होता। तत्पश्चात् और लोगों की तलाशी लेने के लिए पुलिस कमरे के पृष्ठ भाग की ओर जाती है। चची आइज़ाबेला को अब यह पता लगता है कि ये लोग पुलिसवाले हैं। उनका उपहास करने को वह तालू पर जिह्वा लगाकर 'चक-चक' का शब्द करती है। पुलिसवाले पहले यह नहीं समझ पाते कि वह उनका उपहास कर रही है। चची फिर पैर बढ़ाकर ठोकर मारती है मानो वह किसी कुत्ते को भगा रही हो। एक मिनट के लिए पुलिसवाले उसके सम्मुख ठहर जाते हैं। वे अभी दुविधा में पड़े हुए हैं।

'ओ, गन्दे कुत्तो यहाँ से दूर हो!' वह कहती है।

'बुढ़िया सठिया गई है।' उनमें से एक कहता है। 'वह मूर्खा है। यहाँ कोई कुत्ता है ही नहीं।'

इन शब्दों से बुढ़िया भड़क उठी। दोनों नितम्बों पर हाथ रखकर वह खड़ी हो गई। माला फ़र्श पर गिर पड़ी। वृद्धा नारी और जर्जर थी, किन्तु उसने इस समय ऊँचे दबाववाली शक्ति जैसा कार्य किया। उसके मुख से शब्दों की प्रचंड धारा बहने लगी। पहले उनमें काफ़ी शिष्टता थी, फिर वे कठोर होते गये और अन्त में गन्दे तथा बहुत गरम हो उठे। बीच-बीच में वह कभी-कभी पुलिसवालों के समीप आकर उनको अभिभूत-सा कर देती है। सराय का मालिक उनको बतलाता है कि वह जर्मिनल की माता है। ये लोग एक मिनट के लिए असमंजस में पड़ जाते हैं। वे यह विचार करने लगते है कि उन लोगों की माताएँ भी, जिनको कि सार्वजनिक रक्षा के नाम पर मार दिया जाता है, आखिर सज्जनों की माताएँ जैसी ही हुआ करती हैं। चची आइज़ाबेला अपनी नाभि पर मुक्का मारकर चिल्ला उठती है!

'मैंने उसको जना था। हाँ, हाँ, मैंने ही! इसीलिए न कि तुम उसे मार डालो, क्यों जी? माता किस प्रकार पुत्र जनती है, यह तुम क्या जानो! इस सम्बन्ध में तुम क्या जानते हो?'

पुलिसवाले इस बात को हँसी में उड़ा देना चाहते हैं। वे उत्तर देते हैं कि वे न तो इस बात को जानते हैं और न जानना ही चाहते हैं। वे लोग बाहर निकल जाते हैं। चची आइज़ाबेला द्वार तक उनका पीछा करती है और उन्हें ललकार कर अपना सदा का प्रिय वाक्य दुहराती है:

'अरे हरामी पिल्लो, जाओ, नरक में पड़ो!'

फिर वह लौटकर चिथड़ों के ढेर की तरह एक कोने में पड़ रहती है, परन्तु मेज़ के पीछेवाला वह कोना एक पवित्र स्थान बन जाता है। फ़र्श

से माला उठाकर वह चूमती है। उसी क्षण गोद में मुर्ग़ी लिए हुए स्टार वहाँ आ पहुँचती है। उसने हमको बतलाया कि नौकरशाही श्रमजीवियों को अस्पताल पहुँचने से रोकेगी। वह मुर्ग़े को इसलिए अपने साथ लेती आई थी कि उसके घर में पुलिस घुसी हुई है और वह कदाचित् मुर्ग़े को चट कर जाती।

वृद्धा ने शिर के बाल नोचकर कहा—

'धूर्त्त! यदि मैं वहाँ होती तो घर में घुसने की उनकी हिम्मत ही न पड़ती।'

मैंने द्वार में से देखा कि गार्डों ने मकान के चारों ओर घेरा डालना आरम्भ कर दिया है। हमको शीघ्र से शीघ्र यहाँ से निकल चलना होगा। स्टार का यहाँ रहना अच्छा नहीं है। विशेषतया हमारे साथ। जहाँ भी हम जायँगे वह हमारे मार्ग में बाधा बनी रहेगी। आजकल स्त्रियाँ एक जटिल समस्या तथा विघ्न प्रतीत होती हैं। सराय का मालिक हमारा हर काम बड़े ध्यान से देखता हुआ मालूम होता है। कदाचित् उसको सभी बातें मालूम हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि ये मूर्ख अभी तक क्यों नहीं समझ सके कि क्या होनेवाला है। दोनों वृद्ध फिर अस्पताल चले गये हैं। वर्दी के खाकी कोट और टोप पहने हुए वे दरवाज़े में खड़े देख पड़ते हैं। सराय का मालिक इधर-उधर झाँकने-ताकने के पश्चात् लुढ़ककर टेलीफोन के पास पहुँचता है। वह अपनी पत्नी से निश्चिन्त रहने को कहता है। मैं कितनी ही देर तक उसके घर का और चची आइज़ाबेला के घर का, जब जर्मिनल जीवित था, चिंतन करता रहता हूँ। यह कटु अनुभवोंवाली वृद्धा जिस पर दुःखों का केवल इतना प्रभाव हुआ है कि जब वह क्रोधावेश में कस-कर मुट्ठी बाँधती है तो उसकी भुजा की शिराएँ फूल जाती हैं और यह होटलवाला जो गिलासों और प्यालों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं जानता; किन्तु इन दोनों ने प्रेम भी किया है और घर भी बसाया है।

आख़िर प्रेम है क्या ? ये लोग सभी प्रेम कर चुके हैं और फिर भी इस दशा को पहुँचे हैं ; परन्तु यदि स्टार और मैं ? यह छोटी-सी मुर्ग़ेवाली लड़की शिकारी कुत्तों और मोरों के चित्रों से अलंकृत महारानियों से कहीं ज्यादा गौरवपूर्ण प्रतीत होती है। फिर भी मुर्ग़ा एक बेहूदा चीज़ है। यह मेरा विचार है। स्टार का विचार इसके प्रतिकूल है।

'यदि तुम यहाँ से जाना चाहो तो हम लोगों की चिन्ता मत करो।'

वह मेरी ओर देखती है। मैं मौन रहता हूँ। वह मुझे बताती है कि उसके यहाँ आने का कारण यह है कि सामर यहाँ आ रहा है। तत्पश्चात् सामर के विरुद्ध निन्दा का प्रस्ताव रखने के लिए वह मुझे फटकारती है। उसके कथनानुसार सामर को अपने स्केच बनाने का प्रमाणित होना नागवार था, क्योंकि उस समय वह उसके साथ थी और वह भी लपेट में आ सकती थी। इस बात का मेरे ऊपर कुछ-कुछ अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा। सामर के सम्बन्ध में जो अच्छे विचार मेरे मन में उठे थे, उन पर मुझे अब लज्जा मालूम हुई।

मैंने कन्धे उचकाकर कहा कि सामर अवश्य आता ही होगा क्योंकि हमें तत्काल एक बड़ा आवश्यक कार्य करना था।

'क्या कोई जान सकता है कि किस प्रकार का कार्य ?'

'हाँ वह जाना तो जा सकता है, परन्तु किसी को वह ज़बान से नहीं कहना चाहिये।'

प्रायः उसी क्षण सामर आ पहुँचा। उसे देखते ही हम लोग चलने को तैयार हो गये, किन्तु उसने हमसे ठहरने को कहा और वह टेलीफोन के पास गया। उसने अपना स्वर ऐसा बना लिया मानो वह बड़ी दूर से बोल रहा है। उसने एकाक्षरों में अजीब-सी बातें कहीं, वह अनिच्छा से हँसा, और फिर अस्पष्ट रीति से बातें करने लगा। यह स्पष्ट था कि वे उससे पूछ रहे थे कि 'तुम कहाँ से बोल रहे हो'

और उसने उत्तर दिया 'ऐटीनियो से' जो सरासर झूठ था। तत्पश्चात् उसने एक सिनेमाघर का नाम लिया और स्वर नीचा करके कोई मीठी बात कही। मुझे उसकी सुन्दर प्रेमिका का स्मरण हो आया जिसको कि मैंने गोयावा की ट्रामवे पर देखा था। क्या वह उसी के साथ बातें कर रहा था—इस तरह मानो वह उससे कोसों दूर हो। उस संसार में यहाँ से बड़ा अन्तर है। वहाँ रेशमी वस्त्र हैं और रंग-बिरंगा प्रकाश है। वहाँ के लोग कहते हैं 'आपकी असीम कृपा से,' कैसा 'हृदयग्राही' और कभी किसी बात का सीधे-सादे 'हाँ' 'ना' में उत्तर ही नहीं देते। जब सामर हमारे पास लौटा तो उसके चेहरे से यह स्पष्ट जान पड़ता था कि वह भी इसी प्रकार की बातें सोच रहा था—'अरे, यह टेलीफोन तो एक क्षण में आकाश से पाताल को मिला देता है।' परन्तु उसने वास्तव में जो हम से कहा वह यह था कि उसकी जेब समाजवादियों का एक छोटा-सा घोषणा-पत्र थी जिसमें उन्होंने आम हड़ताल का समर्थन किया था। उसने हमसे उसको पढ़ने को कहा। 'हमें उसका क्या उत्तर देना चाहिये। उत्तर हमें अवश्य देना होगा।' मेरी राय में उसका कोई अधिक महत्त्व नहीं है।

'बड़ी बात तो यह है,' मैं सामर से कहता हूँ, 'कि उन्हें विवश होकर हड़ताल का समर्थन करना पड़ा है। उनके इस घोषणा-पत्र से होता ही क्या है? यह तो इस विषय का केवल राजनीतिक पहलू है।'

और है भी यह सत्य। सामर ऐसी बातों का केवल बाह्यरूप ही देखता है। चची आइज़ाबेला किसी निश्चित उद्देश्य से भौंहें चढ़ाए हुए आती है। बिना किसी इरादे के हम लोग सब एक पंक्ति में खड़े हुए मिलते हैं। वह हमारी आँखों में आँखे डालकर हमारे मन का असली हाल जानना चाहती है। आर्जेन्टाइन ने कहा :

'मेरे लड़कपन ही से लोग सदा मुझे अल्पबुद्धि कहते हैं। यदि मैं क्रान्तिकारी हो जाऊँगा तो मेरी मूर्खता एक रहस्यात्मक तथा असाधारण

भाववाली समझी जाने लगेगी और लोग मुझे मूर्ख कहना छोड़ देंगे। फिर वे कहा करेंगे—वह विप्लववादी है, और शायद वे यह शब्द मुझसे कुछ भय खाते हुए कहेंगे।

मेरे सब से पुराने मित्र ने कहा—'मैं तो इसलिए बाहर निकला हूँ कि जर्मिनल की तरह उन्हें अपनी हत्या कर डालने दूँ।'

दूसरे ने कहा—

'मैं मैड्रिड की श्वास बन्द कर देना चाहता हूँ! मैं लोगों को डराकर खानों और खेतों में काम करने के लिए भगा देना चाहता हूँ। अपनी तरह पुराने कपड़े पहने और हफ़्ते भर की ठोड़ी बढ़ाए हुए।'

सामर बोला—

मनुष्यों को अपनी सारी बुद्धि काम में लाने को बाध्य करके एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था स्थापित करना जिससे समाज में कोई श्रेणी भेद न रह जाय। मैं समस्त सम्पत्ति को और इससे भी अधिक, सबके मस्तिष्कों और इच्छा-शक्ति को समाज का धन बना देना चाहता हूँ।'

स्टार—'मैं चाहती हूँ अपने मुर्ग़े को पुलिस के दाँतों से बचाना।'

और मैं—'स्थानीय सिंडीकेटों के संघ के प्रस्तावों को कार्यरूप में परिणत करना।'

चची आइज़ाबेला भौंहें सिकोड़ती है, अपना कान मरोड़ती और अपनी नाक पर इस तरह हाथ फेरती है मानो वह उसको माप रही हो और फिर उसी कोने में चली जाती है। तत्पश्चात् वह सराय के मालिक को घूरकर देखती है। हम लोग कौन हैं। वह कहता है—

'मैं आप लोगों से सहानुभूति रखता हूँ।'

वृद्धा ने बैठते हुए, रुष्ट भाव से सोचा कि जिन शब्दों के लिए उसका हृदय तड़प रहा था, वे किसी के भी फूटे मुँह से न निकले। पुत्र के बलिदान से उसके भीतर जिस नैतिक शक्ति की सृष्टि हुई थी वह अब डूबने-सी लगी और बुढ़ापा उसे दबाने लग गया।

'इस प्रकार हिम्मत न हारो, चची आइज़ाबेला।'

जब वृद्धा ने यह देखा कि औरों पर उसकी मनःस्थिति प्रकट हो गई है तो उसने सर उठाकर थूका :

'हरामी—सबके सब निकम्मे हरामज़ादे !'

हम लोग सराय से चल पड़े। स्टार और वृद्धा वहीं ठहरी रहीं। लोग यह सोच रहे थे कि जनाज़े का जलूस नहीं निकलेगा। तीनों लाशों को एक लारी में डालकर पूरी रफ़्तार से बग़ल की गलियों में से ले जाएँगे। लोगों की इच्छा थी कि जनाज़े की रस्म सच्चे अर्थों में सार्वजनिक हो और ताबूत खुले हों। जिस प्रकार बूर्ज़्वा लोगों ने अपने स्वदेशप्रेमी शहीदों की स्मृति में हम सब लोगों से सार्वजनिक छुट्टी मनवाई थी इसी प्रकार हमारे शहीदों का भी सारा नगर सम्मान करे। अन्तिम मिनट तक सभी लोगों का यही विचार था कि जनाज़ा नहीं निकाला जाएगा। किन्तु अन्त में एक बड़ी सनसनी फैलानेवाली खबर सुनाई दी। समाजवादी नेता अस्पताल में हैं और तीन शव नहीं, वहाँ चार शव हैं। प्रॉग्रेसो, एस्पार्टको और जर्मिनल के अतिरिक्त उस दिन जोज़े मीरज़े रॉडरीग्वेज़ नाम का एक बेकार समाजवादी भी आहत हुआ था, जिसका कल रात देहान्त हो गया था। इस बात से समाजवादियों को बड़ा हर्ष हुआ क्योंकि अब उन्हें हमारा साथ देने का एक ज़बरदस्त बहाना मिल गया और उन्होंने मंत्रिमण्डल से जनाज़े का जलूस निकाले जाने और सार्वजनिक शोक मनाए जाने की माँग की। बेचारे रॉडरीग्वेज़ ने मरकर इन लोगों को एक बड़ा अच्छा राजनीतिक सुअवसर प्रदान किया था! जब उन्होंने अपनी प्रभातकालीन अकर्मण्यता पर विचार किया तो समाजवादी नेताओं ने सोचा कि हम लोग बूर्ज़्वाजी तो हैं नहीं और ऐसा प्रतीत होना हानिकर है, यह कि और देशों में—जर्मनी और इंगलैंड में—समाजवादी प्रजातंत्रवादी लोग असफल रहे थे, अतः अपने को श्रमजीवी कहना

इतना ही हितकर है जैसा कि मन्त्रिमण्डल में सम्मिलित होना। उन्होंने सार्वजनिक जनाज़े का प्रस्ताव किया और सरकार ने उसको इस शर्त पर स्वीकार कर लिया कि समाजवादी जलूस में आगे-आगे रहें। वे अपनी जगह मौजूद थे। कामरेड प्रॉग्रेसो, एस्पार्टको और जर्मिनल ! लो अब यह भी आ मिले। पन्द्रह वर्ष हुए कि ये तीनों समाजवादी सिंडीकेटों में तुम्हारे सहकारी भ्राता थे। चूँकि गलियों में जनता की भीड़ है और गोलियाँ खिड़कियों में से सनसनाती हुई गुप्त-से गुप्त शयनागारों में जा पहुँचती हैं, अतः पतली और सस्ती लकड़ी के ताबूतों में पड़े हुए तुम्हारे ये पहले साथी फिर तुममें आ मिलना चाहते हैं। बूर्ज्वा-आज्ञा का पालन करने के यह अभी अभ्यस्त नहीं हो पाये हैं। सामर के कथनानुसार इसका कारण यह है कि राजनीतिक आकर्षण-केन्द्र सामाजिक प्रजातंत्रवाद से हट गया है, परन्तु आज वह पत्रकार प्रसन्नचित्त नहीं देख पड़ता। वह हतोत्साह और खिन्न प्रतीत हो रहा है। आज रात्रि को बहुत-सी कमेटियों की बैठकें होंगी, किन्तु सर्वप्रथम हमें संघों के प्रतिनिधियों से भेंट करनी है। जिन लोगों को इस बात का ज्ञान नहीं है, हमें उनको केवल यह समझा देना मात्र है कि मशीनों आदि को खराब करने के सम्बन्ध में हमारी जो योजना थी, उसको कार्यरूप में परिणत करना अब असम्भव हो गया है। जो कुछ हुआ है उन सब को समझाने के लिए सामर को हमारे साथ चलना होगा। आज का दिन उसके लिए बड़ा मनहूस है। ऐसी परिस्थितियों में किसी भी व्यक्ति के लिए अपनी मूर्खता स्वीकार करना बड़ा दुस्सह होता है।

गार्ड वहाँ से हटकर समीप की गलियों में ड्यूटी पर चले गये। समाजवादी लीडरों के आगमन से सारी परिस्थिति बदल-सी गई। श्रमजीवियों का एक रेला-सा आया। गार्डों ने भीड़ में घुसकर ताबूतों और जलूस के नेताओं के लिए रास्ता किया। सी० आई-डी वाले भीड़

में आ मिले किन्तु व्यर्थ, क्योंकि उन्हें हम सबकी 'तलाशी लेनी होगी और हम सभी को जेल ले चलना होगा। कुछ मिनटों के लिए सूर्य मेघाच्छादित हो गया। जनाज़े चिमगीदड़ों के पेट से भी ज़्यादा काले और हमारे विश्वास से बहुत ज़्यादा बड़े प्रतीत हो रहे थे। जनाज़े आते हैं, किंतु भीड़ उनके फाटक पर खड़े होने में बाधा देती है। कुछ लोग धक्के देते हुए आगे बढ़ जाते हैं और जनाज़ों को अपने कंधों पर ले चलने के लिए कटिबद्ध हो जाते हैं। गड़बड़ मच जाती है। अंततः इसकी अनुमति मिल जाती है और प्रत्येक जनाज़े को ले चलने के लिए एक ही क़द के छः छः कामरेड चुन लिये जाते हैं। समाजवादी जनाज़ा सबसे पीछे रहता है और उसके पीछे एक खाली गाड़ी है जिस पर फूलों के चार हार पड़े हुए हैं। हमारे ज़नाज़ों पर फूल नहीं हैं।

किसी को भी पता न चला कि यह सब कैसे और किसके द्वारा हुआ, परंतु सबके देखते-देखते तीनों जनाज़े काली और लाल पताकाओं में लिपटे हुए दृष्टिगोचर होने लगे। भीड़ में से निकलकर समाजवादी नेता जलूस के अगले सिरे पर आ पहुँचे। उनका वहाँ खड़ा होना यह बताने के लिए काफ़ी था कि यह सब कुछ उन्हीं का किया-कराया है। कम-से-कम मेरे किए यह बात असह्य थी। यद्यपि ऐसा प्रतीत नहीं होता, तो भी हम लोग काफ़ी सहनशील हैं। सामर इसका निषेध करता है :

'हमारा हाल यह है कि हममें अपनी सफलता से पूरा लाभ उठाने की योग्यता ही नहीं है। हमें तो केवल यही आता है कि हम अपनी पराजय को अधिक-से-अधिक किस तरह सफलता के रूप में बदल दें।'

'यह कोई छोटी बात नहीं है।'

'हाँ; किन्तु इतना पर्याप्त नहीं है।'

इतना कहकर वह मौन हो गया और हम जलूस के साथ-साथ

चलते रहे। जब सामर के विरुद्ध निन्दा का प्रस्ताव पास हो गया, तो हममें से किसी में भी इतनी योग्यता न थी कि उसे उसकी दुदर्शा की याद दिला सके, व्यक्तिगत रूप से इस अवसर को उसके विरुद्ध शस्त्र की तरह प्रयोग करने की क्षमता रखने का तो कहना ही क्या। किन्तु वह इस बात को जानता था और खुश था, और छोटी-छोटी बातों पर जो झगड़े उठते थे उनमें हिस्सा नहीं लेना चाहता था। अतएव कुछ देर तक हम चुप-चाप चलते रहे। चूहे की तरह दुबला-पतला, सूखा हुआ, पीला-मुखवाला एक आदमी भीड़ को चीरता हुआ हमारे समीप आया। सामर का अभिवादन करने के पश्चात् उसने प्रश्न किया कि जलूस में समाजवादी नेताओं की उपस्थिति का क्या अभिप्राय था?

'एक संयुक्त क्रांतिकारी-मोर्चा निर्माण करने के लिए वे हमारे साथ निश्चित रूप से आ मिले हैं।'

उस अपिरिचित मनुष्य की आँखें मानों विस्फारित हो गईं। वह वज्राहत-सा रह गया। हम आगे बढ़ गये। सामर ने हँसकर कहा :

'यह एक बैंक-पतियों का गुप्तचर है। यह अब एम्सटर्डम को तार देने दौड़ा जायगा। कल प्रातःकाल यह समाचार सारे संसार के पत्रों में छप जायगा।'

'और इसका परिणाम क्या होगा?'

सामर ने कन्धे उचकाकर कहा।

'यदि केवल दो-चार बंक-पतियों का दिवाला हो गया तो हम लोगों का उतना ही लाभ होगा।'

जो समाजवादी जलूस का नेतृत्व कर रहे हैं, अब उनमें से एक को मैं पहचान गया हूँ। मैंने उससे कांग्रेस में बातचीत की थी जहाँ कदाचित् वह सबसे शक्तिशाली व्यक्ति है। मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ। गली के मोड़ के कारण जन-सरिता अदृश्य हो जाती है। फिर भी भीड़ की उद्विग्नता से उसके भावों का अनुमान अच्छी तरह हो सकता है।

सबके मस्तिष्कों में यही विचार चक्कर लगा रहा है—'यहाँ समाजवादी का क्या काम ? हम उनके पीछे-पीछे क्यों चल रहे हैं ?' कोई सम्मानपूर्वक आग्रह करता है कि इन मृतकों में एक समाजवादी है। सामने की ओर, हमारे तीनों जनाज़े आहिस्ता आहिस्ता और झूम-झूमकर चल रहे हैं। आँखें आधी मूँदकर अग़ल-बग़ल देखने से सिविल गार्डों के कठोर, पोले और बड़े-बड़े टोप दिखाई पड़ते हैं। लो अब एक छोटा-सा इश्तिहार बाँटा जा रहा है। यह समाजवादियों का एक घोषणापत्र है जिसमें शहीद की मृत्यु के उत्तरदाताओं को दंड दिलाने का वचन दिया गया है और जुलूस का रास्ता बतलाया गया है। 'जुलूस पास्यो दि प्रेदो होता हुआ प्लाज़ा दि कास्टेलर पहुँचेगा जहाँ से जनाज़े क़ब्रिस्तान की ओर अग्रसर हो जाएँगे और सार्वजनिक प्रदर्शन समाप्त हो जायगा।' यह आदेश है। उन्हें बहुसंख्यक होने का भरोसा है। अब साढ़े तीन बजे हैं। सायंकाल होने में अभी बहुत विलम्ब है—मई मास में सूर्य साढ़े सात बजे से पहले अस्त नहीं होता—जुलूस को प्लाज़ा दि नेप्च्यूनो की ओर मुड़कर प्वेर्टा दि सोल तक जाना चाहिये। जो लोग जनाज़े ले जा रहें हैं उनसे गुप्तरीति से हमने यह कह दिया है।

'हमारे शहीदों का दर्शन करने के लिए बूर्ज़्वा लोगों को बाध्य करना होगा। जब पैब्लो इगलेसियस मरा तो उस सड़े हुए मांस-पिंड को समाजवादियों ने तीन दिन तक जनता की आँखों के सामने रक्खा था।'

जुलूस के पृष्ठ भाग में घोषणापत्र वातावरण को विषाक्त कर रहा था। गलियों में से जो शक्तियाँ सावधानी से सब कुछ देख रही थीं हमारी ओर सन्देहपूर्ण दृष्टिपात करने लगीं। सुबह की घटनाओं ने हमें एक अभेद्य नैतिक विजय प्रदान की है। पास्यो दि प्रेदो पहुँचते-पहुँचते जुलूस तीन गुना हो गया। दहकते हुए कोयलों के रंग का लाल इत-

वार, कम्पायमान नगर और जन समूह के शिरों के ऊपर जहाज़ों के समान थिरकते हुये तीन शव! हमारी रक्त ध्वजाएँ बूर्ज़्वा लोगों की बैजनी ध्वजाओं को मानो चुनौती दे रही थीं। समाजवादी शव, बिना पताकाओं के पीछे-पीछे जा रहा था। सामर को अब स्मरण हुआ कि उसको आज खाना खाने तक का अवकाश नहीं मिल सका है। वह कहने लगा--

'यदि मेरे पेट में ज़ख्म लगा तो इससे मैं और भी जल्दी अच्छा हो जाऊँगा।'

यद्यपि प्रायः सभी सच्चे क्रांतिकारी अपने जीवन में किसी विशेष कारण के उपस्थित हुए बिना ही इस पथ पर अग्रसर हुए हैं फिर भी मैं यह सोचने लग गया कि सामर क्रांतिकारी क्यों हो गया। किसी अव्यक्त नैतिक अभाव के कारण जिसका बचपन से अनुभव करते आये हैं और जो शिक्षा द्वारा उत्तरोत्तर पुष्ट होता गया है, ये लोग बिना जाने ही क्रांतिकारी बन जाते हैं।

अब हमें गीत सुनाई देते हैं। इस अरण्य में जहाँ अकेला व्यक्ति एक वृक्ष मात्र है, मनुष्यों की टोलियाँ इस प्रकार गायन कर रही हैं मानो आज बड़ा दिन हो! इस दिन हम चिराग़-जले मशालों की तरह जलती हुई मोमबत्तियाँ लेकर निकला करते थे और कभी-कभी मेघों के आगे-आगे चलनेवाले श्वेतवस्त्र धारी विनाशकारी देव-दूतों के गीत गा उठते थे:

आओ हम सब मिलकर
अन्तिम युद्ध करें।

गिरजाघर के अन्दर बचपन में जैसा धार्मिक भाव मेरे मन में उदय हुआ था आज बिलकुल वैसा ही भाव मेरे हृदय में भरा हुआ है। स्पष्ट है कि न तो यहाँ आज संत हैं और न पादरी ही। सामर विचार-मग्न है। बिना इरादे के हम लोग 'अन्तर्राष्ट्रीय गीत' की ताल

पर मार्च कर रहे हैं। जनाज़ों के चारों ओर खड़ी हुई आईबेरियन अराजकवादी संघ की एक टुकड़ी गाती है—'जनता के पुत्र, ज़ञ्जीरों में बँधे हुए,' और ऐसा प्रतीत होता है मानो आकाश नीचे खिसक आया हो, वायु भाराक्रांत हो, और श्वास लेना दूभर हो गया हो। जलूस बराबर आगे बढ़ता जा रहा है और उसका अग्रभाग क़रीब-क़रीब नेप्ट्यूनो तक जा पहुँचा है। ग़ालिबन ७०,००० मज़दूरों का समूह है। अपनी माँदों में पड़े हुए बूर्ज़्वा लोग डर से थर-थर काँप रहे होंगे। मैं सामर से यह कहता हूँ :

'यदि ये सच्चे क्रान्तिकारी होते तो हम आज रात को पूर्ण विजय प्राप्त कर लेते। यदि हमारी संस्था सचमुच प्रभुत्व प्राप्त करने की इच्छुक होती तो आज यह काम करना कितना आसान होता!'

साम्यवादी उक्ति होते हुए भी मैं इसका निषेध नहीं करता। हम 'अन्तर्राष्ट्रीय' की ध्वनि पर चले जा रहे हैं। घुड़सवार गार्ड हमारी इस प्रकार देख-रेख कर रहे हैं जिस प्रकार गड़रिये अपने गल्लों की चौकसी किया करते हैं। अब हमने द्वेष करना छोड़ दिया है। हम अब बलवान् हैं और सब कुछ कर सकते हैं। हम चले जा रहे हैं, जर्मिनल, एस्पार्टको और प्रॉग्रेसो के पीछे-पीछे, आहिस्ता-आहिस्ता, अनन्त की ओर। हम न्याय और स्वतंत्रता की अनन्तता की ओर बढ़े चले जा रहे हैं। सामर बाधा देकर कहता है :

'स्वतंत्रता कोई अन्तिम ध्येय नहीं हैं। वह तो एक पताका मात्र है।'

'वाह! हम बलशाली हैं। हम को हमारे पथ से कोई चीज़ नहीं हटा सकती। प्रॉग्रेसो, एस्पार्टको और जर्मिनल के जनाज़े उसी प्राचीन ऊँचे मार्ग पर जा रहे हैं। मृत्यु या विजय। इसके अतिरिक्त अन्य बातें बूर्ज़्वा मत के आगे झुकना है, 'नर्मदल' का ढकोसला मात्र है।' सामर और मैंने निश्चय किया कि मनुष्यों के सामान्यतः क्या विचार हैं, यह

हमको जान लेना चाहिये। हम जुलूस के अग्रभाग के समीप हैं। अतएव अपनी गति ढीली करके, अपने पास से होकर जानेवाले मनुष्यों की बातचीत सुनने से, हमारा मनोरथ सिद्ध हो सकता है। जो कुछ मुझे याद आता जाएगा मैं उसीको लिखूँगा! एक आदमी ने कहा—'मेरे पास दो रिवाल्वर हैं, परन्तु मुझे दोनों की आवश्यकता है। इससे कम में आदमी की गुज़र ही नहीं?' दूसरे के उत्तर को मैं सुन न सका। लोगों की भीड़ें हमारे पास से होकर गुज़र रही हैं। कोई काला कोट पहने हुए है तो कोई खाकी, किसी का कोट चमकीला है तो किसी का पैबन्ददार। 'यदि हम इन तीनों शहीदों को भी गिन लें तो प्रजातन्त्र के आगमन के उपरांत हमारे दो सौ पन्द्रह साथी काम आ चुके हैं।' बहुत-से मनुष्य जाकटें पहने हुए हैं। एक की जाकट कोहनी पर फटी हुई है। दूसरे का कालर पसीने से गल गया है। 'नहीं, सोलह, क्योंकि समाजवादी को भी गिनना होगा।' कोई निषेध करता है—'समाजवादी श्रमजीवी नहीं हैं।'

सामर उत्तर देता है—'यदि समाजवादी न मरा होता तो हमारा यह जुलूस भी न निकल पाता।' इसका कोई प्रत्युत्तर नहीं देता, क्योंकि इसकी सत्यता से इन्कार ही नहीं किया जा सकता। हम जब भी कोई प्रदर्शन करना चाहते हैं तो हमारे मार्ग में सदा विघ्न डाले जाते हैं। अन्तिम वक्ता की बात का समर्थन करता हुआ एक और बोला—'यदि ये लोग हमें इस तरह काम करने दिया करें तो रिवालवरों की ऐसी आवश्यकता ही क्यों हो?' एक और बोल उठा—'ज़रा सब्र करो—यह अभी समाप्त थोड़े ही हो गया।' हमारे पीछे आनेवाले लोगों में 'श्रमजीवी वर्ग के एकाधिपत्य' के प्रश्न पर चर्चा हो रही है। सब लोग इसके विरोधी हैं। किन्तु यदि शासन की बागडोर आईबेरियन अराजकतावादी संघ के हाथों में हो और आर्थिक नियन्त्रण का भार जातीय श्रमजीवी संघ पर हो तो वे सब ऐसे डिक्टेटरशिप को

स्वीकार कर लेंगे। सामर की राय में ऐसा होना अनिवार्य है यदि अराजकतावादी संघ यथेष्ट शक्तिशाली हो और उसमें जातीयरूप से आक्रमण करने की क्षमता हो। मैं उससे कहता हूँ :

'तुम तो अराजकतावादी नहीं जान पड़ते।'

उत्तर में सामर कन्धे उचकाकर कहता है :

'राष्ट्र के निषेधरूप में तो अराजवाद बहुत ठीक है। किन्तु अमूर्त्त कोरा खयाली अराजवाद एक प्रकार का धर्म है। मेरे लिए उसमें कोई आकर्षण नहीं है। क्योंकि सभी धर्मों की तरह उसके मूल में अंधविश्वास स्थित है और एक काल्पनिक आदर्श को अपना ध्येय मानता है। अराजवाद और क्रांति में कोई पारस्परिक संबंध ही नहीं है। कोई आध्यात्मिक तत्व हमारी क्रांति का मूलाधार हो ही नहीं सकता। आजकल हमारी आत्मा का भाव, और हम जिस रूप में उसे मानते हैं वह भी, बूर्ज्वा है। किन्तु इस आत्मा के बावजूद भी हमारी क्रांति होकर ही रहेगी।'

मैं उसकी इस बात को पूरी तरह नहीं समझता, परंतु उसके लहजे की विमलता से मैं प्रभावित अवश्य होता हूँ। हमारे दाहिनी ओर के मज़दूर कह रहे हैं कि राज-मज़दूरों की सिंडीकेट सर्वश्रेष्ठ है। दूसरा आदमी बीच में बोल उठता है : 'किन्तु वेटरों की सिंडीकेट ने बे-रोज़गारों की सहायता का प्रबंध किया है।' पीछे की ओर से हमें जर्मिनल का नाम सुन पड़ता है। जब कभी कोई कामरेड उसका नाम लेता है तो हमारे संघर्ष का कोई-न-कोई प्रसंग अवश्य छिड़ जाता है। कारण यह कि जर्मिनल का सारा जीवन इसी संघर्ष में व्यतीत हुआ था। अब मृत्यु के कार्यशून्य, मोघ क्षेत्र से उसकी अनवरत चेष्टा हमें और भी अधिक ज़ोर से प्रेरित कर रही है। एस्पार्टको का नाम अपेक्षाकृत कम सुन पड़ता है, किन्तु वह अपनी बिल्ली, अंधी लालटेन और फंदों के साथ रात को शिकार करता हुआ अब भी हम लोगों की आँखों के सामने घूमा करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह अभी मरा नहीं है और

अभी-अभी कुछ ही देर बाद हमारी उससे फिर भेंट होनेवाली है। जर्मिनल के संबंध में लोग कहा करते हैं—वह एक पुरुष था—बस और कुछ नहीं। एस्पार्टको को वे एक 'अराजकतावादी' बतलाते हैं। प्रॉग्रेसो को वे प्रथम श्रेणी का मिस्तरी कहते हैं और यह कि उसी ने राज-मज़दूरों की सिंडीकेट का संगठन किया था। यह तीनों मिलकर एक निखिल सत्ता हैं जिसकी आत्मा एस्पार्टको है, जर्मिनल शरीर और प्रॉग्रेसो क्रियाशक्ति है। सामर इस बात से प्रसन्न नहीं हुआ।

हम अब भी पिछड़े जा रहे हैं। सब लोग गा रहे हैं। हमारे साथ बहुत-से समाजवादी भी हैं; किन्तु वे सबके सब प्रायः मौन हैं। सामर आगे बढ़ते हुए आकाश पर दृष्टिपात करता है।

'सामान्य मत जानने की आज कोई सूरत नज़र नहीं आती,' उसने कहा। 'आज जो न हो रहे थोड़ा ही है।'

जहाँ-तहाँ लोग क्षुब्ध स्वर में चिल्ला रहे हैं। 'प्वेर्टा दि साल को चलो।' समाजवादी नेताओं की आज्ञा का मतलब समझकर जन समूह विद्रोही हो गया है और अराजवादी संघ की आज्ञापालन पर कटिबद्ध देख पड़ता है।' प्वेर्टा दि सोल होकर! चारों ओर से यही पुकार उठ रही है। आवाजें बढ़ती जा रही हैं। जनाज़े अब प्लाज़ादि नेप्टयूनो आ पहुँचे हैं। सामर और मैं अब भीड़ को चीरते हुए सवेग आगे बढ़कर अपनी पहली जगह पहुँच जाते हैं। हम मार्ग में लोगों को अपनी योजना बतलाते आये हैं। हमारे पीछे आवाज़ों का प्रतिक्षण बढ़ता हुआ एक तूफ़ान उठ रहा है। आकाश धूसर तथा संदिग्ध है। चेहरों का रंग ज़्यादा सफ़ेद है और वृक्षों का रंग साधारण से अधिक हरा है। 'प्वर्टा दि सोल को।' मुझे केवल इस वाक्य का अन्तिम शब्द ही सुनाई दे रहा है। 'सोल!' हज़ारो गलों से निकलनेवाला शब्द—'सोल!' जनाज़ों को ले चलनेवाले लोग बाईं ओर मुड़ना चाहते हैं। सेंट जेरोनिमो का

प्रवेश-मार्ग सवार और पैदल सेना ने बिलकुल रोक रक्खा है। 'सोल !' इस चीत्कार में कितनी ही नई आवाज़ें आ मिलती हैं। आकाश के धूमिल तोरण से टकराकर यह नाद शंखनाद-सा प्रतिध्वनित हो उठता है। 'सोल !' जनसमूह निश्चल खड़ा है। 'सोल !' सामर हँसता है। आकाश एक आश्चर्य-चकित किन्तु आज्ञाकारी सेवक की तरह एक रौशनदान खोल देता है जिसमें से पीली किरणें निकल आती हैं। जनाज़ों के काले कलेवर पर सूर्य की पीली रश्मियाँ चमचमा उठती हैं। परन्तु सामर के हँसने का कारण यह नहीं है। जनसमूह दो अक्षरों की धुन बाँधे हुए है—'सोल !' सामर हँसे जा रहा है। उसका हास्य कटु एवं कुटिल है।

'चालीस हज़ार गलों के लिए यह कितना प्यारा शब्द है !' वह अपने हास्य का निरूपण करता हुआ कहता है।

किन्तु वह पूरी बात नहीं बता रहा है। उसके हँसने का कारण यह है ही नहीं। उसका आनन्द इससे कहीं गहरा, प्रच्छन्न तथा शालीन है। वह ऐसा मदोन्मद है जिसको, चण्डूबाज़ के सदृश, वह कभी स्वीकार ही नहीं कर सकता। उसके इस आह्लाद में उसकी प्रेमिका की मदभरी चितवन भी काम कर रही है। 'सोल !' 'सोल !' सहसा मैं स्वयं अपनी सूक्ष्मदर्शिता से भयभीत हो उठता हूँ। वह उसकी वाग्दत्ता पत्नी उसको 'सूर्य,' बहुत मुमकिन है, 'मेरे सूर्य,' 'मेरे हृदय के सूर्य,' कहकर अवश्य पुकारती होगी। वह बूर्ज्वा है, किन्तु अब सामर उसको क्रांति से परिवर्तित, जनता के सायुज्य रूप में देख रहा है ! 'सूर्य,' 'सूर्य !' मानो वही उसको पुकार रही है ! अब उसके लिए सभी कुछ सम्भव है। क्रांति और उसका व्यक्तिगत सुख दोनों ही अब साथ-साथ चल रहे हैं।

जुलूस के अब दो भाग हो गये हैं। हमारा दल जनाज़ों के चारों ओर जमा हो रहा है और अन्य लोग प्लाज़ा दि कास्टैलर की ओर

चले जा रहे हैं। हमारे साथी अब भी 'सोल' की ध्वनि लगा रहे हैं। उनका भाव भर्त्सनापूर्ण है। हमारी योजना कार्य रूप में परिणत होती जा रही है। 'सोल' का नाद त्याग कर जनसमूह अब साम्यवादी तथा अराजकतावादी 'अन्तर्राष्ट्रीय गान' की तान छेड़ रहा है। विश्वास तथा दृढ़ संकल्प के साथ हम सेना के विरुद्ध बढ़ रहे हैं। उन्होंने गली रोक रक्खी है परन्तु वे शीघ्र ही मार्ग छोड़ देंगे। हमारे एक ओर पैलेस होटल है और दूसरी ओर रिट्ज़। अब, ओ धनी तथा अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकवृन्द, हमारे तीन मृत भाइयों की ओर निहारो! वे लोग चौथे शव को द्रुतगामी वाहन द्वारा यहाँ से दूर ले गये हैं। भयभीत मत होना! हम भली भाँति जानते हैं कि आप इसको अशिष्ट कहेंगे, किन्तु स्पेन में अशिष्टता कोई दलील नहीं है। यह देखिये, प्रॉग्रेसो, एस्पार्टको और जर्मिनल। यह तीनों जनाज़े एक उत्कृष्ट स्मारक के रूप में रक्खे जा सकते हैं। हाँ, हाँ, एक मुहर्रमी यादगार की सूरत में। परन्तु होगा तो वह हमारा अपना स्मृति-स्तंभ। हमें भी बूर्ज़्वा लोगों को अपना स्मारक दिखाने का इतना ही अधिकार है जितना कि उन्हें वह दूसरी मई वाला, वृक्षों के मध्य में स्थित, स्मारक दिखाने का अधिकार है। प्रॉग्रेसो, एस्पार्टको, जर्मिनल। हल्लो, सामर, ज़रा उस पीले चन्द्रमा की ओर तो देखो। उसी ने तो कहा था—'तीन नवीन ग्रह—प्रॉग्रेसो, एस्पार्टको और जर्मिनल हमारे यहाँ आये हैं!'

सूर्य अब फिर निकल आया। साथियो, आगे बढ़े चलो! हमें सूर्य से क्या लेना है? हमको तो प्वेर्टा दि सोल पहुँचना है! आज तो आकाश भी हमें धोखा देने का प्रयत्न कर रहा है। भाड़ में जाने दो आकाश को! गाओ! गाओ! हमें दूर रहने की सूचना देनेवाला जो यह बिगुल बज रहा है, इसकी ज़रा भी परवा मत करो। बस गाये जाओ! हमारी आवाज़ें सब जगह घुस जायँगी। स्वार्थ के आयुध से

ढके हुए शिरों को हमारे विचार गोलियों की तरह भेद डालेंगे। गाओ! बस, गाये जाओ!

एक गोली चली। और गोलियाँ चलती हैं। जन समूह मौन है। उसके सिर के ऊपर जनाज़े डगमगा उठते हैं। बिगुल फिर बजता है। यह है क़ानून! पहले क़ानून आता है, फिर उसके पीछे कार्य। प्राचीन सभ्यताओं की यही रीति है। किन्तु उन सभ्यताओं में, जो हमारी सभ्यता के सदृश, अब जन्म ले रही हैं, पहले आएगा कार्य, उसके बाद कुछ भी नहीं, और क़ानून बहुत पीछे आएगा। बिगुल के अंतिम स्वर के साथ गोलियों की एक बाढ़ छूटती है। गार्ड अपनी राइफ़िलें कन्धों पर रख लेते हैं। प्रत्येक बाढ़ के पश्चात् प्राणांतक सन्नाटा छा जाता है। कौन-कौन गिरेगा? मैं अभी तक क्यों नहीं गिरा! मन में यही विचार रह-रहकर उठते हैं। शिरों पर डगमगाते हुए जनाज़े आगे चले जा रहे हैं। जन समुदाय सिकुड़कर पीछे हट गया है किन्तु जनाज़े उठानेवाले बराबर आगे बढ़ रहे हैं। अब वे अकेले रह गये हैं। हमारी ओर से भी, कहीं-कहीं इधर-उधर से गोलियाँ चलती हैं जिनकी प्रतिध्वनि प्लाज़ा की सीमाओं पर ही शून्य में विलीन हो जाती है। गार्ड अपनी पंक्ति भंग करके दोनों सिरों पर इकट्ठे हो गये हैं। उनमें से एक धराशायी हो गया है। एक और सवार का घोड़ा आहत होकर पिछले पैरों पर खड़ा हो जाता है। हम लोग पीछे हटते हुए गोलियाँ चलाते हैं। हम किसी वृक्ष अथवा स्तंभ की आड़ ढूँढ़ रहे हैं जिसके पीछे से हम गोलियाँ चलाते रह सकें। गार्ड हमारी गोलियों का उत्तर गहन बाढ़ों से दे रहे हैं। हजारों जुलूसवाले लोग भाग-भागकर रिटायरो पार्क और साइबेलीज़ में पनाह ले रहे हैं। गोलियों की बाढ़ें बराबर चल रही हैं। ख़ाली सड़कों पर जगह-जगह काले बिन्दु तड़फड़ा और कराह रहे हैं। हर जगह गोली चल रही है। जनाज़े अब भी आगे बढ़े जा रहे है। एक जनाज़े के समीप जाकर

एक अफ़सर रिवालकर तानकर उसे रुकने की आज्ञा देता है। गोलियों की अदृश्य तरङ्गित धारा में अगले जनाज़े के दो ले जानेवाले गिर पड़ते हैं। जनाज़ा डगमगाकर धड़ाम से खरंजे पर आ रहता है। दोनों आहत शव-वाहक पेट के बल सरकते हैं। और अन्य लोग रिवालवर फ़ायर करते हुए पीछे हटते हैं। मैं एक बेंच की आड़ में जाकर गोलियाँ छोड़े जा रहा हूँ। सामर, जेबों में हाथ डाले हुए ऊपर-नीचे देखता और गालियाँ देता है। प्लाज़ा भागे हुए मनुष्यों की पङ्क्तियों से भरा हुआ है। हम बराबर गोली चला रहे हैं। एक और जनाज़ा भूशायी हो गया। गोलियाँ बागों में पहुँचकर फूल नोच रही हैं। और खरंजों पर पटापट गिर कर पत्थरों की किर्चें उछाल रही हैं। शीघ्र ही बहुत-से लोग साइवेलीज़ से दौड़ते हुए आते हैं। वहाँ से और सेन जेरोनिमो से और सेना यहाँ आ पहुँचती है। अब हमें या तो भाग जाना पड़ेगा या मर जाना। चूँकि हमें मरना नहीं चाहिये हम भाग खड़े होते हैं। आज रात को कमेटियों में भी तो जाना है!

चन्द्रमा ने कहा था—'तीन नये ग्रह आये हैं—एस्पाटको, प्रॉग्रेसो और जर्मिनल।' शव पृथ्वी पर पड़े हुए हैं। तीसरा जनाज़ा ज़ख्मी ले चलनेवालों के कन्धों से खिसक कर ज़मीन पर गिरा तो अखरोट के सूखे हुए छिकुले की भाँति दड़क गया। छिकुला फटा तो सफ़ेद और पीले रंग का फल बाहर निकल पड़ा। प्लाज़ा में अब बिलकुल सन्नाटा है। अब भी कई स्थानों से गोलियाँ आ रही हैं। आहत मनुष्य किसी सुरक्षित स्थान की ओर सरकते जा रहे हैं, किन्तु सरकते हुए भी वे फ़ायर कर रहे हैं। सेना को खुले हुए मैदान में आने का साहस नहीं है। एक ज़ख्मी घोड़ा जिसकी रीढ़ की हड्डी टूट गई है, और जिसके नितंब चीतल-जैसे ढलकवाँ देख पड़ते हैं, ऊपर मुँह उठाकर, आगे को दौड़ता है। वह पागल की तरह नाचता हुआ प्लाज़ा के इस सिरे से उस सिरे तक जाता है। एक शव के तख्ते में उसकी रास अटक जाती

है। शव खरंजे पर उलट जाता है। मैं भी दूसरों की तरह भाग रहा हूँ। परन्तु मैं अब रुक कर चुपचाप खड़ा हो जाता हूँ। आध घण्टे तक किसी को एक पग भी आगे रखने की हिम्मत नहीं होती। घोड़ा अब भी इधर-उधर दौड़कर प्लाज़ा में गहरे लाल रंग के गुलाब जल के फूलों का फ़र्श बिछा रहा है। कामरेड एस्पार्टको, प्रॉग्रेसो और जर्मिनल के अतिरिक्त खरंजे पर चार अन्य मनुष्य हैं। चारों मुर्दे। जर्मिनल रिक्त पात्र के बाहर पड़ा हुआ है। उसकी खुली हुई भुजाओं पर प्रकाश पड़ रहा है। सब जख्मी भाग गये हैं। जिससे जहाँ हो सकेगा इलाज करायेगा। या कम-से-कम जिसका जहाँ जी चाहेगा मर तो सकेगा। बूज़्वा लोगों की इच्छानुसार 'विप्लव के स्थल पर, कार्य करता हुआ' तो वह न मारा जायगा। तीनों शव गोलियों से चलनी हो गये हैं। अब यह लोग शवों की हत्या करने पर उतर आये हैं।

चची आइज़ाबेला और स्टार द्रुतगति से प्लाज़ा में आती हैं। एक सवार उन्हें वहाँ से बाहर निकाल कर भगा देता है। इस गड़बड़ में स्टार की गोद से मुर्ग़ा छूट जाता है। वह शवों के मध्य में आता है और उनमें से एक पर कूदकर शाम की अज़ान देता है। सामर और मैं किसी प्रकार रिटायरो पार्क की रेलिंग पर चढ़कर पार्क में आ पहुँचते हैं, जहाँ संघ समिति के सदस्य अरवेनो फ़रनेन्डीज़ से हमारी भेंट होती है। वह बिना रुके हुए हमसे कहता है—'रात के दस बजे क्वाट्रो कैमिनॉस में विघ्नात्मक योजना पर विचार किया जाएगा।'

सामर इसका निषेध करता है :

'किंतु क्या आपको यह नहीं मालूम है कि हमें इस काम को त्याग देना पड़ा है! अब तो हम कुछ कर ही नहीं सकते।'

इस बात पर अरवैनो क्रोध के साथ कहता है :

'मूर्खराज, क्या तुम्हें अभी तक यह नहीं मालूम हुआ कि उसी भोजनालय में दो ऐसे कामरेड भी मौजूद थे जो उस गुप्तचर को पह-

चानते थे और उनकी आखों के सामने सारी घटना घटित हुई थी। उन्होंने उस गुप्तचर का पीछा किया और उसे ठिकाने लगा दिया। देखो, यह रेखाचित्र यह है।' रिटायरो पार्क में अपने रिवालवर और नोटबुकें छिपाकर हम लीलहाड स्ट्रीट में होकर चोरों की तरह चले आये। शाम को पार्क बंद होने से पहले हम उन चीज़ों को लेने जायँगे। यहाँ छत पर से प्लाज़ा दि नेप्ट्यूनो दिखाई पड़ता है। चची आइज़ा-बेला और स्टार खरंजे के एक कोने पर वहाँ बैठी हुई हैं। सांध्य आकाश के नीचे पड़े हुए जर्मिनल के नग्न शव पर दोनों के नेत्र गड़े हुए हैं। टूटी हुई रीढ़ की हड्डीवाला घोड़ा अब भी पूर्ववत् नृत्य कर रहा है। स्टार के अङ्क में जब मैं फिर मुर्ग़ा देखता हूँ तो अधिक निश्चिंतता-पूर्वक साँस लेता हूँ।

सामर प्रेम और क्रांति के मध्य में

जब मैं सिनेमाघर पहुँचा तो खेल आरंभ हो चुका था। सुनहरे केशों और सुन्दर जंघाओंवाली अप्सरायें मानो मेरा स्वागत कर रही थीं। संगीत अमरीकन था, अफ़रीकन ढोल बज रहे थे और ऊँचे असंबद्ध स्वर आकस्मिक रूप से मानो पीतल के कंठों से निकल रहे थे। लय इतनी सजीव थी कि उससे बैन्जो के मधुर स्वरों की अपेक्षा मोटरों की गड़गड़ाहट की याद आती थी। विषयासक्ति का साफ़ और गहरा वातावरण था। नाच ऐसा था मानो कोई नट अपना खेल दिखा रहा हो या कोई तैराक पैर रहा हो। इसका सारा क्रम प्राच्य-प्रणाली का बिलकुल उल्टा था जहाँ के नाच-गाने से ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी ने नशा पिलाकर सुला दिया हो और रीढ़ की हड्डी में भी विष फैल गया हो। यह मैड्रिड की नहीं न्यूयार्क की कृति है। हमारी

दम्भपूर्ण आध्यात्मिक संस्कृति का उसमें रंचक मात्र आभास नहीं है। न उसमें कहीं जनेवा की अन्तर्राष्ट्रीयता का ही पता है। नीचे, तली में—जमनास्टिक, तैराकी, भारी जबड़े। ऊपर, आत्मा की दिशा में, उसकी पराकाष्ठा है—रूज़वेल्ट! मनोविज्ञान रहित राजनीति, शरीर और उसको यंत्रवत् चलाते रहने की आवश्यकताओं से आत्मा का ऐसा समीकरण कि कोई कह ही नहीं सकता कि आत्मा कहीं है भी! एक अत्यन्त विषम आदर्श जिसके कारण नैतिक महत्ता तक पहुँचाने वाला चिकना बाँस बेचारे थ्योडोर (रूज़वेल्ट) को अपनी खोपड़ी पर उठाना पड़ रहा है। इस आदर्श को एक संकीर्ण अवास्तविक सूत्र में इस प्रकार प्रस्फुटित किया जा सकता है—'शब्दों में कार्य महानतर हैं।' इस सुनहरे देश की आत्मा का इस हद तक विकास हो चुका है कि वह मोटरों की गड़गड़ाहट पर ताल देकर नाचती है और हबशियों के बालोचित गीतों पर अपना शरीर मटकाती है। एक दिन वह यह बात जान गई कि शब्दों पर एक अस्पष्ट मानसिक शक्ति का अधिकार है। यह आत्मा की एक भयानक धमकी थी। उसने तत्क्षण शब्दों के विरुद्ध एक फ़रमान जारी कर दिया। थ्योडोर उसे अंगीकार करने के पूर्व गहरी चिन्ता में डूबा रहा और फिर उसने खतरे के भोंपू बजवा दिये—'जी हाँ, जनाब। शब्दों से कार्य का महत्त्व अधिक है। मुख से निकले हुए शब्दों का ज़रा भी एतबार मत करो।' कछुए और खरहे वाली प्रसिद्ध आख्यायिका में खरहे की तरह कल्पना के मैदान में साँस भरकर इतनी दूर दौड़ने के पश्चात् बेचारा थ्योडोर इतिहास-रूपी घास में गुड़गुड़ी मारकर बे-खबर सो गया। अमरीकन सिनेमा ही एक ऐसा घोर अनात्मवाद है जो यूरप में जड़ पकड़ गया है। और मुझे बड़े खेद के साथ कहना पड़ता है कि जब मैं इस प्रकार आत्मा की दावत कर रहा हूँ उस समय क्रारावांशल में सांध्य-फ़ायरिंग के साथ दिन छिप रहा है।

अन्धकार में, टार्च की सहायता से, मैं अपनी जगह बैठ जाता हूँ। रंगमंच पर कोई दृढ़ स्वर में कहता है--'हमें पूर्ण रूप से संगठित होकर युद्ध करना चाहिये।' मोटरों का संगीत इस समय बड़ा अच्छा लग रहा है। कार्य-संघर्ष। संगठित रूप से सब का दृढ़ता के साथ कार्य करना। 'हमें सारे भेद-भाव भूलकर एक हो जाना चाहिये।' यह पूरी तरह निश्चय करके कि मैं बहुत दूर जाकर नहीं गिरूँगा, मैं बड़ी सावधानी से आकाश में छलाँग मारता हूँ। कार्य, सफल संघर्ष। भाव के बिना ही स्वरों का सम्वाद। संगीत चल रहा है। मैं बैठ गया हूँ। मेरी वाग्दत्ता पत्नी मेरे बाईं ओर बैठी हुई है। मैं कुछ भी नहीं देख सकता। उसके एक हाथ में मेरी बाँह है और दूसरा मेरे कंधों पर रक्खा हुआ है। मैं अपना नाम सुनता हूँ। मुझे देखने से जिस परमानंद की उपलब्धि उसको हुई है वह उसके स्वर में भी प्रस्फुटित हो रहा है। 'ल्यूकस! ल्यूकस!' अब मैं उसकी मुखाकृति देख सकता हूँ। उसके लाल-लाल कपोल, उसकी मधुर मुस्कान, उसके चमकते हुए नेत्र। मुझे सहसा अनिच्छा-पूर्वक ही रेखाचित्र और निंदात्मक प्रस्ताव का स्मरण हो आता है। उसकी गोल-गोल भुजाएँ, उसके कपड़ों में बसी हुई सेंट, उसकी सुन्दर तथा आकर्षक कचुंकी, उसके दस्ताने जो उसने उतारकर रख दिये हैं—यह सभी मेरे हृदय में एक भीषण ज्वाला-सी लगा देते हैं। जिन सब चीज़ों से मुझे सख़्त नफ़रत है वह उन्हीं से बनी है, वह मेरे शत्रुओं के घर की बेटी है। किन्तु वह सुन्दर है। उसकी अपनी आत्मा ही नहीं है। मैंने उसमें अपनी आत्मा भर दी है।

'तुम्हें क्या पता है कि पापा की अनुमति प्राप्त करने में मुझे कितनी दिक़्क़त उठानी पड़ी है। सेविकाएँ बाज़ार से बड़ी बुरी खबरें सुनकर लौटी थीं। जब तुमने मुझे फ़ोन किया और मैंने पापा को आश्वासन दिया कि अब सब प्रकार शान्ति है तब कहीं

जाकर उन्होंने मुझे बाहर आने की इजाज़त दी।'

अगली सीट पर बैठी हुई उसकी चची ने आगे झुककर प्रश्न किया :

'ल्यूकस, यह सब क्या हो रहा है ? क्या सचमुच क्रान्ति हो रही है ?'

मेरी प्रियतमा ने सशीघ्र उत्तर दिया :

नहीं, चची जान, जब तक कि इससे भी ज़्यादा कट्टर सरकार अपने अत्याचार द्वारा मज़दूरों की समस्त श्रेणियों को मिलकर एक हो जाने को बाध्य नहीं कर देगी तब तक क्रान्ति का सूत्रपात नहीं होगा।

मुझे स्मरण नहीं कि मैंने ये शब्द उससे कब कहे थे। परन्तु मैंने वह उससे कहे अवश्य हैं क्योंकि जो कुछ भी मैं उससे कहा करता हूँ वह उसे हृदयङ्गम कर लेती है और जो कुछ मेरा मत है वही ज़रा-से भी एर-फेर के बिना उसका मत होता है। मैं उसके कथन का समर्थन करता हूँ और चची जान अश्रुपूर्ण कंठस्वर में यह कहती हुई अपनी सीट में नीचे बैठ जाती है :

'होनहार तो होकर ही रहेगा ; किन्तु मैं आशा करती हूँ कि रक्त-पात नहीं होगा।'

अम्पारो ने मेरी भुजा दबाते हुए कहा :

'चची से बातें मत करो।'

हम दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा। वह मुस्करा दी। मुझे भी बहुत-सी बातें याद आने लगीं। किन्तु वह इस घनिष्ट तथा मधुर प्रणय-संसर्ग के अनूकूल न थीं। भावना ! अम्पारो में इसके अतिरिक्त कुछ और है ही नहीं—उसका शरीर, उसकी आवाज़, उसके नेत्र सभी भावनामय हैं। उसकी मुस्कान के उत्तर में मैं मुस्करा नहीं सकता—और मैं मुस्कराना चाहता भी नहीं। वह तो बन्द पानी के सदृश है—पारदर्शक और निश्चल। जल, जिसमें अनंताकाश प्रतिबिंबित होता है।

अथवा जो एक कुरूप पात्र में गुलाब के सफ़ेद फूल को सुरक्षित रखता है। या जब कि चारों ओर नग्न चट्टानें और क्षुब्ध समुद्र हो और कहीं कोई मार्ग न मिलता हो तो सहसा मेंहदी की झाड़ियों, कुमुदों के झुरमुटों तथा प्रमोद-वाटिकाओं के मध्य में एक पोखर का दृश्य हो! उसने मुसकराकर मेरी भुजा दबाई। मैंने उसकी ओर देखकर सोचा—'हम अभी तक सब कुछ क्यों न कर पाये? हम अभी तक ऐसी सामाजिक समतुल्यता की अवस्था में भी क्यों नहीं पहुँच सके हैं जहाँ हम विश्राम कर सकते?' तदनंतर उसकी आँखों में आँखें डालकर मैं मन-ही-मन कहने लगा—'तुम्हारे इन सौम्य नेत्रों में, तुम्हारे चेहरे की इस प्यारी बनावट में, तुम्हारे इन सरस अधरों में, कराल मृत्यु क्यों छिपी हुई है?' फिर उसका हाथ अपने हाथ में लेकर—'मैं तो आत्मा में श्रद्धा ही नहीं रखता, फिर मैं उसके सामने नतमस्तक होने और उसमें अपना अस्तित्व विलीन करने के लिए क्यों लालायित हो रहा हूँ?' वह मेरी ओर देखकर मुस्करा रही है। मैंने उसमें केवल दो मनोवृत्तियाँ देखी हैं—मुस्कराना और अश्रु बहाना। यदि मैं सावधान न रहूँ तो वह एक भाव से दूसरे में क्षणमात्र में जा पहुँचती है। मैं मौन होकर उसकी ओर एकटक देखे जा रहा हूँ। मैं पुनः उसकी आँखों में आँखें डालता हूँ और फिर अपने आप से प्रश्न करता हूँ—'इस कभी न मरनेवाली खूसट दुनिया से पिंड छुड़ाने के लिए मनुष्य क्यों उद्विग्न हो उठता है। और फिर इस गृह-रूपी आश्चर्यमय नूतन संसार में पुनः जन्म लेने के लिए क्यों उत्कंठित रहता है?' मैं उसके हाथ और भुजा को चुम्बन करता हूँ जो ओस में भीगे हुए प्रभातकालीन पुष्पों के सदृश अम्लान तथा सरस हैं। रंगमंच पर सुन्दर अप्सराएँ नृत्य कर रही हैं। संगीत मेरे उन्माद का उपहास कर रहा है और माननीय थ्योडोर रूज़वेल्ट अपने दृढ़ स्वर में बराबर यही दुहराये जा रहे हैं—'हमें पूर्ण रूप से संगठित हो जाना चाहिये।'

हाँ, हाँ, हमें पूर्णतः संगठित होना चाहिये। परंतु आपका मार्ग बूर्ज्वा स्वर्ग में होकर जाता है और हमारा इसके विपरीत। मेरे लिए अम्पारो की आँखों में मृत्यु नृत्य कर रही है और उससे दूर एक अद्-भुत् भौतिक जीवन दिखाई देता है। परंतु मैं मृत्यु को छोड़ नहीं सकता। यह मेरा अपराध नहीं है, किन्तु यह अपराध मेरी अंतरात्मा का है, जिसने चेचक के टीके के सदृश मुझे कभी सुख की बीमारी न होने देने का बीड़ा उठाया है। यही अंतरात्मा मुझे प्रणयसूत्र में बाँधे रखती है। अम्पारो मुझसे प्रश्न करती है :

'क्या यही क्रांति है ?'

मैं स्वयं यही नहीं जानता। किंतु मैं यह भी नहीं चाहता कि यदि हम इस समय असफल रहें तो वह धोखा खा जाय। अतः मैं उत्तर देता हूँ 'नहीं।'

'मेरा भी यही विचार था,' वह कहती है, 'क्योंकि अभी सरकार तो बदली ही नहीं है।'

तदनन्तर उसने मुझे अपनी कल की दिनचर्या सुनाई। उसके कार्यों से ऐसा दृढ़ विश्वास टपकता है, एक ऐसा बूर्ज्वा ठोसपन, अपने सिद्धांतों की शक्ति के प्रति ऐसी असीम श्रद्धा कि मैं भयभीत हो उठता हूँ। वह किसी के यहाँ मिलने गई थी। तो उसने किस-किस से बात-चीत की ? उन्होंने उससे क्या-क्या कहा ? क्या उन लोगों ने उसके स्वभाव को पहचानकर उसकी शिशुता का आदर किया ? उन्होंने कोई अशिष्ट बात तो नहीं की ? वह मुझे अपने विवाह के कपड़ों की आल्हा सुना रही है। 'मेरा विचार है कि उन सुन्दर चीज़ों को देखकर तुम प्रसन्न होगे। विलास-सामग्री की तिजारत करनेवालों ने, मशीनों और मनुष्यों के सुख-स्वप्नों ने हमारे वैवाहिक जीवन को सजाने में स्वयं अपना अतिक्रमण कर डाला है और वह इस कार्य में अथक रूप से जुटे हुए हैं।' फिर वह मुझे यह बताती है कि उसका सुहाग का जोड़ा

किस प्रकार तैयार किया जायगा। मैं इन सारी अमरीकन मनोरथ-कल्पनाओं के मध्य में, उसे एक सरल पुष्प के तुल्य देखता हूँ, जो एक शिशु की तरह प्रकाशमय और पवित्र है। मैं अपने आप से पूछता हूँ— 'एक अधोमुखी सभ्यता और एक सड़ा हुआ समाज ऐसे फल किस तरह पैदा कर सकते हैं?'

वह मेरी आँखों में आँखें गड़ाकर मुझसे विनय करती है :

'ज़रा मुख से बोलो तो। हमारे सुख के सम्बन्ध में तो कुछ मुझे बताओ।'

वह मुझसे उच्छ्वास चाहती है। यदि मैं अपने हृदय के कुछ उद्गार उसे सुना डालूँ तो मैं उसको बिगाड़ने का अपराधी तो होऊँगा? वह अपना घोंघा-जैसा गुलाबी कान मेरे मुख के समीप लाकर, बड़ी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा करती है। प्रकृति उसके कान में चुपके-से कुछ कह रही है; परन्तु वह बातें उसकी समझ में नहीं आ रही हैं। मैं अत्यन्त सरल शब्दों में उसको अपने स्वप्न बतलाता हूँ। अब वह सुस्पष्ट होते जा रहे हैं। रजत पट के छाया-चित्रों से वह कहीं वास्तविक हैं। वह जल्दी-जल्दी श्वास ले रही है। वह मुस्कराती हुई प्रकाशित चित्रों को देखती है और अपनी रुचि के अनुसार उनका क्रम स्थापित करती है।

'एक दिन तुम्हारा सुन्दर शरीर घुल कर मेरे शरीर में मिल जायगा।'

वह मुस्कान द्वारा इस बात को स्वीकार कर लेती है।

'तब मेरी प्रेयसी रमणी पद को प्राप्त होगी। और हमारा एक पुत्र होगा।'

वह तत्क्षण आँखें और होठ बन्द करके नीचे देखने लगती है। वक्षस्थल पर ठोड़ी रखे हुए वह कुछ देर तक बैठी रहती है। मेरे बहुत कुछ प्रयत्न करने पर भी वह सिर नहीं उठाती। मैं मुस्कराकर एक

मिनट प्रतीक्षा करता हूँ। 'क्या मेरी प्रियतमा को पुत्र की इच्छा नहीं है ?' वह मौन रहती है और मानो सिकुड़ कर अपने ही भीतर चली जाती है। अन्ततः मैं उससे फिर वही प्रश्न करता हूँ। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वह सिर हिलाकर 'नहीं' कर रही है। मैं उसके निकटतर जाकर कान में कहता हूँ—

'नहीं ?'

वह इतने धीमे स्वर में उत्तर देती है कि मैं ठीक तरह सुन नहीं पाता। मैं उसके अधरों के निकटतर कान ले जाकर फिर वही प्रश्न दुहराता हूँ। इस बार मुझे सुनाई देता है—

'नहीं, एक छोटी-सी कन्या।'

'बहुत अच्छा, प्रिये ! वही जो तुम्हारी इच्छा हो।

मुझसे मुस्कराए बिना नहीं रहा जाता। वह उसको देखकर अत्यन्त गम्भीर हो उठती है। उसका मुख ऊपर उठवाने के लिए मुझे उससे दूसरी ओर देखने को कहना पड़ता है। अन्त में जब वह सिर उठाती है तो मैं उससे बहुत दूर होता हूँ।

'ल्यूकस ! स्क्रीन की ओर मत ताको।'

क्षणिक विराम। मैं रुज़वेल्ट के साथ हूँ। किन्तु मेरे पास अराजकता और श्रमजीवी संघ का रिवालवर है। 'अन्तर्राष्ट्रीय' के ध्यान में मेरी भृकुटि क्रोध से चढ़ी हुई है। यह चंडू का नशा है। यह एक कृत्रिम बूर्ज़्वा स्वर्ग है। मेरी बग़ल में बैठी हुई भावोन्मत्त आत्मा सहसा चीख पड़ती है—

'ल्यूकस, मेरे सूर्य। रजतपट की ओर मत देखो।'

अरे, आज रात को विघ्नात्मक कार्य करना है। यह संगीत, वह सुन्दर क्रम से चलनेवाले चित्र—सब भाव-शून्य, आत्मा-रहित—यन्त्रवत् परिपूर्ण पुरुष, पुतलियों के समान चतुर स्त्रियाँ, यह सब शक्तिवर्द्धक हैं। हमें नहीं मालूम कि हमारे इस विघ्नात्मक कार्य का

क्या परिणाम होगा। आज रात को जो लोग जुल्म के नये शिकार हुए हैं उनको भी इसका ज्ञान नहीं है। कदाचित् कल अन्य नगर भी हमारे साथ सम्मिलित हो जायँगे और एण्डुलेशिया...

'मेरे सूर्य स्क्रीन की ओर मत देखो।'

अम्पारो के स्वर से मुझे ज्ञात होता है कि वह रो रही है।

'यह क्या मूर्खता कर रही हो!'

वह फिर रो पड़ती है और अपना हाथ खेंचकर छुड़ा लेती है। उसकी पलकें आँसुओं से तर हैं। वह शीतल अवश्य थे किन्तु उन्होंने मुझे उन्मत्त कर दिया। मैंने उसका हाथ पकड़कर कहा :

'अच्छा, बस!'

फिर उसने उन्हीं पुराने प्रश्नों की झड़ी बाँध दी। 'क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो? तो फिर सिनेमाघर की ओर क्यों देख रहे हो?'...मैं उससे प्रेम अवश्य करता हूँ, किन्तु उसमें एक शर्त है--वह क्या है?

अब वह चुप हो जाती है। मैं प्रेमियों की एक सुपरिचित युक्ति का प्रयोग करता हूँ। उसे मुस्कराकर सिर हिलाना होगा और दाँतों में दबाकर जीभ की नोक दिखानी होगी। मैं उससे रोना बन्द करके मुस्कराने की प्रार्थना करता हूँ। वह मेरा कहना फ़ौरन मान लेती है। वह चुप हो जाती है किन्तु उसकी भृकुटि अब भी चढ़ी हुई है। बहुत कुछ रोकने पर भी सिसकी उसको जीभ की नोक नहीं दिखाने देती। मैं सन्तुष्ट हो जाने का बहाना करके उसका हाथ चूम लेता हूँ। उसी क्षण सारा हॉल एक अट्टहास से मुखरित हो उठता है। यह थ्योडोर रूज़वेल्ट की करतूत है जो अपने जड़वादी मिथ्याबोध पर हठपूर्वक अड़ा हुआ है। इस हठ का कारण यह नहीं है कि वह यूरप की तरह आत्मा से ग्लानि खाकर स्थूल-द्रव्य की ओर लौट आया है बल्कि यह कि वह अभी तक कभी भी आत्मतत्व तक पहुँचा ही नहीं है। किन्तु उसके इस अट्टहास ने मुझे अपनी प्रियतमा से उदासीन बना दिया है। मैं

उसकी बातों पर विचार करता हूँ। वह मुझे अपने दहेज़ के सम्बन्ध में बता रही थी। उसने मुझे अपने विवाह के कपड़ों की बात बताई थी। अब मुझे इस बात का ध्यान आता है कि ऐसे कपड़े तो धार्मिक संस्कार के अवसर पर पहने जाते हैं। मैं उससे बहुत-से प्रश्न करता हूँ। मेरे मन की बात समझकर, वह जो कुछ उसने सोच रखा है उसका युक्तिपूर्वक निरूपण करती है। उसके सुहागवस्त्र का कामदार पुच्छ भाग बनाने में दरजनों आदमियों को काम मिल जायगा। किन्तु वह मेरे अभिप्राय को अभी नहीं समझ रही है। जब मैं उससे यह प्रश्न करता हूँ कि क्या यह वस्त्र सिविल विवाह के समय भी पहने जाते हैं तो वह मेरा आशय समझ जाती है। वह चुप-सी हो जाती है। 'क्रांति के कारण,' वह कुछ विलम्ब के पश्चात् कहती हैं, 'तुम मुझसे प्रेम नहीं करते।'

'क्या तुम नहीं जानतीं कि सिविल-विवाह के अतिरिक्त हम किसी अन्य प्रकार का विवाह करेंगे ही नहीं।' मैं साग्रह करता हूँ।

वह किसी प्रकार आँसू रोक लेती है। किन्तु उसका आत्मसंयम इतना क्षणभंगुर है कि यदि मैं इस समय एक भी मृदु शब्द कह दूँ, या उसका हाथ ही पकड़ लूँ, तो वह फूटकर रो पड़ेगी। मैं बड़ी सावधानी से इस बात को रोकता हूँ। जब प्रथमबार हमारा परिचय हुआ था तो वह अपनी सखियों में आत्मसंयम, निग्रह एवं भाव-गम्भीरता के लिए प्रमुख समझी जाती थी। परन्तु वह अब ज़रा-सी बात पर, दृष्टि-मात्र से, विह्वल हो जाती है।

'क्या तुम मुझे एक बात सच-सच बता दोगे ?' वह कातर स्वर में पूछती है।

'मैं तुम से सदैव सच बोलता हूँ।'

'मेरे सूर्य, मेरे प्रश्न का सच्चा उत्तर देना। क्या तुम सच्ची बात कह दोगे ?'

'हाँ।'

'अच्छा तो क़सम खाओ।'

'यह व्यर्थ है। क़सम मैं मानता ही नहीं।'

'मुझे क्षमा करो। अच्छा, मुझे अपना वचन दो।'

'हाँ, वचन देता हूँ, पूछो।'

'क्या यह सच है कि कभी-कभी तुम मुझसे प्रेम करना नहीं चाहते हो?'

'हाँ।'

'यह भी कि कभी-कभी तुम मुझसे घृणा करने लगते हो?'

'मैं अपने आप से घृणा करता हूँ।'

'परन्तु वह अपराध मेरा होता है?'

'हाँ।'

वह मेरे पास से सिकुड़कर मौन बैठ जाती है। उसने अपनी दोनों कुहनियाँ कुर्सी के डंडे पर रख ली हैं और एक हाथ पर ठोड़ी। उसके नेत्र स्वप्निल हो जाते हैं और वह मंद स्वर में कहती है:

'जब तुम स्क्रीन की ओर देख रहे थे तो मुझे यह बात मालूम हो गई। क्या यह सच नहीं है कि कुछ समय से तुम्हारी यही दशा है?'

'हाँ, उसी दिन से जब कि मुझे यह ज्ञान हुआ कि मैं प्रेम करता हूँ।'

मैं बिना समझे हुए पर्दे पर चलते हुए छाया-चित्रों को देखे जा रहा हूँ। यह चलते-फिरते हस्तखचित चित्र हैं। एक बिलौटा एक चुहिया से प्रेमालाप कर रहा है और ज्योंही अपने सीने पर दोनों हाथ रख कर वह चन्द्रमा की ओर दृष्टि उठाता है त्योंही उसका सुतन्ना खुलकर नीचे गिर पड़ता है। चुहिया लज्जा-आरक्त हो जाती है। मैं फिर दूर जा पहुँचता हूँ। संघर्ष और उसके परिणाम के विचार में, हाल ही की घटित घटनाओं पर और आज रात को क्या होनेवाला है

इस सोच में, क्रांति सम्बन्धी कृत्यों में,—मित्रगण, कृत्यों में—उलझ कर मैं दूर पहुँच जाता हूँ। प्रेमोन्मत्त बिलौटे का पाजामा खुल जाने पर मैं मुस्करा उठता हूँ। अम्पारो बराबर मेरी ओर देखती रही है, क्योंकि मैंने उसको चुपके-चुपके रोते सुना है। मुझे ऐसा भी प्रतीत होता है कि मुँह में रुमाल देकर वह उसे अपने मोती-जैसे दाँतों से चबा रही है और अति मंद स्वर में 'माँ' कह रही है, मानो वह कोई खोया हुआ जानवर का बच्चा है जो अपनी माता को पुकार रहा है। और मि० रूजवेल्ट हैं कि रेखा-चित्रों के मध्य से वही अपनी पुरानी तान पूरे जाते हैं—'हमे पूर्ण रूप से संगठित हो जाना चाहिये!'

वह एक खोए हुए जानवर के बच्चे के समान है। परन्तु वास्तव में रास्ता मैं भूल गया हूँ। जब से मेरी उसके साथ जान-पहचान हुई है मैं अपना नैतिक क्षेत्र छोड़कर उसकी भावनाओं की विशद भूल-भुलैयों में खो गया हूँ। आध्यात्मिक कुटिलताओं से अलिप्त, सुखद तथा स्वच्छ इन्द्रिय-प्रेम से मैं पहले से परिचित था। जिन रमणियों से मेरा संबंध था वह मुझसे स्नेह करती थीं और मैं उनके राग को उत्तेजित किया करता था। किन्तु मैं स्वतंत्र था। मैं कभी स्वप्न नहीं देखता था। मैं अपने ही स्वप्नों का क्रीतदास नहीं बना था। वह यह जानते हुए भी कोई आपत्ति नहीं करती थीं। गोलियों और घोषणा-पत्रों ने मुझे सचेत कर दिया—मुझे मेरे स्वप्नोंसे बरबस अलगकर दिया। किंतु,मि०रूजवेल्ट ने क्या किया? मन में एक सन्देह उत्पन्न कर दिया। क्या घोषणा-पत्रों और गोलियाँ बरसाने की अपेक्षा स्वप्न अधिक वास्तविक, अधिक सजीव, अधिक क्रियात्मक नहीं हैं? इस सन्देह में भी मुझे एक क्षणिक आनंद मिलता है। रंगमंच पर मि० रूज़वेल्ट फिर हँसना आरम्भ कर देते हैं। सहसा अपनी प्रेमिका की ओर मुड़कर मैं कहता हूँ—

'यदि तुम इसी तरह रोए-धोए जाओगी तो मैं बाहर चला जाऊँगा।'

मैं जाने को तैयार होता हूँ। वह शान्त होने का कठिन प्रयत्न करती है। अतः मैं वहीं ठहर जाता हूँ। किन्तु यदि मैं चला भी जाता तो केवल मेरा शरीर मात्र यहाँ न रहता। मेरी आत्मा कुर्सी पर बैठी हुई उसे अवगुंठित, संवलित किये रहती। उसकी दृष्टि और उसके विचारों का नियंत्रण करती, जो वह देखती उसको देखती, उसके अनुकूल सब वस्तुओं को बना देती और जो कुछ अनुचित दिखाई देता उस पर मेरी इच्छाओं को आरोपित करती और रजतपट की समस्त विवक्षाओं को विच्छिन्न कर देती। मैं दूर होता, फिर भी संशय मुझे आहत करते रहते। मार्ग में सुना हुआ एक शब्द भी पतनकारी हो सकता है। उसके घर ही में, मेज़ पर पड़ा हुआ समाचार पत्र उसके पास ला सकता है कटु अनुभवों का उच्छिष्ट या निपट मूर्खता का दोष। मैं चाहता हूँ कि कोई भी चीज़ उसे स्पर्श तक न कर पाये। कोई भी एक शब्द अथवा विचार द्वारा उसकी शान्ति भंग न होने पाए। अगणित स्त्री-पुरुष ऐसे हैं जिनको इस बात की अनुभूति है कि उनका जीवन नष्ट हो गया है और वे इधर-उधर विष फैलाते घूमते हैं। मैं उनके सम्पर्क मात्र से उसको पृथक रखना चाहता हूँ। मैं शब्दों, दृष्टियों, समाचार पत्रों के चित्रों, यहाँ तक कि प्रकाश और रंग के संयोगों की भी जाँच करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि वह केवल समभाव, तटस्थ शब्द ही सुने, मूर्तियों की भावशून्य मुखाकृतियाँ, वस्तुओं अथवा दृश्यों के फोटो ही देखे, मनुष्यों के चित्र कदापि न देखे, उसे सदैव सीधा तथा विमल प्रकाश मिले—आकाश का साफ़, हल्का नीला रंग जो कभी न बदले। फिर यदि मेरे विचार ऐसे हैं तो जब कि मेरे लिए उसके साथ एक घण्टा और व्यतीत करने की सम्भावना थी, तो मैं उसको अकेला छोड़कर किस प्रक . जा सकता था? फिर भी मैं जब उठने लगा था तो मेरा चले जाने का इरादा सच्चा था—कदाचित् इन सब कल्पनाओं से ज्यादा गहरा।

मैं खेल देखे जा रहा हूँ। यह एक मनोवैज्ञानिक चित्र है। खेल के पात्रों का स्वभाव ऐसा सरल है जैसे किसी कुत्ते या घोड़े का। जिस प्रकार रसायन शास्त्र में अविमृश्य पदार्थों के साथ या अग्नि के प्रकाश के साथ रंग का सम्बन्ध है, उसी प्रकार मि० रूज़वेल्ट ने भौतिक-तत्वों के साथ अध्यात्मविद्या को मिलाने का प्रयोग किया है। रंगमंच पर परदे, शीशे, लैम्प और सफ़ेद कमीज़ें हँस रही हैं। मुझे फ़िल्म देखने में व्यस्त देखकर मेरी वाग्दत्ता पत्नी दुखित हो रही है। किन्तु मेरी इच्छा से कोई अधिक बलशाली शक्ति मुझे अपने कामरेडों और मि० रूज़वेल्ट से संयुक्त किये हुए है। यदि मैं उसकी ओर नहीं देख रहा हूँ तो इससे अंतर ही क्या पड़ सकता है, क्योंकि हम तो आत्मा के सूत्र में संयुक्त हैं। उसकी अपनी आत्मा नहीं है, मैंने ही अपनी आत्मा का अंश उसे दे दिया है। उसके अतिरिक्त सभी की आत्माएँ जीर्ण हो गई हैं। जिस तरह गीली मिट्टी हर एक साँचे में ढाली जा सकती है उसी प्रकार उसमें वह लय हो गई है। हम अब बातचीत करना आरम्भ करते हैं, परंतु ऐसे विषयों पर जिनका कोई महत्त्व नहीं है।

'क्या तुम्हारे पास मेरे दिये हुए लेख मौजूद हैं?'

यह एक फ्रेंच रिव्यू में छपे हुए पियरे लौइज़ के निबंधों का संग्रह है। वह अब भी सब कुछ भूलकर मेरे प्रश्न का सशीघ्र उत्तर देती है। उसने वह लेख पढ़े हैं और मुझसे कुछ शब्दों के अर्थ पूछती है जिनमें से एक 'वाम-मार्ग' है। उसके मुख से ऐसे शब्द निकलने से मुझे दुःख होता। इस प्रिय शिशु को आत्मा-चेतना रहित रहना चाहिये, जैसी कि वह अब है और इसके बाद भी रहेगी। वह फूल जिसको अपनी उत्पत्ति का पूरा ज्ञान हो एक बेहूदा लकड़ी के नमूने के सदृश है जिनको हम वनस्पति संबंधी अजायब घरों में देखा करते हैं। इन लेखों को पढ़कर वह प्रसन्न नहीं हुई है। मैं उसको यह बात हृदयङ्गम करा सकता हूँ कि पियरे लौइज़ के निबंध महत्त्वपूर्ण होते हैं, किंतु इसका परिणाम

मानसिक अंधविश्वास होगा। इसके अतिरिक्त, अन्य बातों को ध्यान में रखकर उसके लिये यही उत्तम है कि वह इन निबंधों को पसंद न करे, परन्तु उनकी फ़ाइल सुरक्षित रखे रहे। वास्तव में इन बातों में मुझे कुछ भी दिलचस्पी नहीं है, केवल अपनी सुविधा के विचार से, मैं यह सब किये जाता हूँ। बस इसी तरह हम माया मोह में पड़कर बीच-बीच में यूँही बातें अड़ा दिया करते हैं, जिनमें से एक आपके संबंध की भी है, मि० रूज़वेल्ट !

अंतराल में हॉल प्रकाशमय हो जाता है। बातचीत करते हुए मैं अपनी सीट में ज़रा नीचे खसककर एक हत्थे पर दोनों भुजाएँ रख लेता हूँ। यदि कोई पुलिसवाला मुझे यहाँ पहचान ले तो बहुत बुरा होगा। वह बड़ी सावधानी से चारों ओर दृष्टिपात करती है।...वह निडर है। बीच के ज़ीने से जाने के लिए हमारे पास से गुज़रनेवाले संदिग्ध मनुष्यों को जिस भाव से वह दुरा-सी रही है वह मुझे प्रिय मालूम होता है। उसके होठ फूले हुए हैं। वह उत्तेजक भी हैं और निर्मल भी। उनके दबे हुए होने से उसके क्रोध का आभास मिल रहा है। मैं कठिनता से हँसी रोक रहा हूँ। सुंदर कंठ, सुकोमल नेत्रों और मनोहर वेष-वाली मेरी रक्षितादेवी इस समय शेरनी के समान कटिबद्ध है। वह इस समय सच्चे हृदय से अपने आप को साम्यवादी बतलाने को तत्पर है, किंतु यदि वह ऐसा कहे तो मैं अपनी हँसी कदापि न रोक सकूँगा। वह मेरा हाथ पकड़कर तेज़ी से धक्-धक् करते हुए हृदय से उद्विग्न स्वर में कहती है—'एक आदमी बहुत देर से तुम्हारी ओर देख रहा है। वह ज़रूर कोई पुलिसवाला है।'

'तुम उसकी ओर मत देखो।'

मेरी ओर एक टक देखते हुए वह प्रश्न करती है :

'क्या तुम्हारे पास रिवालवर है ?'

'हाँ।'

'अगर वह यहाँ आए, तो तुम उसे निकालकर उस द्वार से बाहर हो जाना। यदि तुम्हें मेरा चीत्कार सुनाई दे तो तुम तत्क्षण अन्दर आकर उसे गोली मार देना !'

मैं उछल-सा पड़ता हूँ। कुछ तो इसका कारण यह है कि मैं अम्पारो के मुख से मृत्यु की बात सुनता हूँ और कुछ इस वजह से कि मुझे यह भय होता है कि कहीं कोई उसकी यह बात सुन न ले। मैं उसका हाथ दबाकर कहता हूँ—

'अच्छा, अब चुप रहो।'

उसके तेवर चढ़े हुए हैं। उसकी यह भाव-भंगी देखकर मुझे किसका ध्यान आ रहा है। यह सादृश्य इतना विषम है कि मुझे ठीक-ठीक याद नहीं आती। सहसा चची आइज़ाबेला का चेहरा मेरी आँखों में फिर जाता है। मैं आँखें मूँदकर इस स्मृति को बाहर निकाल देने का प्रयत्न करता हूँ। परन्तु अब उस वृद्धा का स्वर मेरे कानों पर आक्रमण करता है—'हरामी बच्चो, यहाँ से दूर होओ !' चित्त को शांत करने के पश्चात् मैं उसकी ओर देखकर अक्षुब्ध भाव से सोचता हूँ कि यदि उसको चची आइज़ाबेला के समान दारुण दुःख उठाना पड़े तो मैं उसकी और अपनी दोनों की हत्या कर सकता हूँ। यह मेरे लिए असह्य होगा कि उसके होठों से...मैं फिर अपने आपको आश्वासन देता हूँ कि ऐसी दशा में मुझे उसको मार डालना ठीक होगा—हम दोनों का मर जाना ही अच्छा होगा। मैं इस बात पर इतनी देर तक सोचता रहा कि मेरा दिमाग़ चकरा गया। मैंने आज भोजन नहीं किया है और न मैं कल रात सोया ही हूँ। मैं उत्तेजित हूँ और मुझे हल्का-फुल्का-सा प्रतीत होना अच्छा मालूम हो रहा है। मैं उसको निर्निमेष दृष्टि से देखे जा रहा हूँ। वह, वह तक भी, मार डालने, भाग जाने और रिवालवरों के सम्बन्ध में इस सरल तथा स्वाभाविक उग्रता के साथ बातें कर सकती है ! परन्तु, प्रियतमे ! मैं तुम्हारी आभ्यंतरिक

मधुरता को जानता हूं। तुम मेरे पीछे अन्धी होकर चलने के लिए मेरा मुँह तक रही हो। तुम क्या जानती हो कि मेरा मार्ग कितना कंटकाकीर्ण है? प्रिये, क्या तुम्हारे कोमल पैरों के लिए वह मार्ग उपयुक्त है? तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम मुझे तुम्हें अपने साथ न ले जाने देगा। परन्तु फिर मैं तुम्हें छोड़कर जा भी कैसे सकता हूँ? किसके पास छोड़ूँ—कहाँ—किस जगह? मैं ऐसा कदापि नहीं कर सकता! वह शंका, वह व्यक्ति अब चला गया। अब हमारे समीप कोई भी नहीं है। वह इस अवसर से लाभ उठाकर पूर्ण प्रकाश में मुझसे पूछती है:

'तुमने कुछ ही मिनट पहले मुझसे यह क्यों कहा था कि तुम मुझसे प्रेम करना नहीं चाहते?'

'प्यारी, चूँकि यह सच्ची बात है।'

'तो तुम मुझे पाकर सुखी नहीं हो?'

'तुम मुझे इन्द्रजाल और स्वप्नों से भर देती हो। बहुधा स्वप्न देखना सुखद होता है।'

अब वह मुझे यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न करती है कि वह साम्यवादिनी है। परन्तु बड़ी कठिनता तो यह है—मुझे अपने हृदय की सच्ची बात स्पष्ट कह देनी चाहिये—कि यदि वह साम्यवादिनी हो जाय तो मैं उससे प्रेम करना छोड़ दूँगा। प्रथम परिचय के समय वह जैसी थी, वह फिर वैसी रह ही न सकेगी। इस समस्या का यह एक, सम्भवतः सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है जो कभी-कभी मुझको उससे बहुत दूर ले जाता है और जिस घृणा का मैंने पहले ज़िक्र किया है उसका मूल कारण है। जिस समय मैं उसके निकट होता हूँ, तो जैसा कि कविगण लिखा करते हैं, न तो मेरा हृदय उन्मत्त होता है और न मेरी आत्मा ही पागल हो जाती है, और यदि ऐसा हो भी जाय तो उससे कुछ भी बन या बिगड़ नहीं सकता, परन्तु मेरा जो हाल होता है वह इससे कहीं ज्यादा बुरा, शोकावह होता है—मेरा विवेक नष्ट हो जाता

है, मेरी बुद्धि मारी-सी जाती है। मेरी अभग्न तथा दृढ़ विचारशक्ति सुनार के उस अनाप-शनाप काम से भरे हुए, बेहूदा डिज़ाइन की तरह हो जाती है जिसमें ऊपर उठी हुई वक्र रेखाएँ हैं, कहीं से ऊँचा, कहीं से नीचा, टेढ़ा-मेढ़ा, ऊपर की तड़क-भड़क से जिसका वास्तविक मूल्य कुछ भी नहीं रह जाता। मेरा विवेक तुड़-मुड़ जाता है, एकाग्रता के प्रयत्न में बिखर जाता है और वातशूल के समान मुझे पीड़ित करता है। धार्मिक हस्तक्षेप के बिना विवाह करने का प्रश्न मैं उसके सम्मुख रखता हूँ। वह यह विश्वास ही नहीं कर सकती कि हमारे जैसे प्रेम में इन मोघ सिद्धांतों का कोई स्थान भी हो सकता है। मैं युक्ति का पहलू बदलकर उसी से पूछता हूँ कि गिरजे द्वारा विवाह किये जाने के संबंध में उसका क्या विचार है। वह कहती है कि वह अपने कारण नहीं बल्कि अपने घरवालों की वजह से ऐसा करना चाहती है। उसके हृदय में तरंगें उठ रही हैं। वह उनमें डूब-सी रही है। इस शर्बत में घुलकर हर एक बात चिप-चिपा रही है।

मैं उसको (लीजिये मि० रूज़वेल्ट फिर आ पहुँचे) इस सक्षोभ से निकालकर सरल तत्वों के प्रदेश में लौटा लाने की चेष्टा करता हूँ।

'क्या तुम विवाह के बिना भी अपने घरवालों को छोड़कर मेरे पास चली आओगी ?'

उसका मौन निषेध-सूचक है। मैं उसके मुँह से शब्दों के निकलने की प्रतीक्षा नहीं करता, क्योंकि उसके शब्दों के साथ आँसू भी होंगे।

'क्या तुम सिविल विवाह के लिए रज़ामन्द हो ?'

वह फिर भी मौन रहती है।

अब मैं समझता हूँ कि हम व्यर्थ ही समय नष्ट कर रहे हैं।

सौभाग्य से अब फिर अँधेरा कर दिया गया है। उसकी सीट एक दुःखस्थल है। मैं चित्र देखने लगता हूँ। 'मि० रूजवेल्ट—आप मेरे स्थान में होते तो क्या करते ? मैं इन से इसलिए परामर्श कर रहा

हूँ कि यह प्रश्न आध्यात्मिक है। हमारे सिद्धांतों के अनुसार तो दो ही बातें सम्भव है–रूढ़ियों को तोड़ दो या उसे त्याग दो और भूल जाओ। परंतु मैं तो बूर्ज्वा मकड़ी के जाले में फँसा हुआ हूँ। हाँ तो आप क्या करते ?

'मैं तुम्हारे जीवन में एक बाधा हूँ।' आखिरकार वह कहती है।

'क्या तुम सिविल विवाह करने को सहमत हो ?' मैं आग्रह करता हूँ।

'सिनेमा देखना बंद कर दो तो मैं इसका उत्तर दूँ।'

मैं आज्ञापालन करता हूँ। परन्तु उत्तर देने के बजाय वह मुझे चिकनी चुपड़ी बातोंमें लगाने का प्रयत्न करती है। वह यह नहीं जानती कि मैं सब तरह—अनन्य रुप से उसी का हूँ।

'मेरे ल्यूकस, मेरे सूर्य !'

'मेरी बात का उत्तर दो।'

वह कुछ विलंब के बाद हाँ-सूचक शिर हिला देती है। इसी समय वह सोच रही है 'नहीं।' मैं जानता हूँ कि यह बात 'निश्चित' नहीं है—इससे बहुत कम है ; किन्तु इस मिथ्या कल्पना में पूर्णतः निमग्न होकर मैं कुछ देर के लिए सुखी हो जाता हूँ।'

मि० रूजवेल्ट,मैं आप से एक प्रश्न करता हूँ—क्या गोलियों द्वारा मिथ्याबोध को नहीं मारा जा सकता ?

प्रकाश होने से पहले ही हम दोनों बाहर निकल आते हैं। गली में पहुँचकर मैं सप्रेम उसका हाथ दबा कर उसके कान में झुक कर कहता हूँ :

'जानती हो कि तुमने क्या वचन दिया है ?'

'यह मैं नहीं जानती। परन्तु मैं सदा-सर्वदा वहीं करूँगी जो तुम्हारी इच्छा होगी।'

शोफ़र मोटरकार का दरवाज़ा खोलकर, हाथ में टोप लिये प्रतीक्षा कर रहा है। वह मेरे साथ भी चाकर जैसा व्यवहार करता है। उसकी श्रेणी के सभी लोगों पर मुझे लज्जा आती है। वह शीशा नीचे खसका कर अपना हाथ बाहर निकाल देती है। कार चल पड़ने के बाद ही मैं उसका हाथ छोड़ता हूँ।

मैं बिना मुड़कर पीछे देखे ही पैदल चल पड़ता हूँ। गलियाँ प्रायः जनशून्य हैं। आज सब ट्रामें बंद हैं। या तो हड़ताल का हुक्म देर में निकलने की वजह से या इस कारण से कि समाजवादी भद्र बूर्ज्वा लोगों को बहुत ज़्यादा तंग नहीं करना चाहते थे। थोड़े-से सिनेमाघर खुले हुए हैं। मैं क़ाटों कैमिनॉस की ओर अग्रसर होता हूँ। पास से होकर निकलनेवाले एक मनुष्य की बात से मुझे यह मालूम होता है कि मिट्रो अभी तक चल रहा है। अतः मैं विद्युत् के निकटतम स्टेशन की ओर बढ़ता हूँ।

क्या मनुष्य स्वतंत्र है? क्या उसे स्वतंत्र होना चाहिये? यदि ऐसा हो, तो क्या उसे सुख प्राप्त करने का अधिकार भी है? मुझे केवल एक, बस एक ही जीवन व्यतीत करना है। यंत्रवत् नियमों की एक शृङ्खला के, जिनका हम पर प्रभुत्व है, हम एक अल्पतम सत्तायुक्त परिणाम हैं। हम पैदा होते, जीते रहते और मर जाते हैं—परन्तु अपनी इच्छा के अनुसार नहीं। फिर भी हम हठपूर्वक संसारों का निर्माण करते हैं, अथवा जो संसार विद्यमान हैं उनका परिवर्तन करते हैं, उनमें विचारों की वबा फैला देते हैं। अपनी आत्मा जैसी मध्य-वर्गीय, आकस्मिक तथा विरक्त वस्तु की गर्मी से जिस विचार का जन्म हुआ है, क्या उसके लिए मुझे अपना सब कुछ बलिदान कर न देना चाहिये? इस समस्या का एक हल है—आप लोगों को मेरे लिए अपना बलिदान कर देना चाहिये। यह एक प्राकृतिक नियम है। यदि मैं पर्वत के पास जाऊँ या पर्वत मेरे पास चला आये, तो इससे कुछ

भी अन्तर नहीं पड़ता। या अगर उसके फटकर टुकड़े-टुकड़े उड़जाएँ, उसका नाश हो जाय और उसके साथ उसे अधिकृत करने की मेरी आशा भी भस्मीभूत हो जाय, तो भी क्या होता है? मैं इसी प्रकार विचार करता चला जाता हूँ। परन्तु जैसे गाड़ी अन्तिम स्टेशन पर पहुँचती है मैं बार-बार अपनी वास्तविक स्वभाव की ओर लौट आता हूँ। अब मैं एक उपान्त में आ निकलता हूँ जो प्रकाशयुक्त और आह्लाद पूर्ण है। यहाँ क्वाटरो कैमिनॉस के श्रमजीवी रहते हैं। इस स्थान के समीप कुछ युवकगण होली जलाकर उसके चारों ओर नाच रहे हैं। आग में समाचार पत्रों के बण्डल जल रहे हैं। मैं ज़मीन पर पड़ी हुई एक प्रति उठा लेता हूँ और जैसे ही कुछ पुलिसवाले वहाँ आ पहुँचते हैं मैं दूसरी ओर चल पड़ता हूँ। इस समाचार पत्र का नाम 'प्रहरी' है। आज रात को केवल इसी पत्र ने अपना संस्करण निकालने की धृष्टता की थी। मैं केन्द्र को छोड़कर समुद्रीय इलाक़े की संकीर्ण गलियों में पहुँच जाता हूँ। यह कैस्टाइल का मध्यभाग है। वायु जलसिक्त और खारी है। 'कासादि निफ्रानार' नाम की सराय मेरे सामने है। उसके अन्दर कुछ लोग खाना खाते हुए देख पड़ते हैं। प्रायः सभी के साथ श्रमजीवी रमणियाँ हैं जिनके मैले वस्त्रों और क्लांत भाव से गृहकार्य करके आने का पता चल रहा है। मैं इनमें से किसी को भी नहीं जानता। चूँकि अभी बहुत समय है मेरा कोई साथी यहाँ नहीं आया है। मैं समाचार पत्र खोलता हूँ। इसमें एक ऐसे सस्ते उपन्यास लेखक का लिखा हुआ एक वृत्तान्त है जिससे, जब वह सोने का गाड़ी में यात्रा करता है, तो कर्मचारी कहा करते हैं—'जो श्रीमान् की इच्छा हो,' 'क्या श्रीमान् ने घण्टी बजाई थी?' 'क्या श्रीमान् मुझे यह सूचित करने की अनुमति प्रदान करेंगे?' और फिर वह अपनी यात्रा का वृत्तान्त लिखना आवश्यक समझता है जिसमें प्रासंगिक रूप से वह अपने रेशमी पाजामे का उल्लेख

अवश्य कर देता है। चूँकि वह मध्यश्रेणी के लोगों के लिए उपन्यास लिखा करता है, उसके पाठकों को इस अमीराना ठाट के वर्णन से आनन्द का अनुभव होता है। तत्पश्चात् अग्रपृष्ठ पर सोवियट के विरुद्ध युद्ध की धमकियों से तीन कालम रँगे हुए हैं। एक ओर स्टालिन की फ्रांसीसी मूछें हैं और दूसरी ओर जापान का एक कठ-पुतला। 'सोवियट प्रजातन्त्र का अन्त दूर नहीं है।' बेचारे चपरक़नाती अंग-विकृत, गन्दे सम्पादक की नींद इस विचार ने हराम कर रखी है कि सोवियट प्रजातन्त्र अभी तक विद्यमान है और यह कि उसी एक जापानी चित्र को वह अगणित बार कभी प्रेसिडेन्ट, कभी जनेवा के डेलिगेट और कभी जापान-सम्राट तक के रूप में प्रकाशित कर चुका है। सोवियट का पक्षपाती न होते हुए भी वह जापान का इस कारण विरोधी बना हुआ है कि वह 'प्रहरी' को नये चित्रों के जुटाने का अवसर बिना दिये हुए ही सहसा युद्ध घोषणा कर दिया करता है। तदनंतर दो-एक कालम पाकविद्या, बढ़े हुए किराये, सुन्दर युवतियों, बर्फ़दार लैमनेड और इस प्रकार के अन्यान्य सर्वप्रिय विषयों पर विनोदोक्तियों से भरे हुए हैं। इसके बाद एक हास्य चित्र है जिसमें एक रमणी नये वस्त्र मोल लेना चाहती है और उसका पति उसको मना करता हुआ कहता है कि वह स्वयं तो अब नग्न ही रहा करेगा। फिर एक मोटे शीर्षकों के नीचे लिखा हुआ है—दूसरे पृष्ठ पर कल के क्रांति के संबन्ध में सनसनीपूर्ण समाचार देखिये।' किन्तु उसके पूर्व 'हमारी देवी' शीर्षकवाली कविता, ऐक्सचेंज तथा विदेशी साख सम्बन्धी सूचनाएँ हैं। हमारे मज़दूरों की प्राणांतक भूख का उपहास करने का यह बड़ा अच्छा तरीक़ा है। पैरिस और लडन की स्टाक एक्सचेंजों में अपने देश की साख की कुशल मनाना—छिः। सम्पादक महोदय यह जानते हैं कि इस आवाहन से कौंसिल के प्रेसिडेन्ट, जिन्हें विदेशी तिजारत की विवेचना का ख़ब्त है और जिन्होंने एक प्रसिद्ध अवसर पर इस विषय पर

एक लेख-माला भी लिखी थी, खुश होंगे। इसके पश्चात् पृष्ठ २ पर पूरे पृष्ठ के दो शीर्षक हैं 'शान्ति भंग करनेवाले किराये के टट्टुओं की पीठ पर कड़ा चाबुक' 'कल के दंगे-फ़िसाद के सम्बन्ध में कड़ी कार्यवाही!' इनके नीचे, 'समस्त देश द्वारा सरकार का समर्थन।' तदनन्तर सामने के पृष्ठ पर मोटे अक्षरों में सम्पादकीय लेख है। इसमें दुःखान्त ग्रीक ड्रामा के सभी अंश मौजूद हैं, गत शताब्दी के सारे वाक्यालंकारों से यह लेख सुशोभित है। क्रोध, भय, अवहेलना, द्वेष! रिपब्लिक की रक्षा करनी परमावश्यकीय है—उस रिपब्लिक की जिसकी छत्रछाया में सम्पादक महोदय पार्लियामेंट के सदस्य मनोनीत हुए हैं, जो छुट्टियों में उन्हें किसी कमेटी का मेम्बर बनाकर उन्हें इस नाम मात्र कार्य के लिए ७५० रु० मासिक भत्ता दिया करती है। सम्पादक महोदय पार्लियामेंट में कभी भाषण नहीं करते, लेखों के नीचे अपना नाम नहीं देते और न कभी किसी विषय पर अपना मत ही प्रकट किया करते हैं। इसी तरकीब की बदौलत आज आप १५ वर्ष की सपरिश्रम सेवा के पश्चात् सम्पादकीय कुर्सी पर शोभायमान हुए हैं। आपको इस बात का पूर्ण विश्वास है कि यही सब मज़ेदार चीज़ें जो आपके चारों ओर मौजूद हैं—यही 'स्वदेश,' 'सार्वजनिक हित,' 'सामाजिक व्यवस्था,' तथा 'संस्कृति' हैं। एक बार पहले जब आपने 'अराजकता सिंडीकेट-साम्यवादी' गँवारों के विरुद्ध आवाज़ उठाई थी तो आकाश तक के कान के परदे फाड़ दिये थे। यही एक ऐसा दल है जिसके विरोध में आप मुँह खोलने का साहस करते हैं, क्योंकि यही एक ऐसी संस्था है जिससे आपको कुछ भी 'प्राप्त' नहीं हो सकता। मेरा खयाल है कि कामरेडगण शीघ्र ही इन महानुभाव की अच्छी तरह खबर लेनेवाले हैं। एक 'विद्वान प्रोफ़ेसर' का लिखा हुआ लेख भी है, जिसमें उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक तथा कला-सम्बन्धी क्षेत्रों में अन्य लोगों के द्वेष-भाव रखने

पर खेद प्रकट किया है। परन्तु इसी के साथ उसके लेख से यह भी स्पष्ट मालूम होता है कि वह अपने एक समकालीन प्रोफ़ेसर से जिसका समाज में उससे अधिक सम्मान है इतना ज्यादा नहीं जलता है जितना कि वह नैपोलियन, वीर्वाथस और हैमिलकार की अमर कीर्ति से खार खाता है जिसके कारण उसको क्षणभर भी चैन नहीं मिलता।

इसके बाद समाचारों का नम्बर आता है। मेरे विचार के अनुकूल ही इस पत्र के मत में मज़दूरों की मृत्यु उन्हीं के कामरेडों की गोलियों से हुई है। शव-परीक्षा की रिपोर्ट की संदिग्धता से इसका समर्थन किया जाता है। उसके विचार में सारे देश में दंगा उठ खड़ा होने का अन्देशा है। वह समाजवादियों को उनके उत्तदायित्व का बोध कराता हुआ यह बतलाता है कि यदि जनता बिगड़ खड़ी हुई तो वे ही उसके क्रोध के पहले शिकार होंगे। हड़ताल निश्चित करने के सम्बन्ध में, जिससे कि सब मज़दूर जनाज़े के जलूस में सम्मिलित हो सके थे, वह समाजवादियों की सद्भावना की प्रशंसा करता है, चार मनुष्यों की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है और आग्रह-पूर्वक यह कहता है कि सार्वजनिक-सत्ता इसके पूर्व कभी इससे अधिक निःशंक नहीं थी। किन्तु उसके लिखने के ढंग से ऐसा प्रतीत होता कि लेखक का विचार इससे बिलकुल भिन्न है।

दूसरे ही स्थान पर दो कालम का शीर्षक है: 'तीन में से एक शव ग़ायब!' तत्पश्चात् जर्मिनल के सम्बन्ध में कुछ लिखा है। इस विज्ञप्ति के द्वारा वह मानो दुबारा जी उठता है। मरने के बाद भी सिड ने युद्धों में विजय प्राप्त की थी। जर्मिनल की विजय नहीं, पराजय हुई। बात एक ही है। पुलिस तो चैन से न बैठ सकी।

'क्या कोई यह जानता है कि यह शव किसका है?'

चूँकि शव नग्न था, सरकारी पिट्ठुओं ने यह अनुभव करना